A Thousand Splendid Suns

हज़ारों दमकते आफ़ताब

ख़ालिद हुसैनी

द काइट रनर के लेखक की दिल को छू लेने वाली कृति

Hissa-2

बयालीस

लैला

एक काग़ज़ी थैले में अज़ीज़ा ने ये चीजें पैक कींः अपनी फूलदार कमीज़ और मोज़ों का अकेला जोड़ा, अपने बेमेल ऊनी दस्ताने, एक पुराना, कोंहड़े के रंग का कंबल जिस पर सितारे और धूमकेतू बने हुए थे, एक दरार पड़ा हुआ प्लास्टिक का कप, एक केला और अपने पांसों का सेट।

2001 में लैला के तेईसवें जन्मदिन से कुछ ही दिन पहले की, अप्रैल की एक सर्द सुबह थी। आसमान स्याह था और नाखुशगवार ठंडी हवा स्क्रीन डोर को भड़भड़ा रही थी।

'लैला ने कुछ दिन पहले सुना था कि अहमद शाह मसूद फ्रांस गया था और उसने यूरोपीय संसद से बात की थी। मसूद अब अपने उत्तरी इलाके में था जहां वो उत्तरी गठबंधन की रहनुमाई कर रहा था। यह गठबंधन तालिबान के

ख़िलाफ़ अभी लड़ रहा अकेला विरोधी समूह था। यूरोप में मसूद ने पश्चिम को अफ़ग़ानिस्तान के आतंकवादी शिविरों के बारे में चेताया था और अमेरिका के साथ-साथ उनसे फरियाद की थी कि वो तालिबान के ख़िलाफ़ लड़ाई में उनकी मदद करें।

'अगर सदर बुश हमारी मदद नहीं करते,' उसने कहा था, 'तो ये दहशतगर्द जल्दी ही अमेरिका और यूरोप को नुक़सान पहुंचाएंगे।'

इसके महीने भर पहले लैला को पता लगा कि तालिबान ने बामियान के विशाल बुद्धों की दरारों में टीएनटी लगा कर उन्हें उड़ा दिया था। उन्होंने

हजारों दमकते आफ़ताब 309

कहा था कि बुद्धों की मूर्तियां बुतपरस्ती और गुनाह की चीजें थीं। अमेरिका से लेकर चीन तक पूरी दुनिया ने इसका विरोध किया। पूरी दुनिया की सरकारों, इतिहासकारों और पुरातत्ववेत्ताओं ने चिट्ठियां लिख कर तालिबान से फरियाद की कि अफ़ग़ानिस्तान के इन महान ऐतिहासिक कलाकृतियों को तबाह न किया जाए। लेकिन तालिबान ने अपनी करते हुए दो हज़ार साल पुराने बुद्धों को बम को उड़ा दिया। हर धमाके के साथ वे अल्लाह-ओ-अकबर कहते, हर बार धूल के बादलों में मूर्तियों के हाथ या पैर उड़ने पर खुशी से चिल्लाते। लैला को 1987 में उनमें से बड़े बुद्ध के ऊपर बाबी और तारिक़ के साथ खड़े होना याद आया। धूप से रोशन उनके चेहरों पर हवा के झोंकों का पड़ना, नीचे दमकती हुई वादी में गोल-गोल घूमते बाज़ को उड़ते देखना याद आया। लेकिन जब लैला ने मुर्तियों के तोड़े जाने के बारे में सुना तो उस पर इसका असर नहीं

हुआ। उसके लिए मुश्किल से ही ये मायने रखती थी। जब उसकी अपनी जिंदगी धूल में मिल गई थी तो उसे मूर्तियों की क्या परवाह होती?.

जब तक रशीद ने नहीं कहा कि उसके चलने का वक़्त हो गया है, वो बैठक के एक कोने में फर्श पर बिना कुछ बोले, पत्थर जैसा चेहरा बनाए बैठी रही। उसके बिखरे हुए बालों की लटें चेहरे पर झूल रही थीं। चाहे वो कितनी भी सांस खींचे, लैला को लग रहा था कि वो अपने फेंफड़ों में पर्याप्त हवा नहीं भर पा रही थी।

कारतेह-सेह के रास्ते में जल्मै रशीद के बांहों में उछलता रहा और अजीजा मरियम का हाथ पकड़े चुपचाप उसकी बगल में जल्दी-जल्दी चलती रही। हवा अजीजा की ठोढ़ी के नीचे बंधी गंदी स्कार्फ को और उसकी पोशाक की किनारी को उड़ा रही थी। हरेक क़दम के साथ अज़ीज़ा अब और उदास होती जा रही थी, ज्यों-ज्यों वो महसूस करने लगी थी कि उससे झूठ बोला गया था। अज़ीज़ा को सच बताने की हिम्मत लैला नहीं जुटा पाई थी। उसने उसे बताया था कि वो एक स्कूल जा रही थी, एक ऐसा ख़ास स्कूल जहां बच्चे खाते और सोते हैं और क्लास के बाद घर नहीं लौटते। अब अजीजा बार-बार लैला से वो सवाल कर रही थी, जो वो पिछले कई दिनों से उससे पूछ रही थी। क्या बच्चे अलग-अलग कमरों में सोते हैं या सारे एक ही बड़े कमरे में रहते हैं? क्या वो दोस्त बनाएगी?

310 खालिद हुसैनी

क्या लैला को यकीन था कि वहां टीचर अच्छे होंगे?

और सबसे ज़्यादा, मुझे वहां कितने समय तक रहना होगा?

वो एक कब्ज़ाई हुई, बैरकनुमा इमारत से दो ब्लॉक पहले रुक गए।

'जल्मे और मैं यहां इंतज़ार करेंगे,' रशीद ने कहा। 'ओह, में भूल जाऊं, इससे पहले...'

रशीद ने अपनी जेब से एक च्यूइंग गम का टुकड़ा निकाला और विदाई के वक़्त के तोहफ़े के बतौर अज़ीज़ा की तरफ़ बढ़ाया। वो जड़ और उदार दिख रहा था। अजीजा ने उसे ले लिया और बुदबुदा कर शुक्रिया कहा। अज़ीज़ा के सलीके और माफ़ कर देने की उसकी बड़ी काबिलियत पर लैला मुग्ध हो गई और उसका आंखें भींग गईं। उसका दिल उमड़ पड़ा और इस दुख से वो बेसुध हो गई कि आज दोपहर में अज़ीज़ा उसकी वग़ल में नहीं सोई होगी, कि वो अपने सीने पर अज़ीज़ा के हल्के हाथ का वज़न, अपनी पसलियों में अज़ीज़ा के सिर का दबाव, उसकी गर्दन को गर्माहट से भरती अज़ीज़ा की सांसों, अपने पेट को दबाती उसकी एड़ियों को महसूस नहीं कर पाएगी।

जब अज़ीज़ा दूर ले जाई जाने लगी तो जल्यै रोने, चिल्लाने लगा, जीजा! ज़ीज़ा! अपने अव्वा की बांहों में कसमसाने और पांव झटकने लगा, अपनी वहन की पुकारता रहा जब तक कि सड़क पार एक मदारी के बंदर की तरफ़ उसका ध्यान नहीं बंट गया।

आखिरी के दो व्लॉक मरियम, लैला और अज़ीज़ा अकेले गईं। इमारत पर पहुंचे तो लैला को उसकी दरकी हुई बाहरी दीवार, लटकी हुई छतें, गायव खिड़कियों पर कीलों से ढुंके हुए लकड़ी के तख्ते और गिरती हुई दीवार के ऊपर लगे झूले का ऊपरी सिरा दिखा।

वी दरवाजे पर रुक गए और लैला ने अज़ीज़ा को फिर से वही बात कही, जो वो उसे पहले कह चुकी थी।

'और जब वो तुम्हारे अब्बा के बारे में पूछेंगे तो तुम क्या कहोगी?'

'उन्हें मुजाहिदीनों ने मार डाला,' अजीजा ने कहते हुए ऐसा मुंह बनाया मानी वा इसके वारे में बहुत नहीं जानती हो, लेकिन उसे पता हो कि यह जोखिम से भरा हुआ है।

'अच्छा है। अजीजा, समझ गईं ना?'

'क्योंकि यह एक खास स्कूल है,' अजीजा ने कहा। अब जब वो यहां

हजारों दमकते आफ़ताब 3।।

आ चुके थे और इमारत एक हकीकत थी, इस बात से वो हिली हुई दिख रही थी। उसका निचला होंठ कांप रहा था और उसकी आंखें रोने-रोने को हो रही थीं और लैला ने यह देख लिया कि वो बहादुर बनने के लिए कितनी जद्दोजहद कर रही थी। 'अगर हम सच बता दें,' अजीजा ने एक पतली, आवाज में बिना सांस लिए हुए कहा, 'तो वो मुझे नहीं रखेंगे। यह एक खास स्कूल है। मैं घर जाना चाहती हूं।'

' 'मैं पूरे वक़्त आती रहूंगी,' लैला किसी तरह बोल पाई। 'वादा करती हूं।

'मैं भी,' मरियम ने कहा। 'हम यहां तुमसे मिलने आएंगे, अजीजा जो और हमेशा की ही तरह हम साथ खेलेंगे। बस कुछ समय की बात है, जब तक तुम्हारे अब्बा को काम नहीं मिल जाता।'

'यहां खाना मिलता है,' लैला बेचैन होते हुए बोली। उसे बुर्के से सुकून मिला कि अज़ीज़ा यह नहीं देख सकती थी कि वो भीतर ही भीतर कैसे

विखर रही थी। 'यहां तुम भूखी नहीं रहोगी। वो भात और रोटी और पानी देते हैं, शायद फल भी ।'

'लेकिन यहां आप नहीं रहेंगी। और मेरे साथ खाला मरियम नहीं होंगी।' 'मैं आकर तुमसे मिला करूंगी,' लैला ने कहा। 'पूरे वक़्त । मुझे देखो अज़ीजा, मैं आकर तुमसे मिलूंगी। मैं तुम्हारी अम्मी हूं। अगर इसमें मेरी जान भी चली जाए तब भी मैं तुमसे आकर मिलूंगी।'

यतीमखाने का डायरेक्टर एक झुका हुआ, पतले सीने वाला आदमी था, जिसका चेहरा खुशगवार लकीरों से भरा था। वो गंजा था और उसकी लंबी, बिखरी हुई दाढ़ी थी। आंखें मटर की तरह थीं। उसका नाम जमान था। उसने टोपी पहन रखी थी। उसके चश्मे के शीशे चटके हुए थे।

अपने दफ्तर की तरफ़ ले जाते हुए उसने लैला और मरियम से उनके नाम पूछे। उसने अजीजा का नाम और उम्र भी पूछा। वो एक कम रोशनी वाले गलियारे से होकर गुजरे जहां नंगे पांव बच्चे निकल कर झांक रहे थे। कुछ के सिर मुंडे हुए थे कुछ के नहीं। उन्होंने उधड़ी हुई आस्तीनों वाले स्वेटर, घुटनों पर घिस कर तार-तार हो चुकी चीथड़े हो आई जींस पहन रखी थी। उनके कोटों में टेप की पैबंद लगी थी। लैला को साबुन और टेल्कम, अमोनिया

312 खालिद हुसैनी

और पेशाब की गंध महसूस हुई। उसने महसूस किया कि लैला भी समझने लगी थी, और अब सुबक रही थी।

लैला को आंगन की एक झलक मिली घास-पतवार, सूखा हुआ झूला, पिचकी हुई बास्केटबॉल । जिन कमरों से होकर वे गुज़रे उनमें कोई साज-सामान

नहीं था, खिड़कियां प्लास्टिक की चादरों से ढंकी गई थीं। एक कमरे से एक लड़का निकला और उसने लैला की कोहनी पकड़ ली और उसकी गोद में चढ़ने की कोशिश करने लगा। एक सहायक ने अपना झाड़न नीचे रखा और बच्चो के हटा दिया।

जमान यतीमों के साथ नर्मी से पेश आता दिख रहा था। पास से गुजरते हुए उसने कुछ के सिरों को थपथपाया, उन्हें एकाध दोस्ताना बातें कीं, उनके बाल सहलाए और यह सब उसने बिना अहसान जताए किया। बच्चों को उसका छूना अच्छा लगता था। लैला को लगा कि वो सारे उसे उम्मीद के साथ देख रहे थे।

वो उन्हें अपने दफ्तर में ले गया, जिसमें बस तीन फोल्डिंग कुर्सियां और बिखरे हुए कागजों के ढेर से भरी डेस्क थी।

'आप हेरात से हैं,' जमान ने मरियम से कहा। 'आपके लहजे से मैं बता सकता हूं।'

अपनी कुर्सी पर पीछे की तरफ़ झुक कर पेट पर अपने हाथ बांधते हुए उसने बताया कि उसका साला वहां रहा करता था। इस मामूली हाव-भाव में भी लैला ने उसकी गतिविधियों में मेहनत के कांम पर गौर किया। और हालांकि वो फीके से मुस्कुरा रहा था, लैला ने महसूस किया कि उसके इस मजाकिया और खुशनुमा मिजाज़ के भीतर कोई परेशानी, कोई घाव, कोई निराशा और पराजय का भाव छुपा हुआ है।

'वो शीशे बनाता था,' ज़मान ने कहा। 'उसने ये खूबसूरत हरे हंस बनाए थे। आप उन्हें धूप में रखे तो वो भीतर से दमक उठते थे, मानो उनके भीतर नन्हें-नन्हें जवाहिरात भरे हुए हों। आप हेरात वापस गई हैं?'

मरियम ने कहा कि वो नहीं गई है।

'मैं खुद कांधार से हूं। क्या आप कभी कांधार गई हैं हमशीरा? नहीं? यह प्यारी जगह है। वो बागीचे और अंगूर ओह, अंगूर। वो जीभ पर जादू कर देते।'

हजारों दमकते आफ़ताब 313

दरवाजे पर जमा हो गए कुछ बच्चे भीतर झांक रहे थे। ज़मान ने पश्तो में नमीं से उन्हें जाने को कहा।

'बेशक मैं हेरात को भी प्यार करता हूं। कलाकारों और लेखकों, सूफियों और संतों का शहर। आपको वह पुराना मज़ाक पता है कि आप जिस किसी के पैर को भी खरोंचिए आप पाएंगे कि आपने एक शायर को खोद दिया है।

लैला की बगल में अज़ीज़ा ने नाक से सांस ली।

ज़मान ने आह भरी। 'आह, वह। मैंने आपको हंसा दिया, नन्हीं हमशीरा । अक्सर ये सबसे मुश्किल काम होता है। मैं कुछ देर के लिए तो फिक्र कर रहा था। मुझे लगा कि मुझे मुर्गे की तरह बांग देना पड़ेगा या गधे की रेंकना पड़ेगा। लेकिन आप तो हंस दीं। और इतनी प्यारी हैं आप।'

उसने अज़ीज़ा को ले जाकर कुछ देर संभाले रखने के लिए एक मददगार को भीतर बुलाया। अज़ीज़ा कूद कर मरियम की गोद में चढ़ गई और उससे चिपट गई।

'हम बस बातें करने जा रहे हैं, मेरी जान,' लैला ने कहा। 'मैं यहीं होऊंगी। ठीक? यहीं।'

'क्यों नहीं हम कुछ मिनटों के लिए बाहर चलें, अज़ीज़ा जो?' मरियम ने कहा। 'तुम्हारी अम्मी काका ज़मान से बातें करना चाहती हैं। बस कुछ मिनटों के लिए। अब, आओ चलें।'

जब वो अकेले रह गए, तो ज़मान ने अज़ीज़ा के पैदा होने की तारीख, उसकी अब तक की बीमारियों का ब्योरा, एलर्जी वगैरह के बारे में पूछा। उसने अज़ीज़ा के अब्बा के बारे में पूछा और लैला को एक ऐसा झूठ बोलते हुए अजीब महसूस हुआ जो वास्तव में सच था। जमान ने सुना, उसके भाव से न तां वां भरोसा जाहिर हो रहा था और न ही संदेह। उसने कहा कि वो इज़्ज़त के नाम पर यह यतीमखाना चला रहा था। अगर एक हमशीरा कहती हैं कि उनके शौहर मर चुके हैं और वो अपने बच्चे की देखभाल नहीं कर सकतीं, तो वो इस पर सवाल नहीं करता था।

लैला रोने लगी।

ज़मान ने कलम रख दिया।

'मैं शर्मिंदा हूं,' अपनी हथेली से अपना मुंह दबाती हुई लैला फटी हुई आवाज़ में बोली।

314 खालिद हुसैनी

'मुझे देखिए हमशीरा ।'

'कैसी मां अपने खुद के बच्चे को छोड़ती है।'

'मुझे देखिए ।'

लैला ने निगाह उठाई।

'ये आपका कसूर नहीं है। आपने सुना? आपका कसूर नहीं है। कसूरवार वो जंगली, वो वहशी हैं। एक पश्तून होने के नाते उन्होंने मुझे शर्मसार किया है। उन्होंने मेरे लोगों के नाम को जलील किया है। और आप अकेली नहीं हैं, हमशीरा। यहां हर वक़्त आपकी तरह मांएं आती रहती हैं-हर वक़्त-ऐसी मांएं यहां आती रहती हैं जो अपने बच्चों का पेट नहीं भर सकतीं क्योंकि तालिबान उनको बाहर नहीं निकलने देंगे कि वो रोजी- रोटी कमा सकें। इसलिए आप खुद को कसूरवार मत ठहराइए। कोई आप पर इल्ज़ाम नहीं लगा रहा। मैं समझता हूं।' वो आगे की तरफ़ झुक आया। 'हमशीरा। मैं समझता हूं।'

लैला ने बुर्के के कपड़े से अपनी आंखें पोंछीं।

'जैसी ये जगह है,' ज़मान ने आह भरी और हाथ से इशारा किया, 'आप देख सकती हैं कि यह बहुत ही भयानक हालत में है। हमेशा हमको बहुत कम माली मदद मिलती है, हमेशा ही हम घिसटते हुए जैसे-तैसे काम चलाते हैं। हमें तालिबान से बहुत कम या कुछ भी मदद नहीं मिलती। लेकिन हम इंतजाम कर लेते हैं। आपकी तरह, हम भी वो करते हैं जो हमें करना है। अल्लाह बड़ा और रहमदिल है और वही मदद करता है और जब तक वो मदद करेगा, मैं इसका ख्याल रखूंगा कि अज़ीज़ा को रोटी मयस्सर हो और कपड़े मिलते रहें। इतना मैं वादा करता हूं आपसे ।'

लैला ने सिर हिलाया ।

'ठीक है?'

वो दोस्ताना तरीके से मुस्कुरा रहा था। 'लेकिन रोइए मत, हमशीरा। अपनी रुलाई उसे देखने नहीं दीजिए।'

लैला ने फिर से आंखें पोंछीं। 'खुदा आपका भला करे,' उसने भरे गले से कहा। 'खुदा आपका भला करे बिरादर।'

हुआ। लेकिन जब विदा लेने का वक़्त आया तो लैला को जो डर था, वही

हजारों दमकते आफ़ताब 315

अजीजा पर खौफ सवार हो गया।

घर लौटते हुए पूरे रास्ते मरियम के सहारे झुकी हुई लैला को अजीजा की तीखी चीखें सुनाई देती रहीं। अपने दिमाग में उसने जमान का मोटा, गठीला हाथ अजीजा के हाथों के करीब देखा। उन्हें अजीजा को लैला से छुड़ाने के लिए खींचते हुए देखा, पहले तो नर्मी से फिर सख़्ती और इसके बाद ताकत से। उसने देखा कि कोने पर जल्दी से मुड़ते हुए जमान को अजीजा लात मार रही है, उसे अज़ीजा की चीखें सुनाई दे रही थीं, मानो वो इस धरती से गायब हो रही हो। और लैला ने खुद को देखा, वो गलियारे में सिर ताने दौड़ रही थी और उसके गले से चीखें निकल रही थीं।

'मैं उसकी गंध को महसूस कर सकती हूं,' घर पर उसने मरियम को बताया। उसकी आंखें मरियम के कंधों के पार, आंगन के पार, दीवारों के पार पहाड़ों की तरफ़ उठीं, जो सिगरेट पीने वालों की थूक की तरह स्याह थे। मैं उसकी नींद की गंध महसूस कर सकती हूं। आप? क्या आपको भी यह गंध आ रही है?'

'ओह लैला जो,' मरियम ने कहा। 'ऐसा मत करो। इससे क्या होगा? क्या भला होगा इससे?'

पहले पहल रशीद लैला का दिल बहलाता और उनके उसके, मरियम और जल्यै के - साथ यतीमखाने तक जाता। हालांकि चलते हुए वो यह पक्का कर लेता कि वो उसकी दर्द में डूबी हुई निगाहों से वाकिफ रहे, लैला ने उस पर जो मुश्किलें डाल दी हैं, उन पर उसकी बड़बड़ाहटें सुन पाए, कि कैसे यतीमखाने की आवाजाही में उसके पांव दुख जाते थे। उसने यह सुनिश्चित किया कि लैला जाने की कितने बुरे तरीके से वो थक जाता था।

'मैं अब जवान नहीं रहा,' वो कहता। 'ऐसा नहीं है कि तुम परवाह करती हो। अगर तुम्हारे पास उपाय होता तो तुम मुझे कुचल कर चली जातीं। लेकिन तुम ऐसा नहीं करतीं लैला। तुम्हारे पास कोई उपाय नहीं है।'

वो यतीमखाने से दो ब्लॉक पहले अलग हो जाते और वो वहां पंद्रह मिनटों से ज़्यादा इंतजार नहीं करता। वो कहता, 'एक मिनट भी देर हुई तो मैं चल पडूंगा। और मैं जो कह रहा हूं वो करूंगा भी।'

316 खालिद हुसैनी

लैला उससे मिन्नतें, फरियादें करती रहती ताकि वो अजीजा के साथ बिताने के लिए कुछ और मिनटों की इजाजत दे दे। अपने लिए और मरियम के लिए, जो अजीजा की गैरमौजूदगी में बहुत उदास हो गई थी, हालांकि हमेशा की तरह मरियम अपना दुख खुद ही चुपचाप सहती रहती थी। और जल्मै के लिए भी, जो हर रोज अपनी बहन को पूछता रहता था और इस कदर चिल्लाता कि कई बार उसे रोने के दौरे पड़ जाते, जिनसे पार पाना मुश्किल होता ।

कभी-कभी यतीमखाने के रास्ते में रशीद रुक कर शिकायत करता कि उसके पांव दुख रहे हैं। फिर वो घूम जाता और घर की तरफ़ लंबे-लंबे क़दम बढ़ाते हुए चलने लगता। तब ऐसा नहीं लगता कि उसके पांव दुख रहे थे। या फिर अपनी चीभ चटकारता और कहता, 'मेरे फेफड़े, लैला। मेरा दम फूल रहा है। शायद कल मुझे बेहतर महसूस हो या शायद परसों। हम देखेंगे।' वो एक उखड़ती हुई सांस का दिखावा भी नहीं करता। अक्सर वो पलट कर तेज़- तेज़ घर की तरफ़ लौट पड़ता और सिगरेट जला लेता। लैला को बेचारगी में, बेचैनी और गुस्से में कांपते हुए उसके पीछे-पीछे घर आना पड़ता।

तभी एक दिन उसने लैला से कहा कि वो अब और उसे लेकर नहीं जाएगा। 'पूरे दिन सड़कों पर चल कर मैं थक गया हूं,' वो बोला, 'काम की तलाश करते हुए।'

'तो मैं खुद चली जाऊंगी,' लैला ने कहा। 'तुम मुझे नहीं रोक सकते रशीद । सुना तुमने? तुम जितना चाहो उतना मुझे मार सकते हो लेकिन मैं जाती रहूंगी।'

'जो तुम चाहो वो करो। लेकिन तुम तालिबान से नहीं बच पाओगी। फिर मत कहना कि मैंने चेताया नहीं था।'

'मैं तुम्हारे साथ चलूंगी,' मरियम ने कहा।

लैला ने इसकी इजाजत नहीं दी। 'आपको जल्मै के साथ घर पर रुकना होगा। अगर हम रोक लिए गए... मैं नहीं चाहती कि वो उसकी देखभाल करे।'

और इस तरह अचानक लैला की जिंदगी अजीजा से मिलने के उपाय खोजने के इर्द-गिर्द घूमने लगी। आधे वक़्त तो वो यतीम खाने तक जा ही नहीं पाई। सड़क पार करते हुए उसे कोई तालिबान देख लेता और वो सवालों में

उलझ कर रह जाती- तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहां जा रही हो? तुम अकेली

हजारों दमकते आफ़ताब 317

क्यों हो? तुम्हारा महरम कहां है? और फिर उसे घर लौटा दिया जाता। अगर वो खुशकिस्मत होती तो फटकारा जाता या पीछे एक लात मारी जाती या पीठ पर धक्का दे दिया जाता। दूसरे मौक़ों पर उसे लकड़ी के डंडे, पेड़ की ताजी टहनियों, छोटे कोड़ों, थप्पड़ों और मुक्कों जैसी चीजों का सामना करना पड़ता ।

एक दिन एक नौजवान तालिब ने लैला को रेडियो एंटीना से मारा। जब वो मार चुका तो उसने लैला की गर्दन के पीछे आख़िरी धक्का देते हुए कहा, 'अगर मैंने तुम्हें दोबारा देखा तो इतना पीटूंगा कि तुम्हारी हड्डियों से तुम्हारी मां का खून बह निकलेगा।'

इस बार लैला घर लौटी। पेट के बल पड़े हुए लैला को लग रहा था कि वो बेवकूफ़ है, एक दयनीय जानवर है। मरियम उसकी खून से सनी हुई पीठ और जांघों पर गीला कपड़ा रखती तो वो सिसक उठती। लेकिन अक्सर तैला टूटने से इन्कार कर देती। वो ऐसा दिखाती मानो वो घर लौट रही हो, फिर वो सड़क पर दूसरी तरफ़ चली जाती। कभी कभी वो एक ही दिन में दो, तीन या चार बार पकड़ी जाती, उससे सवाल पूछे जाते, डांटा जाता। फिर कोड़े गिरते और एंटीना हवा को चीरते हुए आते और वो बिना अज़ीज़ा की झलक पाए, अपने पांव घसीटते हुए, खून में सनी घर लौटती। जल्दी ही, लैला ने ज़्यादा तहें पहननी शुरू कर दीं, गर्मी में भी वो बुर्के के नीचे दो, तीन स्वेटर पहनती ताकि पिटाई के दौरान चोट से बच सके।

लेकिन लैला अगर तालिबान से बच निकलती तो इसके बाद हासिल तोहफा इन सबके लायक था। वो अज़ीज़ा के साथ जितना चाहे उतना वक़्त गुजार सकती थी- यहां तक कि घंटों भी। वो आंगन में, झूलों के सेट के पास दूसरे बच्चों और उनसे मिलने आई मांओं के साथ बैठते और इस हफ़्ते: अजीजा ने जो सीखा था, उस पर बातें करते।

अज़ीज़ा ने बताया कि काका ज़मान ने उन लोगों को हर रोज़ पढ़ाने का कायदा बनाया था, ज़्यादातर दिनों में पढ़ना और लिखना, कभी कभी भूगोल, थोड़ा इतिहास या विज्ञान, पेड़ों और जानवरों के बारे कुछ।'

'लेकिन हमें पर्दे गिरा कर रखने होते हैं,' अजीजा ने कहा, 'ताकि तालिबान हमें देख न लें।' उसने बताया कि अगर तालिबान जांच-पड़तान करने आए नो उस मौके के लिए काका जमान के पास बुनाई के कांटे और धागों के

318 खालिद हुसैनी

गोले थे। 'हमें किताबें रख कर बुनाई करने का दिखावा करना था।'

एक दिन अजीजा से मिलने के दौरान लैला ने बुर्का पीछे खोंसे हुए एक अधेड़ औरत को अपने तीन बेटों और एक बेटी से मिलते देखा। लैला उसका बीमार मुंह और स्याह बाल नहीं पहचान पाई लेकिन उसने उसका तीखा चेहरा, भारी भौंहें पहचान लीं। उसे उसकी चादर, काले स्कर्ट, रूखी आवाज याद आ गई। उसे याद आ गया कि कैसे वो अपने खूब काले बालों का इतना कस कर जूड़ा बनाती कि उसकी गर्दन के पीछे आप नन्हें खड़े बालों को देख सकते थे। लैला को उस औरत द्वारा छात्राओं को पर्दा करने से मना करना और यह कहना याद आया कि औरतें और मर्द बराबर होते हैं, कि

अगर मर्द पर्दा नहीं करते तो औरतों के पर्दा करने की कोई वजह नहीं है।

एकाएक खाला रंगमाल ने निगाह उठाई और लैला की नज़र उससे मिली, लेकिन लैला को अपनी इस पुरानी टीचर की निगाह में जान-पहचान की कोई रोशनी नहीं दिखी। खाला की निगाह उस पर पल भर को भी नहीं ठहरी।

'वो धरती की सतह में पड़ी दरारें हैं,' अज़ीज़ा ने कहा। 'उनको फॉल्ट कहते हैं।'

यह जून, 2001 के एक जुमे की गर्म दोपहर थी। वो चारों-लैला, जल्मै, मरियम और अज़ीज़ा यतीमखाने के पिछवाड़े में बैठे हुए थे। रशीद इस बार मान गया था कभी कभार वो मान जाता था और उन चारों के साथ आया था। वो सड़क पर आगे बस स्टॉप के पास इंतज़ार कर रहा था।

नंगे पांव बच्चे उनके आसपास चल-फिर रहे थे। बच्चे बिना किसी उत्साह के एक पिचकी हुई फुटबॉल को किक मारते हुए उसके पीछे भाग रहे थे।

'और दरारों की दूसरी तरफ़ चट्टानों की परतें हैं, जिनसे धरती की सतह बनती है,' अज़ीज़ा कह रही थी।

किसी ने अज़ीज़ा के चेहरे पर से बालों को हटा कर उन्हें सफाई से उसके सिर के ऊपर करके एक पिन लगा दिया था। लैला को यह देख कर अच्छा लगा कि कौन उसकी बेटी के पीछे बैठा होगा, किसने उसके बालों को एक के ऊपर एक सजाया होगा, किसने उसे स्थिर बैठने को कहा होगा।

अज़ीज़ा अपने हाथ खोले, हथेलियां ऊपर उठाए और उनको एक दूसरे से रगड़ कर कुछ दिखा रही ती। जल्मै पूरे मन से उसे सुन रहा था।

हजारों दमकले आफ़ताब 319

'केक्टॉनिक प्लेटें, कहते हैं उन्हें?'

'टेक्टॉनिक,' लैला ने कहा। बात करने पर दुखता था। उसका जबड़ा, उसकी पीठ और गर्दन अब भी दुख रहे थे। उसके होंठ सूजे हुए थे और उसकी जीभ उसके सामने के नीचे के दांत की खाली जगह पर जा रही थी, जिसे रशीद ने दो दिन पहले तोड़ दिया था। मम्मी और बाबी के मरने और अपनी जिंदगी में उलट-पलट हो जाने के पहले लैला ने कभी यकीन नहीं किया था कि एक इन्सानी देह इतनी पिटाई, ऐसी लगातार हिंसा बर्दाश्त कर सकती है और तब भी काम करते रह सकती है।

'ठीक। और जब वो एक दूसरे से होकर गुज़रती हैं, तो वो आपस में रगड़ खाती हैं- देखो मम्मी? और इससे ऊर्जा निकलती है, जो धरती की तह में दौड़ती है और यह डोलने लगती है।'

'तुम बहुत समझदार होती जा रही हो,' मरियम ने कहा। 'अपनी बुद्ध खाला से ज़्यादा समझदार ।'

अज़ीज़ा का चेहरा चमक उठा और चौड़ा हो गया। 'आप बुद्ध नहीं हैं खाला मरियम । और खाला जमान कहते हैं कि कभी कभी चट्टानें बहुत, बहुत नीचे अपनी जगह बदलती हैं और वहां नीचे इतना ज़बर्दस्त और डरावना होता है, लेकिन हम सतह पर हल्का सा जलजला ही महसूस करते हैं। बस हल्का सा जलजला ।'

इससे पहले जब वो मिलने आए थे तो उन्हें हवा में मौजूद उन ऑक्सीजन अणुओं के बारे में सुनने को मिला था, जो सूरज की रोशनी में से नीले

रंग को बिखेर देते हैं। अगर धरती पर हवाएं और गैसें नहीं होतीं, अजीजा ने बिना सांस लिए कहा, तो आसमान नीला नहीं होता बल्कि काला समंदर होता और सूरज अंधेरे में चमकता एक बड़ा सितारा होता।

'इस बार क्या अजीजा हमारे साथ घर चल रही है?' जल्मै ने कहा। 'जल्दी ही, मेरे जान,' लैला ने कहा। 'जल्दी ही।'

लैला ने उसे जाते हुए देखा, वो अपने अब्बा की तरह झुक कर, पंजे भीतर की तरफ़ मोड़े हुए चल रहा था। वो झूले के सेट की तरफ़ गया, खाली सीट धकेली और आख़िर में एक कंक्रीट पर बैठ गया, जिसकी दरार में घास उगी हुई थी।

पानी पत्तियों पर से उड़ता है-मम्मी, आप नहीं जानतीं? जैसे रस्सी पर

320 खालिद हुसैनी

टंगे हुए घुले कपड़ों से उड़ता है। और इससे पेड़ों में पानी का बहाव होने लगता है। धरती से जड़ों के जरिए यह पेड़ के तने में पहुंचता है, जिससे होकर टहनियों और पत्तियों में जाता है। इसे ट्रांस्पिरेशन कहते हैं।

कई बार लैला सोचती कि अगर काका ज़मान के खुफिया सवकों के बारे में तालिबान को पता लग जाए तो वो उनका क्या करेंगे।

जब वो मिलने आते तो अज़ीज़ा ज़्यादा चुप रहने की इजाजत नहीं देती। वो पूरे जोश में, ऊंची और गूंजती हुई आवाज़ में बोलती रहती। उसको इन विषयों से बहुत लेना-देना नहीं था और वो बस यों ही अपने हाथ भांजा करती थी। उसके हाथों का हिलाया जाना उसकी अपनी प्रकृति से मेल नहीं

खाता था। उसने एक नई हंसी सीख ली थी। सचमुच में यह उतनी हंसी नहीं थी, जितनी वे उसकी घबराहट की निशानी थी, जिसके बारे में लैला ने अंदाजा लगाया कि वो दरअसल अपना भरोसा जमाए रखने कोशिश में ऐसा करती है।

कुछ दूसरे बदलाव भी आए थे। अज़ीज़ा के नाखुनों में मैल पर लैला का ध्यान जाता और अज़ीज़ा इस पर गौर करती कि लैला ने यह देख लिया है और फिर अपने हाथों को अपनी जांघों में छुपा लेती। जब आसपास में कोई बच्चा चिल्लाता, उसकी नाक से रेंट बह रही होती या अगर कोई बच्चा नंग-धड़ंग पास से गुज़र जाता, उसके बाल धूल में अटे होते तो अज़ीज़ा की पुतलियां जल्दी-जल्दी नाचतीं और फौरन इसकी वजहें बताने लगती। वो मानो की मेज़बान थी, जो मेहमानों के सामने घर की गंदगी और अपने बच्चों की ज़ाहिर हो जाने से शर्मिंदा थी।

यह पूछने पर कि वो किस तरह यहां रह रही है, वो एक अस्पष्ट लेकिन खुशमिजाजी भरा जवाव देती ।

'अच्छे से खाला। मैं अच्छी हूं।'

क्या बच्चे तुम्हें तंग करते हैं?

नहीं, मम्मी। हरकोई अच्छा है।

क्या तुम खा रही हो? अच्छे से सो रही हो?

खाना। सोना भी। हां। पिछली रात हमने भेड़ का गोश्त खाया। या शायद पिछले हफ्ते ।

जब अजीजा इस तरह बोलती तो लैला को उसमें मरियम की अच्छी खासी झलक मिलती।

हजारों दमकते आफ़ताब 321

अजीजा अब हकलाने लगी थी। सबसे पहले इस पर मरियम ने गौर किया। यह बहुत हल्का था, लेकिन इस पर ध्यान जाता था। वो सबसे ज़्यादा 'त' से शुरू होने वाले शब्दों पर हक़लाती। लैला ने जजमान को इसके बारे में बताया। उन्होंने त्यौरियां चढ़ाई और बोले, 'मुझे लगा कि वो हमेशा से एकलाती रही है।'

उस जुमे को वो थोड़ा घूमने के लिए अजीजा के साथ यतीमखाने से निकले और रशीद से मिले, जो बस स्टॉप के पास उनका इंतजार कर रहा था। जल्यै ने जब अपने अब्बा को देखा तो उसने खुशी में किलक कर कुछ कहा और लैला की बांहों में कसमसाया। अजीजा शांत भाव से रशीद से मिली, लेकिन इस शांति में विरोध शामिल नहीं था।

रशीद ने कहा कि उन्हें जल्दी चलना चाहिए, काम पर लौट जाने के पहले बस उसके पास दो घंटे बचे हुए हैं। इंटरकॉन्टिनेंटल में डोरमैन के बतौर यह उसका पहला हफ़्ता था। दोपहर से छह बजे तक उसे हफ़्ते में छह दिन ड्यूटी करनी होती। रशीद कारों के दरवाजे खोलता, सामान ढोता, कई बार कुछ गिर कर बिखर जाता तो वो उसे साफ़ करता। कभी-कभी दिन के आख़िर में रेस्टोरेंट में बफे स्टाइल की दावत के बाद रशीद बचे हुए कुछ खाने के साथ घर लौटता और वो उसके बारे में बात करने से बचता तेल में तर ठंडे कोफ्ते, मुर्गे के भुनी हुई बगलें, जिसकी चमड़ी सख़्त और सूखी होती, भरा हुआ पास्ता चीमड़ हो गया होता, कड़े और कंकड़ीले चावल। रशीद ने लैला से वादा किया कि एक बार वो कुछ पैसों की बचत कर ले तो अजीजा घर आ सकती है।

रशीद ने अपनी वर्दी पहन रखी थी-एक लाल बरगंडी पॉलिस्टर सूट, सफ़ेद शर्ट, क्लिप-ऑन टाई, विसर टोपी जो उसके सफ़ेद बालों पर कस जाती थी। इस वर्दी में रशीद बदल जाता था। वो डरा हुआ, दयनीय रूप से उलझा हुआ, करीब करीब किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाने लायक लगता था। वो किसी ऐसे आदमी की तरह हो गया था जिसने विरोध में एक आह तक भरे बिना, अपने सामने रख दी गई जलालत की जिंदगी को अपना लिया था। वो ऐसा आदमी लगता जिसके हार मान कर टूट जाने में बेचारगी भी थी और जो तारीफ के काबिल भी था।

वो बस पकड़ कर टाइटेनिक सिटी गए। वो नदी की पेटी में चले जिसके सूखे हुए किनारों पर दोनों तरफ़ कामचलाऊ दुकानें खड़ी थीं। पुल के करीब

322 खालिद हुसैनी

जब वो सीढ़ियां उतर रहे थे तो नंगे पांवों वाली लाश एक क्रेन से लटकी हुई थी, उसके कान कटे हुए थे और रस्सी के एक सिरे पर बंधी हुई गर्दन लटकी हुई थी। नदी में वो ख़रीदारों, पैसे बदलनेवालों और ऊबे हुए दिख रहे एनजीओ कार्यकर्ताओं, सिगरेट बेचने वालों और बुर्के में ढंकी औरतों की भीड़ में मिल गए, जो लोगों को फर्जी एंटीबायोटिक प्रेस्क्रिप्शन दिखा कर भीख मांग रही थीं ताकि वो उन्हें खरीद सकें। कोड़े लहराते, नसवार चबाते तालिब टाइटेनिक सिटी में गैरमुनासिब हंसी, और बिना बुर्के वाले चेहरों की ताक में गश्त कर रहे थे।

पोस्तीन कोट विक्रेता और एक नकली फूलों की दुकान के बीच खिलौनों के एक कियोस्क से जल्मै ने एक रबड़ की बास्केटबॉल चुनी, जिस पर पीले- नीले घेरे थे।

'तुम भी कुछ चुनो,' रशीद ने अज़ीज़ा से कहा।

अज़ीज़ा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई, शर्मिंदगी के साथ जैसी की तैसी बनी रही।

'जल्दी। मुझे घंटे भर में काम पर लौटना है।'

अज़ीज़ा ने एक गम-बॉल मशीन चुनी इसमें कैंडी पाने के लिए एक सिक्का डालना होता है, और फिर नीचे के फ्लैप डोर से वो सिक्का वापस मिल जाता है।

लेकिन जब दुकानदार ने कीमत बताई तो रशीद की भौंहे तन गईं। मोलतोल की बकझक का एक दौर चला जिसके आख़िर में रशीद ने अजीजा को लगभग डपटते हुए कहा मानो अज़ीज़ा उसके साथ बकझक कर रही थी, 'लौटा दो। मैं दोनों नहीं ख़रीद सकता।'

लौटते हुए अज़ीज़ा की ऊपर से दिखती खुशमिजाज़ी यतीमखाने के करीब जाते-जाते मिट गई। उसने हाथों को लहराना बंद कर दिया। उसका चेहरा भारी हो गया। हर बार ये होता था। अब लैला की बारी थी कि वो बातें करती रहे, असहजता से भरी हंसी हंसे, उदासी भरी चुप्पी को अनवरत लेकिन बिना मकसद की बातों से तोड़े। इसमें मरियम भी उसका साथ देती।

बाद में, जब रशीद ने उन्हें पहुंचा कर काम पर जाने के लिए बस पकड़ ली, लैला ने देखा कि अज़ीजा यतीमखाने के पिछवाड़े में खड़ी दीवार को खुरचती हुई हाथ हिला कर विदा कह रही है। उसने अजीज़ा की हक़लाहट के बारे

हजारों दमकते आफ़ताब 323

में सोचा और अजीजा द्वारा बताए गए दरारों और गहराई में होने वाले ताकतवर टकरावों के बारे में सोचा, जिसे हम सतह पर बहुत हल्के कंपन के बतौर ही देख पाते हैं।

'चले जाओ!' जल्मै चिल्लाया।

'हुश,' मरियम ने कहा। 'किस पर चिल्ला रहे हो?' उसने हाथ से इशारा किया। 'वहां। वो आदमी।'

लैला ने उसकी उठी हुई उंगलियों की दिशा में देखा। घर के दरवाजे के सामने एक आदमी इसके सहारे झुका हुआ था। जब उसने उन लोगों को. पास आते देखा उसने सिर घुमाया। उसने बंधी हुई बांहें खोल दीं। लंगड़ाते हुए उनकी तरफ़ एक क़दम बढ़ा।

लैला रुक गई।

उसके गले से एक घुटी हुई आवाज़ निकली। उसके घुटने की ताकत ख़त्म हो गई। एकाएक उसने चाहा, उसे ज़रूरत महसूस हुई, कि मरियम की बांहों, उसके कंधों, उसकी कमर या किसी भी चीज़ के सहारे वो टेक लगा सके। लेकिन वो नहीं कर पाई। वो हिम्मत नहीं जुटा पाई। वो एक पेशी हिलाने तक की हिम्मत नहीं जुटा पाई। वो सांस लेने या यहां तक कि पलकें झपकाने तक की हिम्मत नहीं कर पाई, क्योंकि उसे डर था कि उससे कुछ दूरी पर एक मृगमरीचिका है, एक नाजुक भ्रम है जो हल्की सी हरकत से भी गायब हो जाएगा। लैला जड़ खड़ी रही और तारिक़ को तब तक देखती रही जब तक उसके सीने ने जबरन हवा नहीं खींची और जलती हुई आंखों ने झपक नहीं

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

मरियम उसे समझाने जा रही थी, इसके बारे में कुछ कहने जा रही थी कि वो और लैला साथ-साथ बड़े हुए थे लेकिन जल्मै ने उसे बीच में ही काट दिया और एंबुलेंस को उसकी सामने की जाली जल्मै की तरफ़ करके उसे वापस भेजने को कहा। और जब मरियम ने ऐसा किया तो जल्मै ने कहा कि उसे फिर से बास्केटबॉल चाहिए।

'कहां है ये?' उसने पूछा। 'वो गेंद कहां है जो बाबा जान ने मुझे दिलाई

हज़ारों दमकते आफ़ताब 325

थी? कहां है ये? मुझे चाहिए! मुझे चाहिए! उसकी आवाज ऊंची हो रही ती और हर शब्द के साथ तीखी होती जा रही थी।

'ये यही थी,' मरियम बोली और वो चिल्लाया, 'नहीं, ये खो गई है। मैं जानता हूं। मुझे अभी पता लगा कि वो खो गई है! कहां है ये? कहां है?'

'यहां,' अलमारी के नीचे से, जहां वो लुढ़ककर चली गई थी, गेंद निकालते हुए मरियम ने कहा। लेकिन जल्मै ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था और मुक्के चला रहा था और रोते हुए कह रहा था कि यह वही गेंद नहीं है। यह वही नहीं हो सकती क्योंकि उसकी गेंद तो खो गई थी और यह नकली वाली गेंद है, उसकी असली गेंद कहां चली गई? कहां? कहां कहां कहां?

वो तब तक चिल्लाता रहा जब तक लैला को ऊपर आकर उसे पकड़ कर हिलाना- डुलाना नहीं पड़ा। उसने अपनी उंगलियां उसके कसे हुए, काले चुंवराले बालों में, गीले गालों पर फिराईं और उसके कान में अपनी जीभ चटकारी ।

मरियम कमरे के बाहर इंतज़ार करती रही। सीढ़ियों के ऊपर से उसे दत्त तारिक के लंबे पांव ही दिख रहे थे, उसका एक असली पांव और दूसरा नकली पांव, और उनके ऊपर पहनी खाकी पैंट। उसके पांव बिना दरी बाली बैठक की फर्श पर फैले हुए थे। तब उसे यह समझ में आया कि जब वो जलील को फोन करने के लिए उस दिन रशीद के साथ कॉन्टिनेंटल होटल गई थी तो डोरमैन का चेहरा जाना-पहचाना क्यों लग रहा था। उसने टोपी और चश्मा पहन रखे थे इसीलिए वो तब समझ नहीं पाई थी। लेकिन अब मरियम को नौ वरस पहले नीचे बैठक में उस आदमी का रूमाल से अपनी भौंहें पोंछना और पानी मांगना याद आया। अब उसके दिमाग में हर तरह के सवाल उठेः क्या सुल्फा गोलियां भी नाटक का हिस्सा थीं। किसने झूठ बोला था, कायल कर देने वाले ब्योरे दिए थे? और रशीद ने अंब्दुल शरीफ को-अगर सचमुच ये उसी का नाम हो-कितने पैसे दिए थे ताकि वो तारिक़ की मौत की कहानी मुना कर लैला को तोड़ सके?

चवालीस

लैला

तारिक़ ने बताया कि उसके साथ कोठरी में रहे लोगों में से एक के चचेरे भाई को एक बार फ्लमिंगो (मराल पक्षियों) की तस्वीरें बनाने के लिए सरेआम कोड़े लगाए गए थे। उसे इन चिड़ियों के लिए एक लाइलाज लगाव था।

'पूरी स्केचबुक में,' तारिक़ ने बताया। 'उनकी दर्जनों आयल पेंटिंग्स थीं। झीलों में टहलते हुए, दलदल में धूप सेकते हुए, और शायद सूरज के डूबने के दौरान उड़ाने भरते हुए भी।'

'फ्लमिंगो,' लैला ने कहा। वो दीवार के सहारे टेक लगाए, अपना अच्छा पांव घुटनों से मोड़ कर बैठे हुए तारिक़ को देख रही थी। उसमें तारिक़ को फिर से छूना चाह रही थी, जैसा कि इसके पहले उसने सदर दरवाज़े के पास उसे छुआ था, जब वो उसके पास दौड़ी हुई गई थी। अब वो यह सोच-सोच कर शर्मिंदा हो रही थी कि कैसे उसने अपनी बांहें उसके गले में डाल दी थीं और उसके सीने में रोई थी। कैसे उसने लड़खड़ाती हुई मोटी आवाज़ में उसने बार बार उसका नाम लिया था। उसे जानने का मन किया कि क्या उसने कुछ ज़्यादा ही बेकरारी और निराशा ज़ाहिर की थी? शायद उसने ऐसा किया था। लेकिन वो इससे बच नहीं सकती थी। और अब वो फिर से उसे छूने को तरस रही थी ताकि खुद को फिर से यकीन दिला सके कि वो सचमुच वहां मौजूद था, कि वो एक सपना, एक परछाई नहीं था।

'सचमुच,' तारिक़ कह रहा था। 'फ्लमिंगो।'

हजारों दमकते आफ़ताब 327

तारिक़ ने बताया कि जब तालिबान को उसकी तस्वीरें मिलीं तो उन्होंने चिड़िया के लंबे और नंगे पांवों को अपमानजनक माना। तब उन्होंने चचेरे भाई क्के पैरों को बांध कर उसके तलवे के खून से लथपथ होने तक कोड़े लगाए, उन्होंने कहा कि वो इन दो रास्तों में से चुन सकता है या तो वो अपनी तस्वीरों को नष्ट कर दे या फिर फ्लमिंगो को तहजीब वाला बनाए। तब चचेरे भाई ने बश उठाई और हर चिड़िया के पैरों के ऊपर पजामे बना दिए।

'और फिर इस्लामी चिड़ियाएं बन गईं,' तारिक ने कहा।

लैला को हंसी आई लेकिन उसने उसे दबा दिया। उसे अपने पीले पड़े दांतों और टूटे हुए सामने के दांत पर शर्म आ रही थी। उसे अपने मुरझाए हुए चेहरे और सूजे हुए होंठों पर शर्म आ रही थी। उसने चाहा कि उसे चेहरा घोने या कम से कम बालों में कंघी कर लेने का ही मौक़ा मिला होता।

'लेकिन आख़िरी हंसी उस चचेरे भाई की होगी,' तारिक़ ने कहा। 'उसने पजामे वाटरकलर से बनाए। जब तालिबान चले जाएंगे तो वो बस उन्हें धो देगा।' वो मुस्कुराया। लैला ने गौर किया कि तारिक़ का भी एक दांत गायब था और उसने उसके हाथों की तरफ़ देखा।

'सचमुच ।'

उसने सिर पर एक पकोल पहन रखी थी, पैरों में हाइकिंग बूट थे और उसकी खाकी पैंट की कमर में एक काला ऊनी स्वेटर बंधा हुआ था। वो हल्के से मुस्कुरा रहा था और धीरे धीरे सिर हिला रहा था। लैला को याद नहीं आया कि पहले भी उसने यह सचमुच शब्द कभी कहा था। उसे उसका यह उदास हाव-भाव, गोद में तंबू की तरह तनी हुई उंगलियां, सिर का हिलाना भी याद नहीं आया। यह सब नया था। एक ऐसा परिपक्व शब्द, ऐसा परिपक्व हाव भाव, और इसे इतना स्तब्धकारी क्यों होना चाहिए? तारिक अब एक बालिग था। पच्चीस साल का आदमी जिसकी हरकतों में धीमापन और मुस्कान में थकान भरी हुई थी। लंबा, दाढ़ीवाला और लैला के सपनों से ज़्यादा पतला लेकिन मज़बूत हाथों वाला, एक मेहनती इन्सान के हाथ जिसमें घुमावदार, भरीपूरी नसें थीं। उसका चेहरा अब भी पतला और खूबसूरत था लेकिन उसकी चमड़ी अब गोरी नहीं रह गई थी। उसके ललाट पर मौसम की मार के, धूप से

जले के निशान थे। ऐसे ही निशान उसकी गर्दन पर भी थे। उसका पकोल सिर पर पीछे की ओर खिसका हुआ था और लैला देख सकती थी कि उसके बाल गिरने शुरू

328 खालिद हुसैनी

हो गए थे। लैला को जितना याद था, उसके मुकाबले उसकी आंखों का भूरापन अब फीका था, ज़्यादा उदास या शायद कमरे में रोशनी जैसा था।

लैला ने तारिक़ की अम्मी, उनके इत्मीनान से भरे तौर-तरीकों, उनकी समझदार मुस्कुराहट, उनके फीके जामुनी विग के बारे में सोचा। और तारिक़ के अब्बा के बारे में भी सोचा, उनकी भेंगी निगाह, उनकी मज़ाकिया हसी के बारे में सोचा। थोड़ी देर पहले, दरवाज़े पर आंसुओं से भरी आवाज़ में, लड़खड़ाते हुए शब्दों में उसने तारिक़ को बताया कि उसके अम्मी अब्बू के साथ क्या हुआ होगा, उसने इसके बारे में क्या सोचा था। और तारिक़ ने अपना सिर झटका था। इसलिए उसने अब पूछा कि उसके अम्मी-अब्बू कैसे हैं। लेकिन वो पछताई, जब तारिक़ ने निगाहें नीची कर लीं और थोड़े अनमने ढंग से कहा, 'गुज़र गए ।'

'मुझे अफसोस है।'

'खैर। हां। मैं भी। लो।' उसने अपनी जेब से एक छोटा सा काग़ज़ का थैला निकाला और उसे दे दिया। 'अल्योना की तरफ़ से बधाइयां।' भीतर प्लास्टिक में लिपटी हुई पनीर का एक टुकड़ा था।

'अल्योना। एक प्यारा नाम है।' लैला ने आगे की बात बिना हिक़हिचाए कहने की कोशिश की। 'तुम्हारी बीवी?'

'मेरी बकरी।' वो इस तरह मुस्कुरा रहा था मानो उसे इसकी अपेक्षा थी, मानो वो इंतज़ार कर रहा हो कि लैला कोई बात याद कर सके।

और तब लैला को याद आया। एक सोवियत फ़िल्म । अल्योना कैप्टन की बेटी थी, वो लड़की जिसने पहले मेट से प्यार किया था। ये वो दिन था जब उसने, तारिक़ और हसीना ने सोवियत टैंकों और जीपों को काबुल छोड़ते देखा था, वो दिन जब तारिक़ ने अजीब सी रूसी फर की टोपी पहनी थी।

'मुझे उसे ज़मीन पर खूंटे से बांधना पड़ा,' तारिक़ बता रहा था। 'और भेड़ियों की वजह से एक बाड़ बनानी पड़ी। पहाड़ियों के नीचे, जहां मैं रहता हूं, वहां से करीब-करीब चौथाई मील दूर जंगली इलाका है। ज़्यादातर चीड़ के पेड़ हैं, कुछ फर और देवदार हैं। भेड़िए ज़्यादातर तो जंगलों में ही रहते हैं, लेकिन मिमियाती हुई बकरियां और घूमना-फिरना पसंद करने वाली बकरियां भेड़ियों को बाहर खींच सकती हैं। इसलिए बाड़ बनाई। खूंटा गाड़ा ।'

लैला ने पूछा कि वो किन पहाड़ियों के नीचे रहता है।

'पीर पंजाल, पाकिस्तान,' उसने बताया। 'मैं जहां रहता हूं वो जगह मुरीं

हजारों दमकते आफ़ताब 329

कही जाती है। गर्मियों में रहने की जगह है, इस्लामाबाद से घंटे भर की दूरी पर है। यह समुद्र तल से ऊपर, पहाड़ी और हरीभरी जगह है जहां ढेर सारे पेड़ हैं। इसलिए यह गर्मियों में ठंडी रहती है। सैलानियों के लिए सबसे अच्छी जेगह है।'

उसने बताया कि ब्रिटिशों ने इसे अपने रावलपिंडी के फौजी मुख्यालय के नज़दीक एक हिल स्टेशन के रूप में बनाया था, ताकि विक्टोरियाई लोग गर्मी से भाग कर शरण ले सकें। तारिक़ ने बताया कि तुम वहां अब भी औपनिवेशिक दौर के कुछ बचे-खुचे निशान देख सकती हो, कभी कभार के चायखानों में, टिन की छतों वाले बंगले जिन्हें कॉटेज कहा जाता है, ऐसी ही चीज़ें। खुद शहर ही छोटा और खुशनुमा था। मुख्य सड़क मॉल कही जाती थी, जहां डाकघर, बाज़ार, कुछ रेस्टोरेंट और दुकानें थीं, जो सैलानियों से रंगे हुए गिलासों और हाथ से बुनी दरियों के लिए कई गुना ऊंचे दाम वसूल करतीं।

अजीब था कि मॉल वनवे ट्रैफिक वाली सड़क था, जिस पर एक हफ़्ते एक दिशा में ट्रैफिक चलता और अगले हफ़्ते दूसरी दिशा में।

'मुकामी लोग बताते हैं कि आयरलैंड में भी कई जगहों पर ऐसी ही ट्रैफिक व्यवस्था है,' तारिक़ ने बताया। 'मैं नहीं जानता। जो भी हो, यह प्यारा है। यह एक सादी ज़िंदगी है, लेकिन मुझे पसंद है। मुझे वहां रहना पसंद है।'

'अपनी बकरी के साथ, अल्योना के साथ।'

लैला का इरादा गुपचुप तरीके से बातचीत के एक नए सिलसिले में दाखिल होने का था, जैसे कि वहां उसके साथ भेड़ियों द्वारा बकरियों के खाने की चिंता करने वाला और कौन था। लेकिन तारिक केवल सिर हिलाता रहा।

'मुझे तुम्हारे अम्मी-अब्बू के लिए भी अफसोस है,' तारिक़ ने कहा।

'तुमने सुना ।'

'मैंने कुछ पड़ोसियो से पहले बात की थी,' उसने कहा। एक पल की चुप्पी, जिसके दौरान लैला को हैरानी हुई कि पड़ोसियों ने उसे क्या बताया होगा। 'मैं किसी को पहचान नहीं पाया। मेरा मतलब है कि पुराने दिनों का कोई नहीं था।

'वो सब चले गए। कोई ऐसा नहीं बचा जिसे तुम जानते थे।'

'मैं काबुल को पहचान नहीं पाया।'

'मैं भी नहीं,' लैला ने कहा। 'और मैं कभी यहां से नहीं गई।'

330 खालिद हुसैनी

'मम्मी का एक नया दोस्त है,' जल्मै ने तारिक़ के चले जाने पर उसी रात खाने के बाद कहा। 'एक मर्द ।'

रशीद ने निगाह उठाई। 'उसका दोस्त है?'

तारिक़ ने पूछा कि क्या वो सिगरेट पी सकता है।

तारिक़ ने एक कटोरी में राख झाड़ते हुए बताया कि वो पेशावर के करीब नासिर बाग रिफ्यूजी कैंप में कुछ वक़्त के लिए ठहरे थे। जब वो और उसके अम्मी-अब्बू पहुंचे तो वहां साठ हज़ार अफ़ग़ान पहले से ही रह रहे थे।

'यह जलोज़ई जैसे दूसरे कैंपों, उनसे खुदा बचाए, जितना बुरा नहीं था,' उसने कहा। 'एक बार तो मैंने अंदाज़ा लगाया कि यह एक तरह का मॉडल कैंप था। शीत युद्ध के दिनों में यह एक ऐसी जगह था, जिसे दिखा कर पश्चिमी

देश यह साबित करते कि वो अफ़ग़ानिस्तान में केवल हथियारों की खेप ही नहीं भेज रहे थे।'

लेकिन वह सोवियत जंग के दौरान हुआ करता था, तारिक़ ने बताया, जिहाद के दिनों में जब पूरी दुनिया की दिलचस्पी यहां थी। वो खुले हाथों फंड देने और मारग्रेट थैचर के दौरों के दिन थे।

'बाक़ी तुम जानती हो लैला। जंग के बाद सोवियत बिखर गया और पश्चिम ने मुंह फेर लिया। अफ़ग़ानिस्तान में अब उनका कुछ भी दांव पर नहीं लगा था और रकम ख़त्म हो गई। अब नासिर बाग में बस तंबू, धूल और खुले सीवर भर हैं। जब हम वहां पहुंचे तो उन्होंने हमें एक छड़ी और कैनवस की एक चादर पकड़ाई और हमसे कहा कि हम खुद तंबू बना लें।'

तारिक ने उसे वह बात बताई जो उसे नासिर बाग के बारे में सबसे ज़्यादा याद आती थी, जहां वो एक बरस रहा था। यह भूरा रंग था। 'भूरे तंबु । भूरे लोग। भूरे कुत्ते। भूरी खिचड़ी।'

वहां एक ठूंठ था, जिस पर वो रोज़ चढ़ा करता था। वहां वो एक शाखा के दोनों तरफ़ पांव फैला कर बैठ जाता और धूप में लेटे शरणार्थियों को देखा करत्ता। उनके जख्म और ठूंठ साफ़ दिखते। वो नन्हें कमज़ोर बच्चों को जेरी कैनों में पानी ढोते, आग जलाने के लिए कुत्ते की लीद को जमा करते, भोथरी छुरियों से लकड़ी के एक-47 बनाते, आटे की बोरियां घसीटते

हजारों दमकते आफ़ताब 331

देखता । शरणार्थी कस्बे में चारों तरफ़ हवा तंबुओं को फड़फड़ाती, हर जगह घास-पतवार के टुकड़े उड़ाती, मिट्टी की झोंपड़ियों की छतों पर से उड़ाई जाती पतंगों को ऊंचा उठाती ।

'ढेर सारे बच्चे मर गए। पेचिश, टीबी, भूख-कुछ भी कह लो। ज़्यादातर तो पेचिश से। उफ खुदा, लैला। मैंने इतने सारे बच्चों को दफनाए जाते देखा। देखने के लिए इससे बदतर चीज़ कोई नहीं होगी।

उसने अपने पांव मोड़े। कुछ देर तक खामोशी रही।

'मेरे अब्बा वो पहली सर्दियां नहीं पार कर पाए,' उसने कहा। 'वो सोते हुए ही मर गए। मुझे नहीं लगता कि उन्हें कोई दर्द हुआ था।'

उसने बताया कि उन्हीं सर्दियों में उसकी अम्मी को न्यूमोनिया हो गया और वो लगभग म ही गईं, वो मर ही जातीं अगर शिविर का एक कैंप डॉक्टर नहीं होता, जिसने एक स्टेशन वैगन को मोबाइल क्लीनिक बना रखा. था। वो सारी रात जगी रहतीं, बुखार में तपती हुईं, गाढ़ा, गहरा लाल बलगम फेंकती रहतीं। तारिक़ ने बताया कि डॉक्टर से मिलने की कतारें लंबी हुआ करती थीं। कतार में खड़ा हर कोई कांपता रहता, कराहता, खांसता, कुछ के पांवों पर पाखाना बहता रहता, कुछ दूसरे इतने थके हुए या भूखे या बीमार होते कि कुछ बोल नहीं पाते।

'लेकिन वो डॉक्टर एक भला आदमी था। उसने मेरी अम्मी की अच्छे से देखभाल की, उन्हें कुछ दवाएं दीं और उन सर्दियों में उनकी जान बचा ली।' ठीक उन्हीं सर्दियों में तारिक़ ने एक बच्चे पर धौंस जमाई।

'बारह या शायद तेरह साल का होगा,' उसने सपाट तरीके से कहा। 'मैंने शीशे का एक टुकड़ा उसके गले पर रखा और उसकी कंबल उससे छीन ली। उसे मैंने अपनी अम्मी को दे दिया।

तारिक़ ने कहा कि अम्मी की बीमारी के बाद उसने खुद से कसम खाई कि वो अगली सर्दियां शिविर में नहीं गुज़ारेंगे। वो काम करेगा, पैसे बचाएगा और वो पेशावर के एक अपार्टमेंट में चले आएंगे, जहां गर्माहट और साफ़ पानी होगा। जब बसंत आया तो उसने काम की तलाश की। समय-समय पर एक ट्रक सुबह-सुबह शिविर में आता था और दो-एक दर्जन बच्चों को बटोर कर पत्थर हटाने या बागीचों में सेब चुनने के लिए ले जाता था। इसके बदले में छोटी सी रकम मिलती, कभी कभी एक कंबल या जूतों का एक

332 खालिद हुसैनी

जोड़ा। तारिक़ ने बताया कि वो उसे नहीं चाहते थे।

'मेरे पांव पर निगाह डालते और बात ख़त्म हो जाती।'

कुछ दूसरे काम भी थे। गड्ढे खोदना, झोंपड़ियां बनाना, पानी ढोना, आउटहाउस में से फावड़े से पाखाना निकालना। लेकिन बड़े लोग इन कामों के लिए एक दूसरे से झगड़ते रहते और तारिक़ को कभी मौक़ा ही नहीं मिला।

तभी एक दिन उसकी भेंट एक दुकानदार से हुई। वह 1993 का पतझड़ का मौसम था।

'उसने चमड़े का एक कोट लाहौर पहुंचाने के लिए मुझे रकम की पेशकश की। रकम अधिक नहीं लेकिन काफ़ी थी। एक या शायद दो महीनों के अपार्टमेंट के किराए के लिए काफ़ी थी।'

तारिक़ ने बताया कि दुकानदार ने उसे एक बस टिकट और लाहौर रेलवे स्टेशन के करीब एक नुक्कड़ का पता दिया, जहां उसे दुकानदार के एक दोस्त को वह कोट पहुंचाना था।

'मैं पहले से ही जानता था। बेशक, मैं जानता था,' तारिक़ ने कहा। 'उसने मुझसे कहा कि अगर मैं पकड़ा जाता हूं तो यह मेरी अपनी ज़िम्मेदारी होगी, कि मुझे यह याद रखना चाहिए कि वो जानता था कि मेरी अम्मी कहां रहती हैं। लेकिन रकम इतनी अच्छी थी कि ये सब बातें बेअसर रहीं। और सर्दियां फिर से आ रही थीं।'

'तुम कितनी दूर तक गए?' लैला ने पूछा।

'बहुत दूर नहीं,' उसने हंसते हुए कहा। उसकी आवाज़ में माफ़ी और शर्मिंदगी का पुट था। 'बस पर भी कभी नहीं चढ़ पाया। लेकिन मैं सोचता था कि मैं सुरक्षित था, महफूज़ था। मानो वहां कहीं कोई एकाउंटेंट था, एक ऐसा आदमी जो अपने कानों के पीछे पेंसिल खोंसे रहता और इन सारी चीज़ों का हिसाब-किताब रखता, चीज़ों को मिलाता और नीचे देखते हुए कहता, 'हां, हां, उसे ये मिल सकता है, हम उसे जाने दे सकते हैं। इस आदमी ने पहले ही बकाए का भुगतान कर दिया है।'

सिलाइयों के नीचे हशीश थी और जब पुलिस ने कोट में छुरी मारी तो वह पूरी सड़क पर बिखर गई।

तारिक फिर से हंसा जब उसने यह कहा। यह एक ऊंची होती, हिला

हजारों दमकते आफ़ताब 333

देने वाली हंसी थी और लैला को याद आया कि जब वो छोटे थे तो वो शर्मिंदगी को ढंकने के लिए और अपनी वेवकूफ़ी भरे कारनामों को हल्का करने के लिए कैसे हंसा करता था।

'वो लंगड़ा है,' जल्यै ने कहा।

'क्या ये वही है, जिसके बारे में मैं सोच रहा हूं?' 'वो केवल मिलने आया था,' मरियम नें कहा।

'तुम चुप रहो,' रशीद ने तड़कते हुए एक उंगली उठाई। वो लैला की तरफ़ मुड़ा। 'अच्छा, तुम क्या जानती हो? लैला और मजनूं का फिर से मिलन । पुराने ज़माने की तरह।' उसका चेहरा पत्थर की तरह हो गया। 'तो तुमने उसे भीतर आने दिया। यहां। मेरे घर में। तुमने उसे भीतर आने दिया। वो यहां मेरे बेटे के साथ था।'

'तुमने मुझे ठगा। तुमने मुझसे झूठ बोला,' लैला ने अपने दांत किटकिटाते हुए कहा। 'तुमने एक आदमी को भेजा, जिसने मेरे सामने बैठकर... तुम जानते थे कि अगर मुझे लगेगा कि वो जिंदा था तो मैं चली जाऊंगी।'

'और तुम मुझसे झूठ नहीं बोलीं?' रशीद गरजा। 'तुमने सोचा कि मुझे पता नहीं लगेगा? तुम्हारे हरामी के बारे में? तुमने मुझे बेवकूफ़ समझा, रंडी ।'

तारिक़ जितना ही बातें करता, लैला को उस पल का उतना ही डर लगता जब वो चुप हो जाएगा। उसके बाद आनेवाली चुप्पी इस बात का संकेत होगी कि अब ब्योरे देने की बारी लैला की है। उसे अपनी आपबीती बतानी होगी । जिन बातों को यकीनन वो पहले से ही जानता था, उनकी पुष्टि करनी होगी। जब वो रुका तो लैला को लगा कि वो अचेत हो जाएगी। उसने अपनी आंखें फेर ली थीं। वो नीचे उसके हाथों को देख रही थी, उसके बिखरे हुए, काले बालों को जो इन बीच के बरसों में उन हाथों के पीछे उग आए थे।

तारिक़ ने जेल में बिताए दिनों के बारे में बहुत कुछ नहीं कहा। बस उसने यही बताया कि वहां उसने उर्दू बोलना सीख लिया था। जब लैला ने पूछा तो उसने बेचैनी से अपना सिर झटक दिया। इस इशारे में लैला ने जंग लगी सलाखें और बिना नहाई हुई देहों, हिंसक आदमियों और भरे हुए हॉलों

334 खालिद हुसैनी

और बेकार की चीज़ों के साथ सड़ती हुई छतों को देखा। उसने उसके चेहरे में पढ़ा कि यह जलालत, पतन और निराशा से भरी हुई जगह थी।

तारिक़ ने कहा कि उसकी अम्मी ने उसकी गिरफ्तारी के बाद उससे मिलने की कोशिश की थी।

'वो तीन बार आईं। लेकिन मैं कभी उनसे मिल नहीं पाया,' उसने कहा ।

उसने उन्हें एक चिट्ठी लिखी और उसके बाद कुछ और चिट्ठियां। यहां तक कि उसे संदेह हुआ कि वो उनको मिलती भी थीं या नहीं।

'और मैंने तुमको लिखा ।'

"तुमने लिखा?'

'ओह, ढेरों,' उसने कहा। 'तुम्हारे दोस्त रूमी मेरी लिखाई से जल मरते ।'

वो फिर से हंसा। इस बार गरजदार हंसी, मानो वो अपनी बेबाकी से स्तब्ध था और उसने जो किया था उससे शर्मिंदा था।

ऊपर जल्मै फिर गेंद मारने लगा था।

'तो पुराने दिनों की ही तरह, रशीद ने कहां। 'तुम दोनों। मुझे अंदाज़ा है कि तुमने उसे अपनी सूरत भी दिखाई होगी।'

'उन्होंने दिखाई,' जल्मै ने कहा। इसके बाद लैला से बोला, 'आपने किया था मम्मी, मैंने आपको ऐसा करते देखा था।'

'तुम्हारे बेटे को मेरी उतनी परवाह नहीं है,' लैला ऊपर से लौटी तो तारिक़ ने कहा।

'मुझे अफसोस है,' उसने कहा'। 'यह बात नहीं है। वो बस... छोड़ उसे ।' फिर उसने जल्दी से बात बदल दी क्योंकि जल्मै के बारे में इस तरह सोचना उसे परेशान कर रहा था और वो कसूरवार महसूस कर रही थी। क्योंकि जल्मै एक बच्चा था, नन्हा सा बच्चा जो अपने अब्बा से प्यार करता था और इस अजनबी के प्रति उसका सहज विरोध समझ में आने लायक और जायज़ था।

और मैंने तुम्हें लिखा।

ढेरों।

'तुम मुर्री में कितने समय से हो?'

हजारों दमकते आफ़ताब 335

'एक साल से भी कम समय से,' तारिक़ ने कहा।

उसने बताया कि जेल में वो एक बूढ़े से मिला। सलीम नाम का यह आदमी पाकिस्तानी था और कभी का फील्ड हॉकी खिलाड़ी था। जेल में उसका आना जाना लगा रहता था और अभी एक खुफिया पुलिस को चाकू मारने के इल्ज़ाम में दस बरसों से सजा काट रहा था। हर जेल में सलीम जैसे लोग हैं, तारिक़ ने बताया। हमेशा ही कोई न कोई चालाक और रसूख वाला इंसान होता था, जो व्यवस्था को चलाता था और तुम्हें चीजें मुहैया कराता था, जिसके आस पास मौक़े और जोखिम हर वक़्त मंडराया करते थे। ये सलीम ही थे जिन्होंने अम्मी के बारे में तारिक़ के सवालों को बाहर भेजा, ये सलीम ही थे जिन्होंने उसे बैठा कर नर्म, अब्बाओं जैसे लहजे में उसे बताया था कि वो सर्दी लगने से मर गई थीं।

तारिक़ ने पाकिस्तानी जेल में सात बरस बिताए। 'मैं आसानी से छूट गया,' उसने कहा। 'मैं खुशकिस्मत था। यह पता लगा कि मेरे मामले की सुनवाई कर रहे जज के भाई की बीवी एक अफ़ग़ानी औरत थी। हो सकता है कि उसने रहमदिली दिखाई हो। मैं नहीं जानता।'

जब तारिक़ की सज़ा ख़त्म हुई तो 2000 की सर्दियों का शुरुआती वक़्त था। सलीम ने अपने भाई का पता और फोन नंबर उसे दिया। उसके भाई का नाम सईद था।

'उन्होंने कहा कि सलीम का मुर्री में एक होटल है,' तारिक़ ने बताया । 'बीस कमरे और एक लाउंज। ये सैलानियों के ठहरने की एक छोटी सी जगह है।
उन्होंने कहा कि उसे बताना कि तुम्हें मैंने भेजा है।'

तारिक़ को बस से उतरते ही मुर्ती पसंद आ गई, इसके बर्फ़ से लदे हुए सनोबर, ठंडी, साफ़ हवा, बंद शटरों वाले लकड़ी के कॉटेज, चिमनियों से गोल-गोल ऊपर उठता धुआं ।

सईद का दरवाज़ा खटखटाते हुए तारिक़ सोच रहा था कि ये वो जगह है जहां उसकी अब तक की जानी-पहचानी बदहाली की दुनिया की कोई जगह नहीं बल्कि यहां तो मुश्किलों और गम भी फूहड़ लगते हैं और उनकी कल्पना 'भी नहीं की जा सकती।

'मैंने खुद से कहा कि ये ऐसी जगह है जहां आदमी कामयाब हो सकता है।'

336 खालिद हुसैनी

तारित को इमारत की देखभाल करने और छोटे-मोटे मरम्मत के कामों के लिए रख लिया गया। उसने बताया कि उसने आधी तनख्वाह वाले एक महीने के ट्रायल के दौरान अच्छा काम किया, जिसका जिम्मा सईद ने उसे दिया था। तारिक़ के बोलने में लैला सईद को देखती थी, जिनके बारे में उसने कल्पना की कि वो पतली आंखों और लाल चेहरे वाले इंसान थे, रिसेप्शन ऑफिस की खिड़की के पास खड़े होकर वो तारिक़ को लकड़ियां काटते और राहदरी पर से फावड़े के ज़रिए बर्फ हटाते देख रहे थे। उसने उन्हें तारिक्र के पैरों पर झुकते हुए देखा, जब तारिक़ सिंक के नीचे चू रहे पाइप की मरम्मत कर रहा था। उन्हें गायब हो गई नकदी के लिए रजिस्टरों की जांच करते देखा ।

तारिक्त ने बताया कि उसकी कोठरी रसोइए के छोटे बंगले की बगल में थी।
रसोइया एक मेट्रननुमा उम्रदराज़ बेवा थी, जिसका नाम अदीबा था।
दोनों कोठरियां होटल से अलग थीं और उनको बादाम के पेड़ों का एक झुंड, एक पार्क बेंच और पिरामिड की शक्ल का एक फव्वारा मुख्य इमारत से अलग करता था, जो गर्मियों में पूरे दिन पानी उड़ाता रहता था। लैला ने कोठरी में तारिक़ की कल्पना की जो अपने बिस्तर पर बैठा हुआ खिड़की से बाहर के पत्तियों से भरी दुनिया को देख रहा था।

ग्रेस पीरियड के आखिर में सईद ने तारिक़ की तन्खवाह पूरी कर दी और उससे कहा कि उसे दोपहर के खाने के पैसे नहीं देने होंगे। उन्होंने उसे एक ऊनी कोट और एक नया पांव दिया। तारिक़ ने बताया कि वो उस आदमी की दयाशीलता पर रो पड़ा था।

अपनी पहली पूरी तनख्वाह जेब में लिए तारिक़ शहर गया और अल्योना खरीद लाया।

'उसके बाल कमाल के सफ़ेद हैं,' तारिक़ ने मुस्कुराते हुए कहा। 'कुछ सुबहों में, जब सारी रात बर्फ़ पड़ी हो, खिड़की से बाहर देखने पर उसकी बस दो आंखें और थूथन ही दिखती है।'

लैला ने सिर हिलाया। फौरन एक और खामोशी उनके बीच आकर बैठ गई। ऊपर जल्मै फिर से दीवारों पर गेंद मारने लगा था।

'मुझे लगा कि तुम मर गए थे,' लैला ने कहा।

'मुझे पत्ता है। तुमने मुझे बताया।'

लैला की आवाज़ टूट गई। उसे अपना गला साफ़ करना पड़ा, हिम्मत

हजारों दमकते आफ़ताब 337

जुटानी पड़ी। 'जो आदमी ख़बर देने आया था वो इतना संजीदा था... मैंने उस पर भरोसा कर लिया, तारिक़। मैंने चाहा कि मैं न करूं, लेकिन मैंने किया। और तब मुझे लगा कि मैं इतनी अकेली और बिखरी हुई हूं। वरना मैं रशीद से शादी करने को राजी नहीं हुई होती। मैं नहीं हुई होती...'

'तुम्हें ऐसी बात करने की ज़रूरत नहीं है,' उसने नर्मी से, उसकी आंखों में देखने से बचते हुए कहा। उसने यह बात जैसे कही, उसमें कोई छुपी हुई नाराज़गी और तोहमत नहीं थी। कसूरवार ठहराने का कोई निशान नहीं था।

'लेकिन मैं कहूंगी। क्योंकि उससे शादी करने की इससे भी एक बड़ी वजह थी। ये एक ऐसी बात है, जिसे तुम नहीं जानते, तारिक़। कोई है। मुझे तुम्हें बताना होगा।'

'क्या उसके साथ तुमने भी बैठ कर बातें कीं?' रशीद ने जल्मै से पूछा।

जल्मै ने कुछ नहीं कहा। लैला ने अब उसकी आंखों में हिचक और असमंजस देखी। मानो उसे यह बात समझ में आ गई थी कि उसने जो बात खोल दी थी वो उसके ख्यालों से कहीं ज़्यादा बड़ी निकल रही थी।

'मैंने तुमसे एक सवाल किया है, लड़के ।'

जल्मै ने थूक निगली। उसकी निगाह अस्थिर थी। 'मैं ऊपर मरियम के साथ खेल रहा था।'

'□□ □□□□□□□□ □□□□□ ?'

□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □

'□□□ □□ □□□□□,' □□□□ □□ □□□□ '□□ □□ □□□'

'□□... □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□,' □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□, □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□

'□□□ □□□□□ □□□,' □□□□ □□ □□□□ '□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □'

□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□, '□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□' '□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□,' □□□□ □□ □□□□

'□□□□□□□□ □□□□□□□□' □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□, □□□□ □□□□□ □□□□ □□□

338 □□□□□ □□□□□□

'□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□'

'□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□'

□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□

घुमड़ता रहता था। उसे जानने का मन कर रहा था कि वो अब उसको कैसी लग रही थी। क्या वो उसे अब भी प्यारी लग रही थी? या क्या वो उसे बूढ़ी, घिस गई, दयनीय लग रही थी मानो एक डरी हुई अकड़ी हुई उम्र दराज़ औरत हो? लगभग दस बरस । लेकिन एक पल के लिए वहां धूप में तारिक़ के साथ खड़े रहना ऐसा था मानो ये बरस बीते नहीं हों। उसके अम्मी-अब्बू की मौतें, रशीद से उसकी शादी, हत्याएं, यहां तक के उसके बच्चे, ये सारा कुछ एक सपने की तरह लगे, एक अजीब से लंबे सफ़र जैसे, मानो वो पिछली दोपहर के उनके साथ और इस पल के बीच का एक छोटा सा अंतराल भर थे।

तब तारिक़ का चेहरा बदल कर गंभीर हो गया। वो इस भाव को जानती थी। ये वही भाव था, जो उस दिन उसके चेहरे पर था, इतने बरसों पहले उस वक़्त जब वो दोनों बच्चे हुआ करते थे, जब वो अपना पांव खोल कर खादिम की तरफ़ दौड़ा था। अब उसने एक हाथ आगे बढ़ाया और लैला के निचले होंठ का कोना छू लिया।

'उसने तुम्हारे साथ ये किया,' उसने सर्द आवाज़ में कहा।

इस छुअन के साथ ही लैला को उस दोपहर का पागलपन याद आया, जिस दिन उसकी कोख में लैला आई थी। लैला के गले पर उसकी सांसें, तारिक़ के कूल्हे की पेशियों का फड़कना, उसकी छातियों पर उसका दबाव, एक दूसरे में गुंथे हुए उनके हाथ ।

'मैं चाहता हूं कि काश तुम्हें अपने साथ ले जा पाता,' तारिक़ लगभग फुसफुसाया ।

लैला ने रोने से बचने की कोशिश में अपनी निगाह नीचे कर ली।

'मैं जानता हूं कि तुम अब एक शादीशुदा औरत और एक मां हो। और दूसरी तरफ़ मैं इतने बरसों के बाद, इतने सारे हादसों के बाद तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ा हूं। शायद यह मुनासिब या जायज़ नहीं है, लेकिन मैं इतनी दूर तुम्हें देखने आया हूं और... ओह, लैला, मैं चाहता हूं कि मैं तुम्हें छोड़ कर कभी नहीं जाऊं।'

हजारों दमकले आफ़ताब 339

'ऐसा मत कहो,' वो भर्राए गले से बोली ।

'मुझे और सख़्त कोशिश करनी चाहिए थी। जब मेरे पास मौक़ा था तो तुमसे शादी कर लेनी चाहिए थी। तब हर चीज़ अलग होती।'

'ऐसी बातें मत करो। मेहरबानी करके। इससे दर्द होता है।'

उसने सिर हिलाया और उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाया। फिर खुद को रोक लिया। 'मैं किसी चीज़ का अंदाज़ा नहीं लगाना चाहता। और मैं इस तरह हवा में से यहां तुम्हारे सामने आकर तुम्हारी ज़िंदगी में उथल-पुथल नहीं लाना चाहता । अगर तुम चाहती हो कि मैं चला जाऊं, अगर तुम चाहती हो कि मैं पाकिस्तान लौट जाऊं तो एक बार कह दो लैला। मैं सच कह रहा हूं। कह दो और मैं चला जाऊंगा। मैं तुम्हें फिर से परेशान नहीं करूंगा। मैं चला जाऊंगा-'

'नहीं!' लैला ने इतनी तेज़ी से कहा, जितना उसका इरादा नहीं था। उसने पाया कि उसने उसके हाथों को उसकी तरफ़ हाथ बढ़ा दिया है, कि वो उसके हाथों को पकड़ रही है। उसने अपना हाथ नीचे कर लिया। 'नहीं। मत जाओ, तारिक़। नहीं। मेहरबानी करके रुक जाओ ।'

तारिक़ ने सिर हिलाया।

'वो दोपहर से आठ बजे तक काम करते हैं। कल दोपहर बाद आना।

मैं तुम्हें अज़ीज़ा के पास ले चलूंगी।'

- 'मुझे रशीद का डर नहीं है, तुम्हें पता है।'

'मैं जानती हूं। कल दोपहर बाद आना।'

'और फिर?'

'और फिर... मैं नहीं जानती। मुझे सोचना होगा। ये...'

'मैं जानता हूं कि ये है,' उसने कहा। 'मैं समझता हूं। मुझे अफसोस है। मुझे काफ़ी सारी चीज़ों के लिए अफसोस है।'

'अफसोस मत करो। तुमने वादा किया था कि तुम आओगे। और तुम आए हो।'

उसकी आंखें भींग गईं। 'तुम्हें देख कर अच्छा लगा, लैला ।'

लैला ने अपनी जगह कांपते हुए खड़े-खड़े, उसे दूर जाते देखा। उसने सोचा, ढेरों पत्र और उस पर डर की एक और लहर दौड़ गई, उदासी और दृख की एक लहर, लेकिन साथ ही कुछ बेचैन और बेकरार उम्मीद भी थी।

पैंतालीस

मरियम

'मैं ऊपर मरियम के साथ खेल रहा था,' जल्मै ने कहा।

'और तुम्हारी अम्मी?'

'वो... वो नीचे उस आदमी से बातें कर रही थीं।' 'समझ गया,' रशीदू ने कहा। 'सबकी मिलीभगत ।'

मरियम ने उसके चेहरे को सुकून से भर कर ढीला पड़े हुए देखा। उसने साफ़ साफ़ उसकी ललाट की तहें देखीं। उसकी आंखों से संदेह और परेशानी निकली पड़ रही थी। वो तन कर बैठा था और थोड़ी सी देर के लिए वो महज सोचता हुआ-सा दिखा, मानो एक जहाज़ के कप्तान को अभी अभी हुए गदर की खबर दी गई हो और वो अपने अगले क़दम के बारे में सोच-विचार रहा हो।

उसने निगाह उठाई।

मरियम ने कुछ कहना शुरू किया लेकिन उसने हाथ उठाया और उसे देखे बिना बोला, 'बहुत देर हो गई है, मरियम।'

जल्मै से उसने बहुत सर्व आवाज़ में कहा, 'तुम ऊपर जाओ लड़के।' जल्मै के चेहरे पर मरियम ने खतरे के संकेत देखे। वो असहज रूप से उन तीनों को देख रहा था। उसे महसूस हुआ कि उसकी चुगलियों के खेल ने कमरे में एक गंभीर शक्ल अख्तियार कर ली है, बहुत गंभीर। उसने खिसियाई हुई-सी, अफसोसनाक निगाह से पहले मरियम और फिर अपनी अम्मी को देखा।

हजारों दमकते आफ़ताब 341

ललकारत्ती हुई आवाज़ में रशीद ने कहा, 'अभी!'

उसने जल्मै को कोहनी से पकड़ा। जल्मै ने चुपचाप खुद को ऊपर ले आए जाने दिया।

मरियम और लैला ज़मीन में आंखें गाड़े जड़वत खड़े रहे, मानो उनका एक दूसरे को देख लेना रशीद के नज़रिए को मज़बूत करेगा, कि जब वो ऐसे लोगों के लिए दरवाज़े खोल रहा था और उनका सामान घसीट रहा था, जो उसकी तरफ़ निगाह उठा कर देखते भी नहीं हैं, तो उसकी पीठ पीछे, उसके अपने ही घर में, उसके प्यारे बेटे की मौजूदगी में एक अश्लील साजिश चल रही थी। उन दोनों में से कोई कुछ भी नहीं बोला। वो ऊपर गलियारे में कदमों की आहटें सुन रही थीं, यह भारी और अपशगुन से भरी हुई आहट थी। दूसरी आवाज़ एक चंचल नन्हें जानवर के बड़बड़ाने की आवाज़ थी। उन्होंने घुटी-घुटी आवाजें, चिंचियाती हुई फरियाद, रूखा जवाब, दरवाज़े का बंद होना, चाबी घूमने की करकराती हुई आवाज़ सुनी। फिर एक जोड़ी लौटते हुए पांवें की आहट, जो अब ज़्यादा बेसब्र लग रही थी।

मरियम ने सीढ़ियों पर धमधम करते हुए नीचे आते पांवों को देखा । उसने रशीद को चाबी को जेब में रखते देखा, उसकी बेल्ट देखी जिसका छेदों वाला हिस्सा उसकी मुट्ठी के चारों तरफ़ लिपटा हुआ था। उसके पीछे लटक रहा नकली पीतल का बकल हर क़दम पर उछल रहा था।

वो उसे रोकने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन रशीद ने उसे पीछे धकेल दिया और उसकी बगल से तेज़ी ने आगे बढ़ गया। बिना कुछ कहे उसने लैला पर बेल्ट घुमाई। यह उसने ऐसी तेज़ी से किया कि लैला के पास पीछे हटने या झुक पाने या अपने बचाव में हाथ उठा पाने का कोई मौक़ा नहीं था। लैला ने

अपनी कनपटी पर उंगली फिराई और भौंचक होकर खून को और रशीद को देखा।
गैरयकीनी की यह निगाह बस एक या दो पलों के लिए ही रही, जिसकी जगह नफ़रत से भरी हुई किसी चीज़ ने ले ली।

रशीद ने फिर से बेल्ट घुमाई।

इस बार लैला ने खुद को हाथ के अगले हिस्से ढंका और बेल्ट को पकड़ने की कोशिश की। उससे बेल्ट छूट गई और रशीद ने फिर से बेल्ट घुमाई। लैला ने इस बार बेल्ट को पकड़ लिया, लेकिन रशीद ने झटक कर बेल्ट खींच ली और उस पर फिर से वार किया। इसके बाद लैला कमरे में

342 खालिद हुसैनी

भाग रही थी और मरियम चिल्लाते हुए रशीद से फरियादें कर रही थी, जो लैला का पीछा कर रहा था और उसका रास्ता रोक कर अपनी बेल्ट उस पर फटकार रहा था। एक मौके पर लैला ने झुक कर वार बचा लिया और किसी तरह रशीद की कान के ऊपर एक घूंसा जमाया, जिस पर उसने गाली दी और पहले से ज़्यादा बेचैनी से उसका पीछा करने लगा। उसने लैला को पकड़ लिया, उसे दीवार से लगा कर बेल्ट से बार बार उसे मारने लगा। बकल उसे सीने, कंधे, उसकी उठी हुई बांह, उसकी उंगलियों पर चोट कर रहा था और जहां भी पड़ता था, खून निकाल ले रहा था।

मरियम भूल गई कि कितनी बार बेल्ट ने वार किया था, कितनी बार रोते हुए उसने रशीद से फरियादें कीं, कितनी बार वो दांतों और मुक्कों और बेल्ट के बेमेल झड़प के चारों ओर मंडराई होगी, जिसके बाद जाकर उसने रशीद के चेहरे को नोचती उंगलियों को देखा। टूटे हुए नाखुन जबड़ों को खरोंच रहे थे, उसके बाल खींच रहे थे और उसकी ललाट को नोच रहे थे। यह

समझने में उसे कितना वक़्त लगा कि वो उंगलियां उसकी अपनी थीं, और वो इससे हैरान भी थी और खुश भी।

रशीद ने लैला को छोड़ दिया और उसकी तरफ़ मुड़ा। पहले तो उसने मरियम को देखे बिना उसकी तरफ़ निगाह डाली, फिर उसकी आंखें सिकुड़ीं, तसल्ली से मरियम का जायजा लिया। मरियम को उनमें पल भर के लिए उलझन दिखी जो हैरानी में, फिर नापसंदीदगी में, यहां तक कि निराशा में बदल रही थी।

मरियम ने उस पहले मौक़े को याद किया जब उसने ये आंखें देखी थीं। जलील की निगाहों के नीचे, शादी के बुर्के के भीतर, शीशे में कैसे उन दोनों की निगाहें शीशे में फिसलीं और एक दूसरे से मिलीं। रशीद की बेरुखी से भरी आंखें और मरियम की डरी हुई, झुकी हुई और करीब करीब शर्मिंदा आंखें ।

शर्मिंदा ।

मरियम ने अब उन्हीं आंखों में देखा कि वो कितनी बेवकूफ़ हुआ करती थी।

क्या वो एक धोखेबाज़ बीवी थी? उसने खुद से पूछा। एक आत्मसंतुष्ट बीवी? एक लज्जाजनक औरत? मर्यादाहीन? फूहड़? उसने इस आदमी का जानबूझ कर क्या नुक़सान किया था जो वो इस तरह जलता था, लगातार

. हजारों दमकते. आफ़ताब 343

हमले करता था, उसको सताने में उसे आनंद आता था? जब रशीद बीमार था तो क्या उसने उसकी देखरेख नहीं की? उसे और उसके दोस्तों को खिलाया नहीं, एक फर्ज़ की तरह उसकी चीज़ों की साफ़-सफाई नहीं की?

क्या उसने इस मर्द को अपनी जवानी नहीं दे दी थी?

क्या वो न्यायोचित रूप से कभी इस नीचता के लायक थी?

रशीद ने जब बेल्ट ज़मीन पर गिराई तो उसकी धप से आवाज़ आई। इस धप ने बताया कि कुछ काम खाली हाथों से किए जाने लायक होते हैं।

लेकिन वो ज्यों ही उसकी तरफ़ झुका, मरियम ने उसके पीछे लैला को देखा जो ज़मीन पर से कुछ उठा रही थी। उसने लैला का हाथ सिर के ऊपर उठते, मुड़ते और रशीद के चेहरे की बग़ल में घूमते हुए देखा। शीशा बिखरा । पानी पीने के गिलास के टूटे हुए नुकीले टुकड़े ज़मीन पर बरसे। लैला के हाथों पर खून लगा था, रशीद के गाल में बने घाव से खून बह रहा था, उसकी गर्दन से खून निकल रहा था और उसकी कमीज़ पर खून था। वो दांत पीसते हुए और जलती हुई आंखों के साथ पीछे मुड़ा।

रशीद और लैला एक दूसरे को पीटते हुए ज़मीन पर ढह पड़े। आख़िर में रशीद ऊपर था और उसके हाथ लैला के गले पर कस चुके थे।

मरियम ने उस पर नाखुनों से हमला किया। उसने उसके सीने पर मारा। उसने को पूरी ताकत लगा कर धक्का दिया। वो लैला की गर्दन पर कसी उंगलियों को खोलने के लिए जूझती रही। उसने दांत गड़ाए। लेकिन उसने लैला की सांस की नली को कसे रखा और मरियम ने देखा कि उसका इरादा इसे अंजाम तक पहुंचाने का था।

वो उसे गला घोंट कर मार देना चाहता उन दोनों के पास इसमें करने के लिए कोई उपाय नहीं था।

मरियम पीछे हटी कमरे से बाहर निकल गई। वो ऊपर पांवों की धमक के प्रति सचेत थी, वो तालाबंद दरवाज़े पर बजती उन नन्हीं हथेलियों को लेकर सचेत थी। उसने गलियारा पार किया। सदर दरवाज़े से होकर गुजरी। उसने आंगन को पार किया।

औजारों के छप्पर से उसने फावड़ा उठाया।

रशीद ने उसके कमरे में वापस आने पर गौर नहीं किया। वो अब भी लैला के ऊपर, फैली हुई पागल आंखें लिए बैठा था और उसके हाथों ने लैला

344 खालिद हुसैनी

की गर्दन कस रखी थी। लैला का चेहरा अब नीला पड़ रहा था और उसकी आंखें पलट गई थीं। मरियम ने देखा कि अब लैला जूझ नहीं रही थी। वो उसे मार डालने जा रहा है, उसने सोचा। सचमुच उसका यही इरादा है। और मरियम ऐसा नहीं होने दे सकती। ऐसा नहीं होने देगी। शादी के इन सत्ताईस बरसों में रशीद ने मरियम से बहुत कुछ छीना है। वो उसे लैला को छीनते हुए नहीं देखेगी।

मरियम ने अपने पैरों को मज़बूत किया और फावड़े के हत्थे पर अपनी पकड़ को मज़बूत किया। उसने उसे ऊपर उठाया। उसने यह नाम पुकारा। वो चाहती थी कि वो यह देखे।

'रशीद!'

रशीद ने ऊपर देखा ।

मरियम ने हमला किया।

उसने रशीद की कनपटी पर चोट की थी। धक्के ने उसे लैला पर से गिरा दिया।

रशीद ने हथेली से अपना सिर छुआ। उसने अपनी उंगलियों के पोरों पर खून को देखा और फिर मरियम पर निगाह डाली। मरियम को. ऐसा लगा कि उसने रशीद के चेहरे को नर्म पड़ते देखा है। उसने कल्पना की कि उनके बीच कुछ गुज़रा है, कि शायद उसने सचमुच में उसके दिमाग में कुछ समझदारी पर दस्तक दी है। मरियम को लगा कि शायद रशीद ने भी मरियम के चेहरे में कुछ देखा था, कुछ ऐसा जिसकी वजह से वो पीछे हट गया। शायद उसने आत्म-त्याग के निशान देखे हों, सारी कुर्बानियां, उसके साथ इन सारे बरसों में रहने के लिए अपनी जिंदगी पर थोपे गए बोझ को देखा हो, लगातार नीचा दिखाए जाते रहने और हिंसा से भरी जिंदगी, मीनमेख निकालने और नीचता से भरी जिंदगी। क्या यही सम्मान मरियम ने उसकी आंखों में देखा था? पछतावा?

लेकिन तब रशीद का ऊपरी होंठ एक द्वेष से भरी हुई हंसी में मुड़ा और मरियम तब इसे पूरा नहीं कर पाने की गलती को जान गई, जो उसे गैरज़िम्मेदारी भी महसूस हुई। अगर उसने रशीद को अब खड़ा होने दिया तो रशीद को जेब से चावी निकाल कर उस कमरे में जाने में जहां उसने जल्मै को बंद कर रखा था, और बंदूक निकाल कर लाने में कितना वक़्त लगेगा? अगर मरियम को इसका यकीन होता कि रशीद सिर्फ मरियम को गोली मार तक संतोष कर

हज़ारों दमकते आफ़ताब 345

लेगा. कि इसकी संभावना है कि वो लैला को छोड़ देगा तो वो फावड़ा नीचे कर लेती। लेकिन रशीद की आंखों में उसने दोनों की मौत देखी।

और इसलिए मरियम ने फावड़ा ऊपर उठाया, इतना ऊपर उठाया जितना वो उठा सकती थी। उसे इतना ताना कि वो उसकी पीठ से हल्के से छूने लगा। उत्तने उसे घुमा दिया ताकि नुकीला सिरा सामने रहे और ऐसा करते हुए उसने जाना कि पहली बार वो अपनी जिंदगी का रास्ता खुद तय कर रही है।

और इसके साथ मरियम ने फावड़े से चोट की। इस वार उसके पास जितनी ताकत थी, उसने लगा दी थी।
छियालीस

लैला

लैला अपने ऊपर झुके चेहरे को, सारे दांतों और तंबाकू और अपशगुन से भरी आंखों को जानती थी। उसे हल्का-हल्का मरियम का भी भान था, जो उस चेहरे के पीछे मौजूद थी और जिसकी मुट्ठियां बरस रही थीं। उनके ऊपर छत थी और यह छत ही थी जिसकी तरफ़ लैला का ध्यान गया था। उस पर आर-पार फैले सांचे का गहरा निशान था मानो कपड़े पर स्याही हो। प्लास्टर में दरार थी जो एक भावहीन मुस्कान या घुड़की थी। यह इस पर निर्भर करता था कि आप कमरे के किस कोने से उसे देख रहे हैं। लैला हर वक़्त सोचा करती कि वो झाडू में कपड़े का टुकड़ा बांध कर मकड़ियों का जाला साफ़ कर देगी। तीन बार उसने और मरियम ने उन पर सफ़ेदी की थी। अब वो दरार मुस्कान नहीं बल्कि चिढ़ाती हुई कनखी बन गई थी। और वो अब धुंधली पड़ रही थी। छत सिकुड़ रही थी, उठ रही थी, उससे दूर ऊपर किसी धुंधलके की

तरफ़ जा रही थी। यो तब तक ऊपर उठती रही जब तक वो डाक टिकट के आकार की नहीं रह गई, सफ़ेद और चमकदार । उसके चारों ओर की हर चीज़ को बिखरे हुए अंधेरे ने सोख लिया था। अंधेरे में रशीद का चेहरा धूप के टुकड़े जैसा था।

अब अंधा कर देने वाली रोशनी के टुकड़े उसकी आंखों के सामने थे, मानो चांदी के सितारें फूट रहे हों। रोशनी में अजीबोगरीब ज्यामितीय आकृतियां, कीड़े, अंडे की शक्ल जैसी चीजें बन रही थीं, ऊपर-नीचे, अगल-बगल आ-जा

हजारों दमकते आफ़ताब 347

रही थीं, एक दूसरे में मिल जा रही थीं, बिखर रही थीं, मिल कर कोई दूसरी चीज़ बना रही थीं, फिर फीकी पड़ती हुई अंधेरे में गुम हो जा रही थीं।

आवाजें घुटी-घुटी थीं और दूर से आ रही थीं।

उसकी आंखों की पुतलियों के पीछे, उसके बच्चों के चेहरे जगमगा रहे धे और फिर धुंधले पड़ते जा रहे थे। चौकन्नी और बोझिल, जानकार और राज़ों को छुपाने वाली अज़ीज़ा। एक कांपती हुई बेकरारी के साथ अपने अब्बा की और देखते हुए जल्मै ।

लैला ने सोचा कि तब इसी तरह अंत आ जाएगा। कितना दयनीय अंत

लेकिन तभी अंधेरा छंटने लगा। उसे महसूस हुआ कि वो उठा रही है, उसे उठाया जा रहा है। धीरे-धीरे छत वापस लौट आई, फैल गई और अब लैला उसकी दरार को फिर से देख सकती थी। और यह वही पुरानी उदास मुस्कुराहट थी।

उसे हिलाया जा रहा था। क्या तुम ठीक हो? जवाब दो, क्या तुम ठीक हो? मरियम का खरोंचों से भरा और फिक्र से बोझिल चेहरा लैला के ऊपर झुका हुआ था।

लैला ने सांस लेने की कोशिश की। इससे उसका गला जलने लगा। उसने फिर से कोशिश की। इस बार पहले से भी ज़्यादा जलन हुई और सिर्फ़ उसका गला ही नहीं, सीना भी। और फिर वो खांसने लगी और ज़ोर ज़ोर से सांस तेने लगी। वो हांफ रही थी। लेकिन सांसें ले रही थी। उसका अच्छा कान बजा।

उठ कर बैठने पर जो पहली चीज़ उसने देखी यो रशीद था। वो पीठ के बल पड़ा हुआ था। वो बिना पलकें झपकाए घूर रहा था, पर कुछ देख नहीं रहा था। उसके होंठ गोल सिकुड़े हुए थे। उसके मुंह से हल्के गुलाबे रंग का झाग निकल कर उसके गालों पर बह गया था। उसकी पैंट के सामने का हिस्सा गीला था। लेला की निगाह उसकी ललाट पर पड़ी।

फिर उसने फावड़ा देखा।

उसकी कराह निकल गई। 'ओह,' उसने कांपते हुए कहा। वो महज़ इतना

ही कह पाई, 'ओह मरियम ।'

348 खालिद हुसैनी

कराहती और अपने हाथों को एक दूसरे पर मारते हुए लैला तेज़-तेज चल रही थी, जबकि मरियम रशीद के करीव अपने हाथों को अपनी गोद में रखे हुए शांत और विना हिले-डुले बैठी रही। देर तक मरियम ने कुछ भी नहीं कहा ।

लैला का मुंह सूख गया था और वो हक़ला कर वोल रही थी। वो बुरी तरह कांप रही थी। उसने मन से चाहा कि वो रशीद की तरफ़, उसके खुले हुए मुंह की तरफ़, उसकी खुली हुई आंखों, कॉलरवोन के गड्ढे में जमे खून की तरफ़ नहीं देखे ।

बाहर रोशनी मंद पड़ रही थी। परछाइयां गहरा रही थीं। मरियम का चेहरा इस रोशनी में पतला और मुर्झाया सा दिख रहा था, लेकिन वो उत्तेजित या डरी हुई नहीं दिख रही थी। वो बस फिक्रमंद थी, सोच रही थी, अपने में इस कदर डूबी हुई कि जब एक मक्खी उसकी ठोढ़ी पर बैठी तो उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। वो वस वहां बैठी रही। उसका निचला होंठ बाहर निकला हुआ था और वो ऐसा तब करती थी जब वो ख़यालों में डूवी होती थी।

आख़िर में मरियम ने कहा, 'बैठ जाओ, लैला जो।'

लैला उसकी वात मानते हुए बैठ गई।

'हमें इसे हटाना होगा। जल्मै इसे देख नहीं सकता।'

रशीद को विछाने के चादर में लपेटने से पहले मरियम ने उसकी जेब से सोने के कमरे की चाबी निकाल ली थी। लैला ने घुटनों के नीचे उसके पैर पकड़े और मरियम ने उसके हाथों को पकड़ा। उन्होंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन वो वहुत भारी था उन्हें उसे घसीटना पड़ा। जब वो सदर दरवाज़े से गुज़र रही थीं और आंगन में जा रही थीं, तो रशीद का पांव चौखट में फंस गया और उसकी टांग बगल से मुड़ गई। वो पीछे हटीं और

उन्होंने फिर से कोशिश की। ऊपर कुछ धमक की आवाज़ आई और लैला के पांवों ने जवाब दे दिया। रशीद उससे छूट गया। कंधे झुकाए वो ज़मीन पर बैठ गई। वो सुबकती हुई कांप रही थी और मरियम को अपने कूल्हों पर हाथ रखे हुए उसके पास खड़े होकर कहना पड़ा कि उसे हिम्मत जुटानी होगी। कि जो हो चुका वो हो चुका ।

कुछ देर बाद लैला उठी और उसने अपना चेहरा पोंछा। और बिना किसी दूसरी घटना के वो रशीद को आंगन तक ले गईं। वो उसको औज़ारों वाले

हजारों दमकते आफ़ताब 349

छप्पर में ले गईं। उन्होंने उसे काम करने की एक बेंच पर छोड़ा, जिस पर उसकी आरी, कुछ कीलें, एक छेनी, एक हथौड़ी और बेलन जैसा लकड़ी का एक टुकड़ा था, जिससे रशीद जल्मै के लिए कोई चीज़ बनाने वाला था, लेकिन कभी नहीं बना पाया।

फिर वो वापस लौटीं। मरियम ने अपने हाथ धोए, उन्हें बालों में फिराया, गहरी सांस ली और छोड़ी। 'अब तुम अपने' जख्मों की देखभाल करने दो। तुम्हारे हर जगह जख्म हैं, लैला जो।'

मरियम ने कहा कि उसे चीज़ों के बारे में सोचने के लिए उस रात की ज़रूरत है। ताकि वो अपने ख्यालों को जुटा सके और कोई मंसूबा बना सके।

'एक उपाय है,' उसने कहा। 'और बस मुझे उसे खोजना है।'

'हमें जाना पड़ेगा! हम यहां नहीं रह सके,' लैला ने एक टूटी हुई, सूखी- सी आवाज़ में कहा। अचानक उसने उस आवाज़ के बारे में सोचा जो रशीद के

सिर पर लगते फावड़े ने पैदा की होगी और इस पर लैला का शरीर आगे को झुक गया। उसके सीने में जलन होने लगी!

मरियम ने लैला के वापस ठीक होने तक इंतज़ार किया। इसके बाद उसने लैला को लिटा दिया और उसके सिर को अपनी गोद में रखते हुए मरियम ने कहा कि फिक्र करने की बात नहीं है, कि सब ठीक होगा। उसने कहा कि वो चली जाएंगी वो लैला, बच्चे और तारिक़ भी। वो इस घर को, इस निर्मम शहर को छोड़ देंगे। मरियम ने उसके बालों में उंगलियां फिराते हुए कहा कि वो इस उदास देश को ही छोड़ देंगे और दूर कहीं ऐसी महफूज जगह चले जाएंगे जहां कोई उन्हें ढूंढ़ नहीं पाएगा, जहां वो अपने अतीत को भुला कर पनाह खोज सकेंगे ।

'ऐसी जगह जहां पेड़ हों,' उसने कहा। 'हां। खूब सारे पेड़।'

मरियम ने कहा कि वो किसी ऐसे शहर के सिरे पर एक छोटे से घर में रहेंगे, जिसका नाम भी उन्होंने नहीं सुना था, या फिर वो दूर-दराज़ के किसी गांव में जहां सड़कें पतली और कच्ची हों लेकिन उनके दोनों तरफ़ सारी किस्मों के पेड़ों और झाड़ियों की कतारें होंगी। शायद वहां कोई राह होगी, ऐसी राह होगी जो घास के मैदानों तक ले जाएगी, जहां बच्चे खेल सकेंगे, या बजरी की सड़क होगी जो उन्हें एक साफ़ नीली झील तक ले जाएगी, जहां ट्राउट मछलियां तैर रही होंगी और सतह से नरकट झांक रहे होंगे। वो भेड़ें और मुर्गियां

350 खालिद हुसैनी

पालेंगी और मिल कर रोटियां बनाएंगी और बच्चों को पढ़ना सिखाएंगी। वो अपने लिए नई जिंदगियां बनाएंगी सुकून से भरी अकेली जिंदगियां और उन्होंने अब तक जो कुछ भी सहा है, उसका बोझ उन पर से उतर जाएगा और बो

उन सारी खुशियों और सादगी भरी समृद्धि के लायक होंगी, जिन्हें वो अपने लिए तलाशेंगी।

लैला हौसला बढ़ाती हुई बुदबुदाती रही। वो देख रही थी कि यह मुश्किलों से भरी जिंदगी होगी, लेकिन यह खुशियां देने वाली होगी, उन मुश्किलों पर वो नाज़ कर सकेंगी, उन्हें अपना सकेंगी, उनका मोल कर सकेंगी, मानो वो खानदान से विरासत में मिली चीज़ हो। मरियम की नर्म, मां जैसी आवाज़ जारी रही लैला को राहत से भरती रही। एक उपाय है। उसने कहा था और सवेरे मरियम बताने वाली थी कि क्या करना है और वो इसे करेंगी और हो सकता है कि कल इस वक़्त वो इस नई जिंदगी की राह पर होंगी। एक ऐसी ज़िंदगी जो संभावनाओं और खुशियों और खुशनुमा परेशानियों से भरपूर होगी। लैला इसके लिए शुक्रगुज़ार थी कि मरियम प्रभारी थी, जो सुलझी हुई और गंभीर.. थी, उन दोनों के लिए सोच पाने में सक्षम थी। उसका अपना दिमाग तो घबराया हुआ, अव्यवस्थित-सा था।

मरियम उठी। 'अब तुम्हें अपने बेटे को देखना चाहिए।' उसके चेहरे पर व्यथा का ऐसा भाव था, जैसा लैला ने कभी किसी इंसानी चेहरे पर नहीं देखा था।

लैला को वो अंधेरे में रशीद के गद्दे की तरफ़ सिमट कर लेटा हुआ मिला। वो उसकी बगल में चादर के नीचे सरक आई और कंबल उसके ऊपर खींच लिया।

'क्या तुम सो रहे हो?'

बिना उसकी तरफ़ मुंह किए उसने कहा, 'अभी नहीं सो सकता। अभी बाबा जान ने मेरे साथ बबलू दुआएं नहीं पढ़ी हैं।'

'आज की रात शायद मैं ये दुआएं तुम्हारे साथ पढ़ सकती हूं।'

'तुम उस तरह नहीं पढ़ सकतीं, जिस तरह वो पढ़ सकते हैं।'

उसने उसके नन्हें कंधे भींच लिए। उसकी गर्दन के पीछे चूम लिया।

'मैं कोशिश कर सकती हूं।'

'बाबा जान कहां हैं?'

हजारों दमकते आफ़ताब 351

था। 'बाबा जान चले गए,' लैला ने कहा। उसका गला फिर से रुंध रहा

और पहली बार एक बड़ा, भयानक झूठ बोला गया। और कितनी बार इस झूठ को बोलना होगा? लैला ने दुखी होते हुए सोचा। और कितनी बार जल्मै को धोखा दिया जाएगा? उसने खुशी से मगन जल्मै की कल्पना की, जब रशीद के घर लौटने पर वो उसके स्वागत में दौड़ पड़ता था और रशीद उसे कोहनियों से उठा लेता और गोल गोल घुमाने लगता, जब तक कि जल्मै के सीधे तने हुए पांव हवा में उड़ने नहीं लगते। इसके बाद दोनों खिलखिलाते जब जल्मै एक नशे में झूमते आदमी की तरह लड़खड़ाता। उसने उनके उत्पाती खेलों, उपद्रव से भरी हंसी और खुफिया निगाहों के बारे में सोचा।

अपने बेटे के लिए शर्म और दुख का एक बादल लैला पर टूट पड़ा।

'वो कहां चले गए?'

'मुझे नहीं पता, मेरे प्यारे।'

वो कब लौटने वाले थे? क्या बाबा जान जब लौटेंगे तो उसके लिए तोहफा लाएंगे?

लैला ने जल्मै के साथ दुआएं मांगी। इक्कीस बार बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम-सात उंगलियों के हरेक जोड़ों पर एक एक बार। उसने उसे अपने चेहरे के सामने हथेलियों को जोड़ा और उनमें दम फूंकते देखा, इसके बाद जल्मै ने अपने दोनों हाथों को उलट कर ललाट पर रखा और भगाने के संकेत किए और बुदबुदाया, बबलू, चले जाओ, जल्मै के लिए मत आना, उसका तुम्हारे साथ कोई लेना-देना नहीं है। बबलू, चले जाओ। इसके बाद ख़त्म करते हुए उन्होंने तीन बार अल्लाहो अकबर कहा। और बाद में, उस रात, बहुत बाद में लैला एक दबी हुई आवाज़ को सुन कर हैरान रह गई क्या बाबा जान मेरी बजह से चले गए? आपके और नीचे आए उस आदमी के बारे में मैंने उनसे जो कहा था उसकी वजह से चले गए?

उसे तसल्ली दिलाने और यह कहने के इरादे से वो उसके ऊपर झुकी कि इसमें तुमने कुछ नहीं किया है, जल्मै। नहीं। तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। लेकिन वो सो रहा ता, उसका नन्हा सीना उठ रहा था, गिर रहा था।

लैला जब बिस्तर पर गई तो उसका दिमाग दबा हुआ, असमंजस में था और तर्कसंगत तरीके से सोच पाने के काबिल नहीं था। लेकिन जब वो नमाज

352 खालिद हुसैनी

के लिए पुकारते मुअज़्ज़िन की आवाज़ से उठी तो ज़्यादातर उदासी जा चुकी थी।

वो उठ बैठी और कुछ देर जल्मै को अपनी मुट्ठी ठोढ़ी के नीचे रखे सोते हुए देखती रही। लैला ने मरियम की कल्पना की कि जब वो सो रहे थे तो वो बीच रात में उनके कमरे में चुपचाप आई थी, और उन्हें देखते हुए अपने मन में मंसूबे बना रही थी।

लैला बिस्तर से उठी। खड़े होने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। हर कहीं उसे दर्द हो रहा था। उसकी गर्दन, उसके कंधे, उसकी पीठ, उसकी वांहें, उसकी जांचें, हर जगह रशीद की बेल्ट की बकल के दिए जख्म थे। दर्द में सिकुड़ते हुए वो सोने के कमरे से बाहर निकल गई। मरियम के कमरे में रोशनी स्याह नहीं थी, बल्कि ज़्यादा गहरा अंधेरा था। यह ऐसी रोशनी थी, जिसे लैला हमेशा बोलते हुए मुर्गों और घास की पत्तियों से लुढ़कर गिरती ओस से जोड़ कर देखती थी। मरियम एक कोने में खिड़की की तरफ़ मुंह किए जानेमाज़ पर बैठी हुई थी। धीरे-धीरे लैला उसके सामने ज़मीन पर बैठी।

'तुम्हें सवेरे जाकर अज़ीज़ा से मिलना चाहिए,' मरियम ने कहा।

'मैं जानती हूं कि आप क्या कहना चाहती हैं।'

'चलना नहीं। बस ले लेना, तुम लोगों में मिल जाओगी। टैक्सियां अलग हैं। पक्के तौर पर तुम उनमें अकेली सफ़र करती दिख जाओगी।'

'पिछली रात आपने जो वादा किया था...'

लैला बात पूरी नहीं कर सकी। पेड़, झील, बिना नाम वाला गांव। उसने देखा कि वह एक धोखा था। मन को सुकून पहुंचाने के लिए एक प्यारा सा

झूठ। जिस तरह एक परेशान बच्चे को मनाने के लिए तरह-तरह की आवाजें निकाली जाती हैं।

'मैंने वो वादा किया था,' मरियम ने कहा। 'मेरा मतलब था कि वो सब तुम्हारे लिए होगा, लैला जो।'

'मैं आपके बगैर उसमें से कोई भी चीज़ नहीं चाहती,' लैला फटी हुई आवाज़ में बोली।

मरियम फीके ढंग से मुस्कुराई ।

'आपने जैसा कहा था, मैं वैसा ही चाहती हूं, मरियम। हम सब साथ जाएंगे, आप, मैं और बच्चे। पाकिस्तान में तारिक़ के पास जगह है। हम वहां कुछ समय तक छुप सकते हैं, चीज़ों के शांत होने का इंतज़ार कर सकते हैं-'

हजारों दमकते आफ़ताब 353

'यह मुमकिन नहीं है, मरियम ने गंभीरता के साथ कहा मानो एक मा अपने अच्छे इरादों वाली, लेकिन भटकी हुई औलाद को समझा रही हो।

'हम एक दूसरे का ख्याल रखेंगे,' लैला ने कहा। उसके शब्द गले में फंस रहे थे. उसकी आंखें आंसुओं से गीली हो गई थीं। 'जैसा आपने कहा घा। नहीं। बदले में मैं आपकी देखभाल करूंगी।'

'ओह लैला जो।'

लैला हक़लाते हुए बड़बड़ाती रही। उसने मनुहार किया। वादे किए। उसने कहा कि वो सारी साफ़-सफाई करेगी और सारा खाना भी बनाएगी। 'आपको कुछ भी नहीं करना होगा। कभी भी नहीं। आप आराम करेंगी, सोएंगी, बागीचा लगाएंगी। जो भी आप चाहें, वो आप कहेंगी और मैं लाकर दूंगी। ऐसा मत कीजिए मरियम। मुझे मत छोड़िए। अज़ीज़ा का दिल मत तोड़िए ।'

'वो रोटियां चुराने के लिए हाथ काट लेते हैं,' मरियम ने कहा। 'तुम्हें क्या लगता है कि जब उन्हें एक मरे हुए शौहर और दो लापता बीवियों का पता लगेगा तो वो क्या करेंगे?'

पाएगा।' 'किसी को पता नहीं लगेगा,' लैला ने सांस ली। 'कोई हमें नहीं तलाश

'वो तलाश लेंगे। देर-सवेर। वो खून के भेदिए कुत्ते हैं।' मरियम की आवाज़ नीची और सतर्क थी। इससे लैला के वादे सनक से भरे हुए, गढ़े हुए और बेवकूफ़ाना लग रहे थे।

'मरियम, मेहरबानी-'

'जब वो तलाश लेंगे तो वो तुम्हें भी मेरे जितना ही गुनाहगार ठहराएंगे।

तारिक़ को भी। मैं तुम दोनों को फरार लोगों की तरह भाग-भाग कर जीने नहीं दूंगी। अगर तुम दोनों पकड़े गए तो तुम्हारे बच्चों का क्या होगा?'

लैला की आंखें भर आई। वो चुभ रही थीं।

'कौन उनकी देखभाल करेगा? तालिबान? एक मां की तरह सोचो लैला जा। एक मां की तरह सोचो। मैं सोच रही हूं।'

'मैं नहीं सोच सकती ।'

'तुम्हें सोचना होगा।'

'यह नाइंसाफ़ी है,' लैला फटी हुई आवाज़ में बोली।

'लेकिन यह है। यहां आओ। यहां आकर लेटो।'

354 खालिद हुसैनी

लैला घिसटती हुई बढ़ी और फिर से अपना सिर मरियम की गोद में रख दिया। उसे वो सारी दोपहरें याद आईं जो उन्होंने साथ गुज़ारी थीं, एक दूसरे के बाल गूंथे थे, मरियम उसके बेतरतीब ख्यालों और उसकी मामूली कहानियों को एक कृतज्ञता के साथ सुनती थी। उसके चेहरे पर ऐसे इंसान का सा भाव रहता था जिसे एक अनोखे और इच्छित सौभाग्य से नवाज़ दिया गया हो।

'यह इंसाफ़ है,' मरियम ने कहा। 'मैंने हम दोनों के शौहर का कत्ल किया है। मैंने तुम्हारे बेटे को उसके बाप से महरूम किया है। यह सही नहीं होगा कि मैं भाग जाऊं। मैं नहीं भाग सकती। अगर वो हमें कभी नहीं पकड़ पाएं तब भी, मैं कभी...' उसके होंठ कांप उठे। 'मैं तुम्हारे बेटे के दुख से नहीं भाग सकती। कैसे मैं उसे देखूंगी? कैसे मैं उसे देखने के लिए खुद को तैयार कर पाऊंगी, लैला जो?'

मरियम ने लैला के बालों की एक लट को लपेटा और एक ज़िद्दी लट को सुलझाया।

'मेरे लिए यहीं सब कुछ ख़त्म हो गया। अब और कुछ मैं नहीं चाहती। जो कुछ भी मैंने कभी चाहा था, एक नन्हीं बच्ची की तरह तुमने उसे मुझे दिया है। तुमने और तुम्हारे बच्चों ने मुझे इतनी खुशियां दी हैं। यह ठीक है, लैला जो। यही ठीक हैं। इतनी उदास मत होओ।'

मरियम ने जो कुछ भी कहा था, लैला उसमें किसी भी चीज़ के लिए तर्कसंगत जवाब नहीं खोज पाई। लेकिन वो इधर-उधर की बातें करती रही, रोपे जाने का इंतज़ार करते फलदार पेड़ों और पाले जाने का इंतज़ार करती मुर्गियों के बारे में बेमेल और बचकानी बातें करती रही। वो बेनाम शहरों में छोटे घरों के बारे में और ट्राउट से भरी झीलों तक सफ़र के बारे में बातें करती रही। और आख़िर में जब शब्द सूख गए लेकिन आंसू नहीं, तब लैला बस यही कर सकी कि उसने हार मान ली और किसी बड़े के अकाट्य तर्क के आगे हार चुके बच्चे की तरह रोने लगी। वो इतना ही कर सकी कि उसने खुद को ऊपर उठाया और मरियम की गोद की खुशनुमा गर्माहट में अपना चेहरा आख़िरी बार के लिए धंसा लिया ।

हजारों दमकते आफ़ताब 355

उस सुबह, बाद में मरियम ने जल्मै के दोपहर के खाने के लिए रोटियां और सूखे चिलगोज़े पैक किए। अज़ीज़ा के लिए भी उसने कुछ चिलगोज़े और जानवरों के आकार वाले बिस्कुट पैक किए। उसने यह सब काग़ज़ के एक थैले में रखा और लैला को दे दिया।

'अज़ीज़ा को मेरी तरफ़ से चूमना,' उसने कहा। 'उसे बताना कि वो मेरी आंखों का नूर है और मेरे दिल का सुल्तान है। क्या तुम यह मेरे लिए. करोगी?'

लैला ने सिर हिलाया। उसके होंठ भिंचे हुए थे। 'बस पकड़ लेना, जैसा मैंने कहा था और अपना सिर झुकाए हुए रखना ।' 'मैं आपको कब देखूंगी, मरियम? अपनी गवाही के पहले मैं आपसे मिलना चाहती हूं। मैं उन्हें बताऊंगी कि यह कैसे हुआ था। मैं बताऊंगी कि इसमें आपका कसूर नहीं था। कि आपको यह करना पड़ा। वो समझ जाएंगे, नहीं क्या मरियम? वो समझ जाएंगे।'

मरियम ने उसे नर्मी से देखा।

जल्मै के आगे वो पंजों के बल झुकी। उसने एक लाल टी-शर्ट और चीथड़े हो आई खाकी पैंट पहन रखी थी। उसके पांवो में रशीद द्वारा मंडाई से लाए गए सेकेंड हैंड काउब्वाय बूटों की जोड़ी थी। उसने अपनी नई बास्केटबॉल दोनों हाथों से पकड़ रखी थी। मरियम ने उसके गालों को चूम लिया।

'तुम अब एक अच्छे, मज़बूत बेटे बन जाना,' उसने कहा। 'अपनी अम्मी से अच्छे से पेश आना।' उसने अपनी हथेलियों में उसका चेहरा थाम लिया। वो पीछे हटा, लेकिन मरियम ने पकड़े रखा। 'मैं बहुत शर्मिंदा हूं जल्मै जो । यकीन मानो कि तुम्हारे सारे दर्द और उदासी के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूं।'

सड़क पर साथ जाते हुए लैला ने जल्मै का हाथ पकड़ लिया। नुक्कड़ पर मुड़ने से ठीक पहले लैला पीछे मुड़ी और उसने मरियम को दरवाज़े पर खड़े देखा। मरियम ने सिर पर एक सफ़ेद स्कार्फ ओढ़ रखी थी, उसने

सामने से बटनबंद एक गहरा नीला स्वेटर और सफ़ेद सूती पजामा पहना था।
स्याह वालों की एक लट उसकी ललाट पर खुल कर लटक आई थी। धूप की किरणें उसके चेहरे और कंधों पर तिरछे पड़ रही थीं। मरियम ने स्नेह से हाथ हिलाया।

वो नुक्कड़ पर मुड़ गए और लैला ने मरियम को फिर कभी नहीं देखा।

सैंतालीस

मरियम

यह इतने बरसों के बाद फिर से एक कोल्बा में वापसी जैसा लगा था।

वलायत महिला जेल चिकन स्ट्रीट के करीब शारे-नौ में एक चौकोर नीरस इमारत थी। यह एक बड़े परिसर के बीच में स्थित था, जिसमें मर्द कैदी रखे जाते थे। एक तालाबंद दरवाज़ा मरियम और दूसरी औरतों को चारों तरफ़ के मर्द कैदियों से अलग करता था। मरियम ने पांच कोठरियां गिनीं। वो बिना किसी साज-सामान वाले कमरे थे, जिनकी दीवारें गंदी थीं और रंग छोड़ रही थी। उनमें छोटी खिड़कियां लगी थीं, जिनसे आंगन दिखता था। खिड़कियों पर सलाखें लगी थीं, हालांकि दरवाज़ों में ताला नहीं था और औरतें अपनी मर्जी से आंगन में जाने को आज़ाद थीं। खिड़कियों पर शीशे नहीं थे। पर्दे भी नहीं थे, जिसका मतलब यह था कि आंगन में गश्त कर रहे तालिब गार्ड कोठरियों के भीतर भी नज़र रखते थे। कुछ औरतों ने शिकायत की कि गार्ड खिड़की के बाहर सिगरेट पीते थे और अपनी लाल आंखों और वहशी मुस्कान के साथ भीतर झांकते। कि वो उनके बारे में आपस में फूहड़ मज़ाक करतें। इस वजह से ज़्यादातर औरतें सारा दिन बुर्का पहने रहतीं और केवल सूरज ढल जाने के बाद ही उन्हें

उठातीं, जब मुख्य दरवाज़े में ताला लगा दिया जाता और गार्ड अपनी चौकियों पर चले जाते।

मरियम पांच औरतों और चार बच्चों के साथ अंधेरे में रात बिताती । उन रातों में जब बिजली रहती वो नगमा को छत तक ऊपर उठाते, जो एक

हज़ारों दमकते आफ़ताब 357

छोटी सी, सपाट सीने और खूब घुंघराले काले वालों वाली लड़की थी। वहां एक तार था, जिसकी बाहरी परत निकल गई थी। नगमा उस नंगे तार को बल्व के तले में लपेटती ताकि वो जल सके।

शौचालय अलमारियों की तरह पतले थे। सीमेंट की फर्श चटख गई थी। ज़मीन में एक छोटा, चौकोर छेद था जिसके तले में पाखाने का ढेर था। छेद से मक्खियां आती-जाती रहतीं।

जेल के बीच में एक खुला, चौकोर आंगन था और उसके बीच में एक कुआं था। कुएं में कोई निकासी नहीं थी, जिसका मतलब था कि आंगन में पानी जमा हो जाता और पानी का स्वाद सड़ा हुआ लगने लगता। हाथ से धुले मोज़ों और डायपरों से भरे रहनेवाले कपड़े सुखाने के तार पूरे आंगन में एक दूसरे को काटते हुए फैले हुए थे। जहां कैदी अपने मुलाकातियों से मिलते थे, वहीं उनके लिए परिवारवालों द्वारा लाए गए चावल उबाले जाते थे- जेल कैदियों को खाना नहीं देता था। आंगन ही बच्चों के खेलने की जगह थी-मरियम को पता लगा कि अनेक बच्चे वलायत में ही पैदा हुए थे और उन्होंने कभी इन दीवारों से बाहर की दुनिया नहीं देखी थी। मरियम उन्हें एक दूसरे के पीछे भागते, जीवंतता से भरे खेल खेलते देखती, जिन्हें बदबू देते पाखाने और वलायत में और उनकी अपनी देहों में रच-

बस गई पेशाब की गंध की परवाह नहीं रहती। वो तालिब गार्डों की तरफ़ भी ध्यान नहीं देते, जब तक कि कोई उन्हें थप्पड़ नहीं लगा देता।

मरियम का कोई मुलाकाती नहीं था। उसने तालिब अफसरान से पहली और आखिरी चीज़ यही मांगी थी। उसे कोई मुलाकाती नहीं चाहिए।

मरियम की कोठरी की औरतों में से कोई भी हिंसक जुर्म के लिए बंद नहीं थी। वो सभी 'घर से भागने' के एक ही जुर्म में बंद थीं। नतीजे में मरियम ने उनके बीच खासी बदनामी हासिल कर ली थी और एक सेलिब्रिटी बन गई थी। औरतें उसे आदर, लगभग मुग्धभाव, से देखतीं। वो उसे अपने कंबल पेश करतीं। उनमें उसके साथ अपना खाना बांटने की होड़ रहती।

सबसे फुर्तीली नगमा थी, जो हमेशा उसकी कोहनियां पकड़े रहती और मरियम जहां जाती उसके पीछे-पीछे वो भी जाती। नगमा इस किस्म की इंसान

358 खालिद हुसैनी

थी जिसे बदकिस्मती की ख़बरें फैलाने में मज़ा आता था, भले ही वो ख़बरें दूसरों की हों या उसकी अपनी। उसने बताया कि उसके अब्बा ने उसके लिए उससे तीस साल बड़े एक दर्जी को जबान दे दी थी।

'वो गू की तरह महक़ता है और उंगलियों से भी कम उसके दांत थे,' नगमा दर्जी के बारे में बताती ।

उसने एक नौजवान के साथ गार्देज़ भाग जाने की कोशिश की, जिससे वो प्यार करती थी। वो एक मुकामी मुल्ला का बेटा था। वो बस काबुल से बाहर तक जा सके। जब वो पकड़े गए और वापस भेज दिए गए तो मुल्ला के बेटे को कोड़े लगाए गए, बाद उसने माफ़ी मांग ली और कहा कि नग्मा ने

अपनी औरताना अदाओं से उसे लुभाया था। उसने बताया कि नगमा ने उस पर मंत्र चलाया था। लड़के ने वादा किया कि वो फिर से कुरान के अध्ययन में मन लगाएगा। मुल्ला का बेटा छोड़ दिया गया। नगमा को पांच सालों की सज़ा हुई।

उसने बताया कि यहां जेल में रहना अच्छा है। उसके अब्बा ने कसम खाई थी कि जिस दिन वो जेल से रिहा होगी, वो छुरी से उसका गला काट देंगे।

नगमा को सुनते हुए मरियम ने उस सुदूर सुबह में सर्द सितारों की चमक और सफ़ेद कोह पहाड़ियों के ऊपर सरकते पतले, गुलाबी बादलों को याद किया, जब नाना ने उससे कहा था, उत्तर की तरफ़ दिखाती हुई कंपास की सुई की तरह एक मर्द की उंगली इल्ज़ाम लगाने के लिए हमेशा औरत को ही खोजती है। हमेशा। इसे याद रखना मरियम ।

मरियम की सुनवाई पिछले हफ़्ते शुरू थी। उसका कोई कानूनी सलाहकार नहीं था, न आम सुनवाई हुई, न सबूतों को परखा गया और न अपील की गुंजाईश थी। पूरी चीज़ पंद्रह से भी कम मिनटों तक चली। बीच वाला जज एक नाजुक सा दिख रहा तालिब था और वही उनका रहनुमा था। वह गैरमामूली तरह से पतला था, जिसकी पीली झूलती हुई चमड़ी और घुंघराली लाल दाढ़ी थी। उसने चश्मा पहन रखा था जिसमें उसकी आंखें बड़ी-बड़ी दिख रही थीं और यह उजागर कर रही थीं कि उसकी आंखों का सफ़ेद हिस्सा कितना पीला है। उसकी गर्दन इतनी पतली थी कि ऐसा नहीं लग रहा था कि उसके सिर पर बंधी पेचदार पगड़ी का बोझ सह पाएगी।

हजारों दमकते आफ़ताब 359

से पूछा। 'आप इसे कबूल करती हैं हमशीरा?' उसने थकी हुई आवाज़ में फिर

'हां, मैं कबूल करती हूं,' मरियम ने कहा।

उस आदमी ने सिर हिलाया। या शायद नहीं हिलाया था। कहना मुश्किल था। उसका सिर और हाथ लगातार कांप रहे थे, जो मरियम को मुल्ला फैजुल्ला के हिलने की याद दिलाते थे। जब जज ने चाय पी तो वो अपनी कप नहीं उठा पाया। उसने अपनी बाईं तरफ़ खड़े चौड़े कंधों वाले एक आदमी को इशारा किया, जो आदर से कप को उसके होठों तक ले गया। इसके बाद तालिब ने नर्मी से अपनी आंखें बंद कर लीं, कुछ बुदबुदाया और शुक्राने का एक सुंदर सा भाव बनाया।

मरियम को इस आदमी में एक सुकूनदेह गुण कां पता लगा। जब वो बोलता तो उसमें झूठ और दया की झलक मिलती। उसकी मुस्कान धीरज से भरी हुई थी। वो मरियम को फटकार भरी नज़रों से नहीं देखता। वो उसे नफ़रत या तोहमत से नहीं बल्कि हल्की सी माफ़ी भरे अंदाज़ में संबोधित करता ।

'आप पूरी तरह समझती हैं कि आप क्या कह रही हैं?' जज की दाहिनी तरफ़ वाले हड़ीले चेहरे वाले, न कि चाय देने वाले, तालिब ने उससे पूछा। ये उन तीनों में सबसे नौजवान था। वो जल्दी-जल्दी बोलता था और उसमें ज़ोरदार और गुरूर से भरा हुआ आत्मविश्वास था। वो इससे चिढ़ गया था कि मरियम पश्तो में नहीं बोल सकती थी। वो मरियम से एक झगड़ालु नौजवान की तरह भिड़ गया, जिसे अपना अख्तियार पसंद था, जो हर जगह जुर्म ही जुर्म देखता रहता था और सोचता था कि फैसले सुनाना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

'मैं समझती हूं,' मरियम ने कहा।

'मुझे हैरानी है,' नौजवान तालिब ने कहा। 'खुदा ने हमें अलग-अलग: बनाया है, आपको औरत और हमें मर्द। हमारे दिमाग अलग हैं। आप उस तरह सोच सकने के काबिल नहीं हैं, जिस तरह हम सोच सकते हैं। पश्चिमी डॉक्टरों और उनके साइंस ने भी इसे साबित किया है। यही वजह है कि हमें मर्द गवाह सिर्फ एक चाहिए होता है, जबकि औरतें दो।'

'मैंने जो किया उसे मैं कबूल करती हूं, बिरादर,' मरियम ने कहा। 'लेकिन अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता तो वो उसे मार डालता। वो उसका गला घोंट रहा था।'

360 खालिद हुसैनी

'ऐसा आप कह रही हैं। लेकिन तब औरतें तो हर वक़्त हर तरह की कसमें खाती ही रहती हैं।'

'मैं सच कह रही हूं।'

'क्या आपका कोई गवाह है? आपकी अंबाग के अलावा कोई??

'कोई नहीं,' मरियम ने कहा ।

'तब ठीक है।' उसने अपने हाथ पटके और मक्कारी से हिनहिनाया। इसके बाद बीमार दिख रहा तालिब बोला ।

'पेशावर में मेरा एक डॉक्टर है,' उसने कहा। 'कमाल का एक नौजवान पाकिस्तानी दोस्त। मैं उससे एक महीना पहले मिला था और फिर पिछले हफ्ते भी मिला। मैंने कहा, मुझे सच्चाई बताओ दोस्त और उसने मुझसे

कहा कि तीन महीने, मुल्ला साहिब या ज़्यादा से ज़्यादा छह महीने बेशक सब खुदा की मर्जी है।'

उसने अपनी बाईं तरफ़ के चौड़े कंधे वाले की तरफ़ सिर हिलाया और उसके द्वारा पेश की गई चाय की एक और घूंट भरी। उसने अपने कांपते हाथ को पलट कर मुंह पोंछा। 'इस जीवन को छोड़ना मुझे नहीं डराता, कि मेरा अकेला बेटा पांच साल पहले गुज़र चुका है। इस ज़िंदगी ने मुझको इतने गम दिए हैं कि हम अब बर्दाश्त नहीं कर सकते। नहीं, मुझे यकीन है कि जब वक़्त आएगा तो मैं खुशी से विदा हो जाऊंगा।

'जो बात मुझे डराती है, हमशीरा, वो वह दिन है जब खुदा अपने सामने बुलाएगा और पूष्ठेगा, तुमने वैसा क्यों नहीं किया जैसा मैंने कहा था, मुल्ला? क्यों तुमने मेरे कानूनों का पालन नहीं किया? तब मैं उसको क्या जवाब दूंगा, हमशीरा? उसके हुक्मों को न मानने के लिए मेरे पास अपने बचाव में क्या होगा? मैं बस यही कर सकता हूं, हम सब यही कर सकते हैं, कि हमें जो वक़्त दिया गया है, उसमें हम उन कानूनों पर चलें, जो उस खुदा ने हमारे लिए बनाए हैं। जितना साफ़ मैं अपने अंत को देखता हूं, हमशीरा, जितना मैं अपने हिसाब के दिन के करीब होता हूं, उतनी ही मज़बूती से मैं खुदा की बातों पर चलता हूं। चाहे यह जितना भी दर्दनाक साबित हो।'

उसने अपनी मसनद हटाई और उसके चेहरे पर दर्द का भाव आया।

'जो आप कहती हैं उस पर मुझे यकीन है कि आपके शौहर झगड़ालू मिजाज़ के थे,' उसने फिर से बोलना शुरू किया। अपनी चश्मेवाली आंखों से

हजारों दमकते आफ़ताब 361

उसने मरियम को जड़ कर दिया था। उसकी निगाह सख़्त भी थी और तसल्ली देने वाली भी। 'लेकिन मैं आपकी कार्रवाई की क्रूरता से बेचैन हूं, हमशीरा । मुझे उससे परेशानी है, जो आपने कर दिया है। मैं इससे परेशान हूं कि जब आप ये कर रही थीं ऊपर उनका नन्हा बच्चा उनके लिए रो रहा था।

'मैं ऊबा हुआ हूं और मर रहा हूं, और मैं मेहरबान होना चाहता हूं। मैं आपको माफ़ करना चाहता हूं। लेकिन जब खुदा मुझे बुलाएगा और कहेगा, लेकिन माफ़ी देना तुम्हारा काम नहीं था मुल्ला, तो मैं क्या कहूंगा?'

उसके साथियों ने सिर हिलाया और प्रशंसा से भरी निगाहों से देखने लगे । 'कोई बात है जो मुझसे कह रही है कि आप बुरी औरत नहीं हैं, हमशीरा । लेकिन आपने एक बुरा काम किया है। और आपने जो किया है, उसके लिए आपको कीमत चुकानी ही पड़ेगी। इस मामले में शरिया में कोई अनिश्चितता नहीं है। यह कहता है आपको भी वहीं भेज दिया जाना चाहिए, जहां मैं जल्दी ही जानेवाला हूं।

'आप समझीं हमशीरा?'

मरियम ने नीचे अपने हाथों को देखा। उसने कहा कि वो समझ गई है।

'अल्लाह आपको माफ़ करे।'

उसे बाहर ले जाने से पहले उन्होंने मरियम को एक दस्तावेज़ दिया कि वो अपने बयान पर और मुल्ला द्वारा सुनाई गई सज़ा पर दस्तखत करे। तीनों तालिवान की नज़रों के सामने मरियम ने अपना नाम लिखा-मीम, रे,

ये और मीम और उसने याद किया कि पिछली बार उसने अपना नाम सत्ताईस बरस पहले जलील की टेबल पर, एक और मुल्ला की देखती हुई निगाह के सामने एक दस्तावेज़ पर लिखा था।

मरियम ने दस दिन जेल में बिताए। वो कोठरी की खिड़की के पास बैठी रहती, आंगन में जेल के जीवन को देखती। जब गर्मियों की हवाएं आतीं तो वो काग़ज़ के टुकड़ों को तेज़ हवा के झोंकों के साथ इधर-उधर उड़ते और जेल की दीवारों के ऊपर जाते देखती। वो हवाओं द्वारा धूल का उड़ाया जाना देखती, तेज़ ववंडर की शक्ल में आंगन में उनका उठना देखती। हर कोई-गार्ड, साथी कैदी, वच्चे, मरियम अपनी कोहनियों के भीतर अपना चेहरा छुपा लेते, लेकिन धूल उनको नहीं बख्शती। वो उनके नाक और कान में, आंखों की बरीनियों और चमड़े की तहों में, दांतों के बीच की जगहों में भर जाती। केवल शाम

362 खालिद हुसैनी

के समय ही हवाएं बंद होतीं। और अगर रात में हवा बहती तो इतने संकोच के साथ बहती मानो दिन में आई अपनी बहनों की ज्यादतियों का पश्चाताप कर रही हो।

वलायत में मरियम के आखिरी दिन, नगमा ने उसे एक संतरा दिया। उसने उसे मरियम की हथेली पर रख दिया और उसकी मुट्ठी बंद कर दी। फिर वो रोने लगी।

'आप मेरी अब तक की सबसे अच्छी दोस्त हैं,' उसने कहा।

मरियम ने बाक़ी का दिन सलाखों वाली खिड़की के पास बैठ कर नीचे कैदियों को देखते हुए बिताया। कोई खाना बना रहा था और ज़ीरे की महक़ वाले धुएं और गर्म हवा का एक झोंका खिड़की में दाखिल हुआ। मरियम बच्चों को आंगन में आंखों पर पट्टियां बांधे खेलते हुए देखा। दो नन्हीं लड़कियां एक गीत गा रही थीं और मरियम को अपना बचपन याद आया, जब जलील ने उसे यह गीत गाकर सुनाया था, जब वो एक पत्थर पर बैठे हुए धारा में मछली मार रहे थे:

लिलि लिलि बर्डबाथ
सिटिंग ऑन एक डर्ट पाथ
मिनो सैट ऑन द रिम एंड ट्रैक
स्लिप्ड, एंड इन द वाटर शी सैंक

मरियम ने पिछली रात के सपनों को अलग-अलग किया। उसने ग्यारह कंकड़ों का सपना देखा था, जिनकों उसने एक दूसरे के ऊपर खड़ा किया था। फिर से नौजवान हो गया जलील, उसी जीत लेने वाली मुस्कान गड्ढे पड़ती ठोढ़ियों और पसीने के धब्बों के साथ, कंधे पर कोट लहराते हुए अपनी बेटी को ले जाने के लिए एक चमचमाती काली बुईक रोडमास्टर से आया था। मुल्ला फैजुल्ला अपनी तस्बीह के दाने फेर रहे थे, उसके साथ धारा के किनारे टहल रहे थे, उन दोनों की परछाइयां पानी में तैर रही थीं और किनारे की धार पर नीली-लैवेंडर जंगली आइरिश पसरी हुई थी, जो सपने में लौंग की तरह महक़ रही थी। उसने कोल्बा के चौखट पर खड़ी नाना का सपना देखा। वो मद्धिम और दूर से आ रही आवाज़ में मरियम को रात के खाने के लिए बुला रही थीं। मरियम

हज़ारों दमकते आफ़ताब 363

ठंडी, उलझी हुई घास में खेल रही थी, जहां चीटिंया रेंगतीं और भौरे भागते फिरते और हर तरह की हरियाली के बीच टिड्डे कूद रहे थे। ऊंचे रास्ते पर चढ़ता एक ठेला चरचरा रहा था। गायों के गले में बंधी घंटियां बज रही थीं। पहाड़ी पर भेड़ें बलबला रही थीं।

गाजी स्टेडियम जाता हुआ हुआ ट्रक जब रास्ते के गड्ढे पार करता या उसके पहिए पत्थरों पर पड़ते तो उसकी सीट पर बैठी मरियम को धक्के लगते। इन धक्कों से उसकी कूल्हे की हड्डी दुख रही थी। एक नौजवान, हथियारबंद तालिब उसके सामने बैठा उसे देख रहा था।

मरियम को जानने की इच्छा हुई कि क्या वो उनमें से एक होगा, यह प्यारा सा दिख रहा नौजवान जिसकी आंखें गहरी काली हैं और चेहरा हल्का सा नुकीला है और जिसकी काले नाखुन वाली तर्जनी ट्रक की बग़ल में थपथपा रही है।

'क्या आप भूखी हैं, अम्मी?' उसने पूछा। मरियम ने सिर हिला कर मना किया। 'मेरे पास बिस्कुट है। ये अच्छा है। अगर आपको भूख लगी हो तो आप खा सकती हैं। मुझे बुरा नहीं लगेगा।'

'नहीं। तशक्कुर, बिरादर ।'

उसने सिर हिलाया और उसे दया से देखने लगा। 'क्या आपको डर लग रहा है अम्मी?'

मरियम के गले में कुछ फंस गया। कांपती हुई आवाज़ में मरियम ने उसको सच्चाई बता दी। 'हां, मुझे बहुत डर लग रहा है।'

'मेरे पास मेरे अब्बा की एक तस्वीर है,' तालिब ने कहा। 'मुझे उनकी याद नहीं है। वो कभी साइकिलों की मरम्मत करते थे, मैं बस इतना ही जानता हूं। लेकिन मैं नहीं जानता कि वो कैसे चलते थे, कैसे हंसते थे या उनकी आवाज़ कैसी थी।' उसने दूसरी तरफ़ देखने के बाद मरियम को देखा। 'मेरी अम्मी कहा करती थीं कि वो जितने लोगों को जानती थीं, उनमें वो सबसे बहादुर थे। एक शेर की तरह, वो कहतीं। लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि जिस सुबह कम्युनिस्ट उन्हें ले गए, वो बच्चों की तरह चिल्ला रहे थे। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूं कि आप जानें कि डरना एक सामान्य बात है। इसमें शर्मिंदा होने

364 खालिद हुसैनी

की कोई बात नहीं है, अम्मी।'

उस दिन पहली बार मरियम थोड़ा सा रोई थी।

हज़ारों आंखें उस पर टिकी हुई थीं। सफ़ेदी की भीड़ में बेहतर नज़ारे के लिए गर्दनें तनी हुई थीं। चीभें चटक रही थीं। जब मरियम को ट्रक से उतारा जा रहा था तो भुनभुनाता हुआ शोर पूरे स्टेडियम में फैल गया। लाउस्पीकर ने उसके जुर्म का एलान किया तो मरियम ने हिलते सिरों की कल्पना की। लेकिन वो यह देखने के लिए निगाह नहीं उठा सकी कि वे सिर नाराज़गी में हिल रहे थे या दया में, धिक्कारते हुए हिल रहे थे या तरस खाते हुए। मरियम ने उन सबकी तरफ़ से आंखें मूंद ली थीं।

* उस सुबह, इससे पहले वो डरी हुई थी कि वो अपने को बेवकूफ़ बना लेगी, कि वो फरियादें करती और रोती हुई एक तमाशा बन जाएगी। उसे डर लगा था कि शायद वो चिल्लाएगी या उल्टियां करेगी या पेशाब कर देगी, कि

आख़िरी पलों में जानवरों की सहज प्रवृत्तियां या फूहड़ तरीके उस पर हावी हो जाएंगे। लेकिन जब उसे ट्रक से उतारा जा रहा था, तो मरियम के पांव डोल नहीं रहे थे। उसके हाथ झूल नहीं रहे थे। उसे घसीटने की ज़रूरत नहीं पड़ी। और जब उसे लगा कि वो डगमगा रही है, उसने जल्मै के बारे में सोचा, जिससे उसने उसकी जिंदगी के प्यार को छीन लिया था, जिसके दिन अपने पिता की गैरमौजूदगी के दर्द के साथ आकार लेंगे। और तब मरियम तन कर खड़ी हो गई और वो बिना विरोध किए चल सकी।

एक हथियारबंद आदमी उसकी तरफ़ बढ़ा और उसने उसे बताया कि वो दक्षिणी गोलपोस्ट की तरफ़ चले। मरियम इंतज़ार में कसमसाती भीड़ को महसूस कर सकती थी। उसने निगाह नहीं उठाई। अपनी आंखें ज़मीन पर अपनी और पीछे आ रहे उसे सज़ा देने वाले आदमी की परछाइयों पर गड़ाए रही।

हालांकि इसमें कुछ खूबसूरत पल भी रहे थे, मरियम जानती थी कि उसकी ज़्यादातर जिंदगी उसके लिए मेहरबान नहीं रही थी। लेकिन आख़िरी बीस कदमों के दौरान उसने और कुछ नहीं बल्कि सबसे ज़्यादा ज़िंदगी ही चाही। उसने चाहा कि वो फिर से लैला को देख सके, उसके ठहाके सुन सके, सितारों से रोशन आसमान के नीचे एक बार फिर चाय और बचे हुए हलवे लिए हुए उसके साथ बैठ सके। उसने इसका दुख हुआ कि अब वो अज़ीज़ा को फिर से नहीं देख पाएगी, उस खूबसूरत नोजवान औरत को नहीं

हजारों दमकते आफ़ताब 365

देख पाएगी, जो वह आने वाले वक़्त में बनने वाली थी। वो उसके हाथों को हिना से नहीं रंग पाएगी और उसकी शादी पर नोकुल मिठाइयां नहीं लुटा सकेगी। वो अज़ीज़ा के बच्चों के साथ कभी नहीं खेल पाएगी। उसे बूढ़ी बनना और अज़ीज़ा के बच्चों के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता।

गोलपोस्ट के करीब उसके पीछे वाले आदमी ने उससे रुकने को कहा। मरियम रुकी। बुर्के की जाली से उसने देखा कि हाथों की परछाईं ने कलाश्निकोव की परछाईं को उठाया ।

मरियम ने इन आख़िरी पलों में बहुत कुछ चाहा। उसने अपनी आंखें बंद कीं, तब भी उसे कोई पछतावा नहीं था, बल्कि एक विशाल शांति ने उसे अपने साए में ले लिया। उसने इस दुनिया में अपने आने के बारे में सोचा. एक नीच देहाती की एक हरामी औलाद, एक अनचाही चीज़, एक तरस खाने लायक, पछताने लायक हादसा। एक पतवार। और तब भी, जब वो इस दुनिया से जा रही है तो उसने लोगों को प्यार किया था और उसे बदले में प्यार मिला था। वो इसे एक दोस्त, एक साथी, एक निगहबान के रूप में छोड़ रही है। एक मां के रूप में। आखिर में एक ऐसे इंसान के रूप में, जिसकी अहमियत है। नहीं। मरियम ने सोचा, इस कदर मरना यह इतना बुरा नहीं था। उतना बुरा नहीं। यह एक नाजायज़ शुरुआत का जायज़ अंत है।

मरियम के आख़िरी ख्याल कुरान की ये कुछ शब्द थे, जिसे वो अपनी सांसों में बुदबुदा रही थी।

उसी ने सच्चाई से जन्नत और धरती बनाई है। उसने दिन के बात आती रातें बनाई हैं और दिनों को बनाया है ताकि वो रातों को ढंक लें, और उसी ने सूरज और उसके मातहत चांद को बनाया है। हरेक अपने तयशुदा फेरों को पूरा करता है, अब वही खुदा सबसे बड़ा है, सबसे मेहरबान है।

'झुकिए,' तालिब ने कहा।
ओ मेरे खुदा! माफ़ करना और रहम करना, क्योंकि तुम्हीं सबसे बेहतर रहम करने वाले हो।
'यहां झुकिए हमशीरा। और नीचे देखिए।'
इस आख़िरी बार, मरियम को जो कहा गया, वो उसने किया।

□□□ □□□

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [

370 खालिद हुसैनी

नहीं चलाई होती। सईद वैसे नहीं थे जैसी लैला ने उनकी कल्पना की थी, लाल चेहरा और छोटी आंखें। उनकी काली-सफ़ेद मूंछें थीं, जिनके किनारों को लपेट कर उन्होंने नोकदार बना रथा था, और ललाट पर लंबे, स्याह बालों की एक लट को उन्होंने पीछे की तरफ़ कंघी कर रखी थी। वो नर्मी से बातें करते थे, सलीके वाले आदमी थे और नापतौल कर बोलते और उनकी हरकतें गरिमा से भरी हुई होतीं।

सईद ही थे, जिन्होंने उस दिन निकाह के लिए अपने एक दोस्त और मुल्ला को बुलाया था। सईद ही थे, जिन्होंने तारिक़ को भीतर खींच कर उसे पैसे दिए थे। तारिक़ उन्हें नहीं लेता, लेकिन सईद ने ज़ोर दिया। तारिक़ मॉल गया और सादी-सी, शादी की दो पतली अंगूठियां लेकर आया। बाद में उस रात उन्होंने शादी की, जब बच्चे सो चुके थे।

मुल्ला द्वारा ओढ़ाए गए हरे पर्दे के नीचे शीशे में लैला की आंखें तारिक़ से मिलीं। आंसू नहीं थे, शादियों के दिन वाली मुस्कानें भी नहीं थीं, लंबे समय तक प्यार के बने रहने की फुसफुसा कर कही गई कसमें भी नहीं थीं। खामोशी में लैला ने अपने प्रतिबिंबों को देखा, वो चेहरे जो उनके सामने बड़े हुए थे। अभी दिख रही थैलियां, लकीरें और झुकी हुई चमड़ी एक समय के अविकसित, जवान चेहरों की निशानियां थे। तारिक़ ने अपना मुंह खोला और कुछ कहने लगा, लेकिन ज्यों ही उसने ऐसा किया, किसी ने पर्दा खींच लिया और लैला उस बात से वंचित रह गई, जिसे वह कहने जा रहा था।

उस रात बिस्तर में वे एक शौहर बीवी की तरह पड़े थे, उनके नीचे सोने के खाटों पर बच्चे खर्राटे ले रहे थे। लैला को याद आया कि किस तरह जब वो छोटे थे तो अपने बीच की हवा को शब्दों से भर देते थे। उनकी बातों

का गड़बड़, फुर्तीला प्रवाह हमेशा एक दूसरे को काटता रहता, वो किसी बात पर जोर देने के लिए कॉलरों में कोंचते रहते, उनकी हंसी की तेज़ी, मज़े की उत्सुकता। बचपन के उन दिनों के बाद से कितना कुछ घट चुका था, कितना कुछ कहे जाने की ज़रूरत थी। लेकिन उस पहली रात की भव्यता ने लैला से शब्द छीन लिए थे। उस रात, उसकी बगल में होना ही सबसे बड़ा सुख था। यह जानना ही बड़ा सुख था कि वो यहां मौजूद था, अपनी बगल में उसकी गर्माहट को महसूस करना, अपने सिरों को छुआते हुए उसके साथ लेटना, उसकी दाहिनी बांह में अपना बायां हाथ लपेटना ही सुखद था।

हजारों दमकते आफ़ताब 371

आधी रात को जब लैला प्यास की वजह से जगी तो उसने पाया कि उनके हाथ अभी भी एक दूसरे के साथ इस तरह बंधे हुए थे, जैसे बच्चे कसकर गुब्बारे का धागा पकड़े रहते हैं।

लैला को मुर्री की ठंडी, कोहरे भरी सुबह, इसकी चौंधियाने वाली शामें और रात के आसमान की काली जगमगाहट पसंद आई। उसे उसके सनोबरों की हरियाली और गिलहरियों का नर्म, भूरापन अच्छा लगा, जो तने हुए पेड़ों पर ऊपर-नीचे फुदकती रहती थीं। वहां अचानक होती बौछारें भी अच्छी लगीं, जिनकी वजह से ख़रीददार सामने के चंदोवे पर तानने के पर्दे के लिए मॉलों की ओर भागते। उसे निशानियों के लिए सामान बेचतीं दुकानें और होटल पसंद आए, जिनमें सैलानी रहते थे, भले ही मुकामी लोग लगातार चलने वाले निर्माण कार्यों और बुनियादी ढांचे के विस्तार की शिकायतें करते रहते। उनका कहना था कि यह मुर्री की कुदरती खूबसूरती को खा रहा है। लैला को यह बात अजीब लगती कि इमारतें बनने पर लोग मातम मनाएं। काबुल में तो लोग जश्न मनाते ।

उसे अच्छा लगता कि वहां बाथरूम थे। आउटहाउस नहीं, बल्कि सचमुच के बाथरूम, जिनके शौचालयों में फ्लश थी, शावर था और सिंक भी था, जिसमें जुड़वां टोंटियां थी, जिनसे वो कलाई की एक हरकत से पानी निकाल सकती थी। पानी न ठंडा होता और न गर्म। उसे सुबह में अल्योना के मिमियाने और झगड़ालू रसोइया अदीबा, जो कमाल का खाना बनाती थी, की आवाज़ पर जागना अच्छा लगता ।

कभी-कभी जब लैला तारिक़ को सोते हुए देखती, बच्चों को नींद में बड़बड़ाते और हिलते-डुलते देखती तो कृतज्ञता की एक लहर उसके भीतर उठती और उसका गला भर आता। उसकी आंखें गीली हो आतीं ।

सवेरे लैला तारिक़ के पीछे-पीछे एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती। उसकी कमर में खुंसे हुए छल्ले में चाबियां बजतीं और उसकी जींस के बेल्ट लूपों से खिड़कियां साफ़ करने की स्प्रे की बोतल झूलती रहती। लैला एक बाल्टी लिए रहती, जिसमें चीथड़ें, डिस्इन्फेक्टेंट, एक ट्वायलेट ब्रश और ड्रेसरों के लिए स्प्रे वैक्स होती। अज़ीज़ा भी उससे लगी हुई चलती जो एक हाथ में झाडू लिए रहती और दूसरे में फलियों से बनी गुड़िया होती जिसे मरियम ने उसके लिए बनाया था। जल्मे हिचकते हुए पीछे-पीछे आता। वो रूठा हुआ-सा, एक क़दम पीछे रहता ।

372 खालिद हुसैनी

लैला वैक्युम से साफ़ करती, बिस्तर लगाती और धूल झाड़ती। तारिक़ बाथरूम के सिंक और टब साफ़ करता, ट्वायलेट को रगड़ता और लिनोलियम के फर्श पर झाडू लगाता। खानों में वो धुले हुए तौलिए, शैंपू की छोटी बोतलें और बादाम की खुशबू वाले साबुन के टुकड़े सजाता। अज़ीज़ा ने खिड़कियों पर स्प्रे मारने और उन्हें साफ़ करने का जिम्मा ले रखा था। जब वो काम करती तो गुड़िया उससे बहुत दूर नहीं रहती।

लैला ने निकाह के कुछ दिनों के बाद अज़ीज़ा को तारिक़ के बारे में बता दिया था।

लैला को लगता कि अज़ीज़ा और तारिक़ के बीच चीजें अजीब और लगभग बेचैन कर देने वाली हैं। अज़ीज़ा तारिक़ के वाक्यों को पूरा करती और. तारिक़ उसके वाक्यों को। तारिक़ के मांगने से पहले ही वो उसे चीजें थमा देती। रात के खाने की टेबल पर उनके बीच निजी मुस्कानें खिल उठतीं मानों वो बिल्कुल ही अजनबी न हों, बल्कि साथी हों जो एक लंबे समय तक बिछुड़े रहने के बाद फिर से मिल गए हों।.

जब लैला ने उसे बताया तो अज़ीज़ा अपनी नज़रें नीची किए अपने हाथों को देख रही थी।

'मुझे वो पसंद हैं,' एक लंबी चुप्पी के बाद उसने कहा।

'वो तुम्हें प्यार करते हैं।'

'ऐसा उन्होंने कहा?'

'उन्हें कहने की ज़रूरत नहीं है, अज़ीज़ा।'

'मुझे बाक्क़ी चीजें बताइए मम्मी। मुझे बताइए ताकि मैं जान सकूं।'

और लैला ने बताया ।

'तुम्हारे अब्बा एक अच्छे आदमी हैं। मैं जितने लोगों को जानती हूं उनमें वां सबसे अच्छे आदमी हैं।'

'अगर वो छोड़ कर चले गए तो?' अज़ीज़ा ने कहा।

'वो कभी नहीं जाएंगे। मुझे देखो अज़ीज़ा। तुम्हारे अब्बा कभी तुम्हें दुख नहीं पहुंचाएंगे और वो कभी छोड़ कर नहीं जाएंगे।'

अज़ीज़ा के चेहरे पर आई राहत ने लैला के दिल को तोड़ दिया।

तारिक ने जल्मै के लिए डोलने वाला एक घोड़ा खरीदा, उसके लिए एक वैगन वनाई। जेल में एक साथी कैदी से उसने काग़ज़ से जानवर बनाना

हज़ारों दमकते आफ़ताब 373

सीखा था और इस तरह उसने जल्मै के लिए अनगिनत काग़ज़ों को मोड़ कर, काट कर और लपेट लगा कर उन्हें शेरों और कंगारुओं में, घोड़ों और चमकीली मोटी चिड़ियों में बदल दिया था। लेकिन इन तोहफ़ों को जल्मै ने बेरुखी और कभी कभी नफ़रत से ठुकरा दिया था।

'तुम गधे हो!' वो चिल्लाता । 'मुझे तुम्हारे खिलौने नहीं चाहिए!' 'जल्मै!' लैला धक से रह जाती। 'ठीक है,' तारिक़ ने कहा। 'लैला, ठीक है। उसे जाने दो।'

'तुम मेरे बाबा जान नहीं हो! मेरे असली बाबा जान दौरे पर हैं और लौटने पर वो तुम्हें पीटने वाले हैं! और तुम भागने के काबिल भी नहीं रहोगे क्योंकि उनके दो पांव हैं और तुम्हारा एक ही. है!'

रात में लैला जल्मै को अपने सीने पर बैठा कर और उसके साथ बबलू दुआएं पढ़ती। जब वो पूछता तो वो फिर से झूठ बोलती, उसे बताती कि उसके बाबा जान चले गए हैं और वो नहीं जानती कि वो कब लौटेंगे। वो इस काम से नफरत करती थी, इस बच्चे से इस तरह झूठ बोलने के लिए खुद से नफ़रत करती थी।

लैला जानती थी कि इस शर्मनाक झूठ को बार-बार बोला जाना है। ऐसा होना ही है, क्योंकि जल्मै यह सवाल झूलों से उतरते हुए, दोपहर की अपकियों से जागते हुए पूछा करेगा और बाद में जब अपने जूते बांधने और खुद से चल कर स्कूल जाने की उम्र का हो जाएगा तब भी वो यह सवाल करेगा और उससे फिर यही झूठ बोला जाएगा।

लैला जानती थी कि एक समय जाकर सवाल ख़त्म हो जाएगा। धीरे-धीरे जन्म इस पर सोचना बंद कर देगा कि उसके अब्बा ने क्यों उसे छोड़ दिया। वो ट्रैफिक लाइटों के पास, सड़क पर चलते या सामने से खुले हुए समोवार वर्ग के आगे चाय पीते बड़ी उम्र के लोगों के बीच वो अपने अब्बा को नहीं तलाशेगा। और एक दिन किसी घुमावदार नदी के किनारे टहलते हुए या बिना गह वाले किसी बर्फीले मैदान को देखते हुए उसे समझ आएगा कि उसके अब्बा का लापता होना अब एक खुला हुआ हरा जख्म नहीं था। कि अब यह कुछ और हो गया था, कोई नर्म किनारों वाली सुस्त सी चीज़। लोरियों की तरह। कभी, कभी जिसकी पूजा होती है, जिस पर रहस्य की परतें चढ़ जाती हैं।

लैला मुर्री में खुश थी। लेकिन यह एक आसान खुशहाली नहीं थी। यह मुफ्त की खुशी नहीं थी।

374 खालिद हुसैनी

छुट्टी के दिन तारिक़ लैला और बच्चों मॉल लेकर जाता जिससे लगी दुकानों में सस्ते गहने बिकते थे। उसकी बगल में उन्नीसवीं सदी के मध्य में बनी एंग्लिकन चर्च की इमारत थी। तारिक़ उनके लिए रेड़ीवालों से मसालेदार चपली कबाब ख़रीदता। वो मुकामी लोगों, यूरोपीयों और उनके सेल्युलर फोनों और डिजिटल कैमरे, और मैदानी इलाके की गर्मी से भाग कर यहां आए पंजाबियों की भीड़ के बीच चलते ।

कभी-कभी वो कश्मीर प्वाइंट तक बस से जाते। वहां से तारिक़ उन्हें झेलम नदी की वादी, सनोबर से ढंकी ढलानें, हरियाली, घने जंगल वाली पहाड़ियां दिखाता। वो बताता कि वहां बंदरों को अभी भी एक डाल से दूसरी डाल पर कूदते हुए देखा जा सकता है। वो चिनार से ढंकी नाथिया गली भी जाते, जो मुर्ती से तीसेक किलोमीटर दूर थी और जहां गवर्नर हाउस जाने वाली सड़क पर पेड़ों के साए में तारिक़ लैला का हाथ थामे हुए चलता। वो पुराने ब्रिटिश कब्रिस्तान पर रुकते या पहाड़ी की चोटी पर जाने के लिए टैक्सी करते, ताकि नीचे की हरी, कोहरे से भरी वादी का नज़ारा कर सकें।

कभी कभी इस सैर में जब वो किसी दुकान की खिड़की से गुज़रते तो लैला को उसमें उन लोगों के प्रतिबिंब दिखते। शौहर, बीवी, बेटी, बेटा। वो जानती थी कि अजनबियों को वो रहस्यों, झूठों और पछतावों से मुक्त सबसे मामूली परिवार लगते होंगे।

अज़ीज़ा को बुरे सपने आते, जिनसे वो चिल्लाते हुए जग पड़ती। लैला को खाट पर उसकी बगल में लेटना पड़ता, उसके गालों को अपनी आस्तीनों से पोंछते हुए उसे तसल्ली देते हुए फिर से सुलाना पड़ता।

लैला को खुद भी सपने आते। उनमें हमेशा वो खुद को काबुल के घर के हॉल में चलते हुए और सीढ़ियां चढ़ते देखती ।

वो अकेली होती, लेकिन दरवाज़ों के पीछे एक इस्तिरी की लयबद्ध फुफकार सुनाई देती, चादरों का झटका जाना और फिर तहें लगाना सुनाई देता। कभी कभी वी एक औरत को धीमी आवाज़ में हेराती गीत गुनगुनाते हुए सुनती। लेकिन जब वो उस कमरे में जाती तो कमरा खाली होता। वहां कोई नहीं होता।

सपने लैला को हिला देते। वो पसीने से लथपथ, आंखों में चुभते आंसुओं के साथ उन सपनों से जगती। यह सब काफ़ी सदमा पहुंचाने वाला था। हर वक़्त यह सदमा पहुंचाने वाला था।

उनचास

उस सितंबर के एक इतवार को लैला जल्मै को सुला रही थी, उसे ठंड लग गई थी, कि तारिक़ अचानक बंगले में दाखिल हुआ।

'सुना तुमने?' उसने थोड़ा हांफते हुए कहा। 'उन्होंने उन्हें मार डाला। अहमद शाह मसूद को। वो मर गए।'

'क्या?'

दरवाज़े पर खड़े खड़े ही तारिक़ ने उसे वह बताया जो वो जानता था। 'कहते हैं कि वो दो पत्रकारों को इंटरव्यू दे रहे थे। उन पत्रकारों ने खुद को बेल्जियन बताया था, जबकि वो असल में मोरक्को से थे। जब वो बातें कर रहे थे तो वीडियो कैमरे में छुपे बम में धमका हुआ। इसमें मसूद और एक पत्रकार मारे गए। उन्होंने भागने की कोशिश कर रहे दूसरे पत्रकार को गोली मार दी। वो अब कह रहे हैं कि पत्रकार शायद अल कायदा के लोग थे।'

लैला को मसूद का वह पोस्टर याद आया, जिसे मम्मी ने अपने सोने के कमरे में ठोक रखा था। आगे की ओर झुके हुए मसूद, एक भौंह तनी हुई, एकाग्रता से सिकुड़ा हुआ चेहरा मानो वो किसी को पूरे आदर के साथ सुन रहे हों। लैला को याद आया कि अम्मी इस पर कितनी कृतज्ञ थीं कि मसूद ने उनके बेटों के दफन के वक़्त उनकी कब्र पर दुआ पढ़ी थी। कैसे वो सबको इसके बारे में बताती थीं। जब उनके गुट और दूसरों के बीच लड़ाई छिड़ गई तब भी अम्मी ने उन्हें दोष देने से इन्कार कर दिया। वो एक भले आदमी हैं, वो कहा करतीं।

376 खालिद हुसैनी

वो अमन चाहते हैं। वो अफ़ग़ानिस्तान को फिर से वनाना चाहते हैं। लेकिन वो ये लोग बनाने नहीं देंगे। वो बस उन्हें ऐसा नहीं करने देंगे। मम्मी के लिए आख़िर तक भी, हर चीज़ के बुरी तरह तबाह हो जाने और कावुल के धूल में मिल जाने के बाद भी मसूद पंजशेर के शेर थे।

लैला उतनी क्षमाशील नहीं थी। मसूद के हिंसक अंत से उसे कोई खुशी नहीं हुई लेकिन उसने यह भी याद किया कि मसूद की निगाहों के सामने मोहल्ले धूल में मिलाए जाते रहे, लाशें मलवों से निकाली जाती रहीं, बच्चों को दफनाए जाने के बाद के दिनों में छतों और पेड़ों की ऊंची डालियों पर से उनके हाथ और पांव बरामद होते रहे। उसे वह भाव भी बहुत साफ़ याद है जो रॉकेट हमले के कुछ पलों पहले उसकी मम्मी के चेहरे पर था और उसने उसे भूलने की कितनी कोशिश की थी, पास ही में पड़ी हुई वावी की सिरकटी देह या आई, घनी धुंध और खून के बीच से झांकती टी-शर्ट पर छपा ब्रिज टावर याद आया।

'दफनाने की रस्म तो होगी,' तारिक़ कह रहा था। 'मुझे यकीन है। शायद रावलपिंडी में ही। यह बहुत बड़ी होगी।'

लगभग सो चुका जल्मै अब उठ बैठा था और अपनी मुट्ठी से आंखें रगड़ रहा था।

दो दिनों के बाद वो कमरा साफ़ कर रहे थे कि उन्हें शोरगुल सुनाई दिया। तारिक़ ने झाडू रख दी और बाहर भागा। लैला उसके पीछे-पीछे गई।

शीर होटल की लॉबी से आ रहा था। रिसेप्शन डेस्क की दाहिनी तरफ़ लाउंज एरिया था, जिसमें कई कुर्सियां और मटमैले सुएड से मढ़े दो सोफे रखे हुए थे। सोफों के सामने कोने में एक टेलीविज़न था और सईद, दरवान और दूसरे मेहमान सामने जमा थे।

लैला और तारिक़ रास्ता बनाते हुए भीतर घुसे।

टीवी पर वीवीसी लगाया हुआ था। पर्दे पर एक इमारत, एक टावर दिखाई जा रही थी और इसकी ऊपरी मंजिल से धुआं निकल रहा था। तारिक़ ने सईद से कुछ कहां और सईद जवाब दे ही रहा था कि पर्दे के एक कोने पर एक हवाई जहाज दिखा। वी बगल के टावर से जा टकराया और आग का गीला फूट पड़ा जिसके मुकाबले लैला ने जितने भी आग के गोले देखे थे वो बौने थे। लॉबी से हरेक इंसान की एक मिलीजुली चीख उठी।

दो से भी कम घंटों में दोनों टांवर ढह गए।

हजारों दमकते आफ़ताब 377

जल्दी ही टीवी स्टेशन अफ़ग़ानिस्तान और तालिबान और ओसामा बिन लादेन के बारे में बातें कर रहे थे।

'सुना तुमने कि तालिबान ने ओसामा बिन लादेन के बारे में क्या कहा है?' तारिक़ ने पूछा।

अज़ीज़ा बिस्तर पर उसके सामने शतरंज पर ध्यान लगाए बैठी थी। तारिक़ ने उसे शतरंज खेलना सिखाया था। वो त्यौरियां चढ़ाए हुए थी और अपना निचला होंठ थपथपा रही थी। वो अपने अब्बा की हरकतों की नकल कर रही थी, जो वो कोई चाल चलने का फैसला करते वक़्त अपनाता था।

जल्मै को लगी ठंड में अब थोड़ा सुधार हुआ था। वो सो रहा था और लैला उसके सीने में विक्स लगा रही थी।

'मैंने सुना,' वो बोली ।

तालिबान ने एलान किया था कि वो ओसामा बिन लादेन को नहीं सौंपेंगे क्योंकि वो एक मेहमान हैं, जिन्होंने अफ़ग़ानिस्तान में पनाह ले रखी है। और एक मेहमान को किसी के हवाले कर देना पश्तूनवली कायदों के ख़िलाफ़ है। तारिक़ कड़वाहट से हंसा और लैला ने इस हंसी में एक सम्मानित पश्तून रिवाज़ को इस तरह तोड़े-मरोड़े जाने और लोगों के तौर-तरीकों को गलत तरीके से पेश किए जाने के ख़िलाफ़ विद्रोह को सुना।

हमलों के कुछ दिनों के बाद लैला और तारिक फिर से होटल की लॉबी में थे। टीवी के पर्दे पर जॉर्ज डब्ल्यू बुश का भाषण आ रहा था। पीछे एक बड़ा अमेरिकी झंडा था। एक मौके पर आवाज़ कांपी और लैला को लगा कि बुश को रुलाई आने वाली है।

सईद अंग्रेज़ी बोल सकते थे और उन्होंने उन लोगों को बताया कि बुश ने अभी अभी जंग का एलान किया है।

'किनके ख़िलाफ़?' तारिक़ ने कहा।

'सबसे पहले तो हमारे वतन के ख़िलाफ़ ।'

'हो सकता है कि यह उतनी बुरी चीज़ न हो,' तारिक़ ने कहा।

उन्होंने अभी अभी प्यार किया था। लैला की बग़ल में लेटे हुए उसने अपना सिर उसके सीने पर रख रखा था। उसके हाथ लैला के पेट पर थे। शुरुआत में जब उन्होंने कोशिश की थी तो मुश्किल आई थी। तारिक़ माफ़ी मांगता। लैला तसल्ली देती। मुश्किलें अब भी थीं, लेकिन अब शारीरिक नहीं

378 खालिद हुसैनी

बल्कि व्यावहारिक मुश्किलें थीं। बच्चों के साथ वो जिस कोठरी में रहते थे वो छोटी थी। बच्चे उनके नीचे खाट पर सोते थे और इसलिए बहुत कम एकांत मिल पाता था। ज़्यादातर वक़्त लैला और तारिक़ चुपचाप प्यार करते, अपनी उत्तेजना पर काबू रखते और बच्चों के बीच में दखल देने की गुंजाइश को ध्यान में रखते हुए कंबल के नीचे भी पूरे कपड़े पहने रहते। हमेशा उन्हें चादरों के सरसराने और बिस्तर की स्प्रिंग के चरमराने की फिक्र लगी रहती। लेकिन लैला के लिए तारिक़ के साथ होना ही इन चिंताओं से बचने का तरीका था। जब वो प्यार करते तो लैला को लगता कि उसे किनारा मिल गया है, उसे पनाह मिल गई है। उसका यह डर कि उनका साथ एक अस्थायी सुख है, कि जल्दी ही इसके रेशे-रेशे बिखर

जाएंगे, धीरे-धीरे हल्का पड़ गया था। जुदा हो जाने का उसका डर गायब हो गया था।

'क्या मतलब है तुम्हारा?' अब उसने कहा।

'वहां वतन में जो हो रहा है, आख़िर में इसका नतीजा उतना बुरा नहीं निकलेगा।'

वतन, एक बार फिर बम गिर रहे थे। इस बार अमेरिकी बम। लैला रोज़ चादरें बदलते हुए और वैक्युम करते हुए टीवी के पर्दों पर जंग की तस्वीरें देखती । अमरिकियों ने जंगी सरदारों में फिर से हथियार बांटे थे और तालिबान को खदेड़ने तथा बिन लादेन को पकड़ने के लिए उत्तरी गठबंधन को मदद देना शुरू किया था।

लेकिन तारिक़ जो कह रहा था, उससे लैला भड़क उठी। उसने उसका सिर बेरुखी से अपने सीने से हटा दिया।

'उतना बुरा नहीं? लोग मर रहे हैं? औरतें, बच्चे, बूढ़े? फिर से घर तबाह हो रहे हैं? उतना बुरा नहीं?'

'तुम बच्चों को जगा दोगी।'

'तुम ऐसा कैसे कह सकते हो तारिक़?' वो त्तड़क उठी। 'करम में उस तथाकथित भारी गलती के बाद भी? एक सौ बेगुनाह लोग! तुम खुद उन लाशों को देखा।'

'नहीं,' तारिक़ ने कहा। उसने खुद को कोहनियों पर टिकाया और लैला की तरफ़ देखा। 'तुमने गलत समझा। मेरा जो मतलब था...'

'तुम नहीं जान पाओगे,' लैला ने कहा। वो जानती थी कि उसकी आवाज़

हजारों दमकते आफ़ताब 379

तेज़ हो रही है, कि वो शौहर और बीवी के बतौर पहली बार लड़ रहे हैं। 'तुम तब चले गए थे जब मुजाहिदीनों ने झगड़ना शुरू किया था, याद है? पीछे मैं रह गई थी। मैं। मैं जंग को जानती हूं। मैंने जंग में अपने अम्मी-अब्बू खोए हैं। अपने अम्मी-अब्बू तारिक़। और अब तुमसे यह सुनना कि जंग उतनी बुरी नहीं है?'

'मैं शर्मिंदा हूं लैला। मैं शर्मिंदा हूं।' उसने लैला का चेहरा अपनी हथेलियों में लिया। 'तुम सही हो। मैं शर्मिंदा हूं। मुझे माफ़ कर दो। मेरे कहने का मतलब था कि शायद इस जंग के ख़त्म होने पर कोई उम्मीद पैदा होगी, कि शायद अरसे बाद पहली बार...'

'मैं इसके बारे में और बात नहीं करना चाहती,' लैला ने कहा। वो इस पर हैरान थी उसने कैसे तारिक़ को फटकारा था। वो जानती थी कि जो उसने उससे कहा था वो नामुनासिब था, क्या जंग ने उसके अम्मी-अब्बा को भी नहीं छीन लिया था? और इस तरह उसके भीतर जो भी भड़क उठा था, वो नर्म पड़ गया। तारिक़ नर्मी से बोलता रहा और जब उसने लैला को अपनी तरफ़ खींचा तो लैला ने उसे ऐसा करने दिया। जब तारिक़ ने उसकी बांहें और फिर उसका ललाट चूमा तो उसने उसे ऐसा कर लेने दिया। वो जानती थी कि शायद तारिक सही था। वो जानती थी कि उसके कहने का इरादा क्या था। शायद यह ज़रूरी था। हो सकता है कि जब बुश के बम गिराने बंद हों तो कोई उम्मीद पैदा हो। लेकिन वो खुद इसे नहीं कह सकती थी, ऐसे में नहीं जब बाबी और मम्मी के साथ हुआ हादसा अफ़ग़ानिस्तान में किसी और के

साथ हो रहा था। ऐसे में नहीं पीछे, वतन में जब एक मासूम लड़की या लड़का रॉकेटों द्वारा यतीम बनाया जा रहा था, जैसे कि वो बना दी गई थी। लैला इसे कबूल नहीं कर सकी। इस पर खुश होना मुश्किल था। यह दोमुंहा और विकृत लगा।

उस रात जल्मै खांसी से जग गया। लैला हिल भी पाती, उससे पहले तारिक़ विस्तर से उठ गया था। उसने अपना नकली पांव बांधा और जल्मै के पास गया, उसे हाथों में उठा लिया। बिस्तर पर से लैला ने तारिक़ की आकृति को अंधेरे में आगे-पीछे जाते देखा। उसने कंधे परं जल्मै के सिर की झलक देखी। उसके हाथ तारिक़ की गर्दन से बंधे हुए थे, उसके नन्हें पांव तारिक़ के कूल्हों पर उछल रहे थे।

जब तारिक बिस्तर पर लौटा तो उनमें से किसी ने कुछ नहीं कहा। लैला उसका चेहरा छूने के लिए बढ़ी। तारिक के गाल गीले थे।

पचास

लैला के लिए मुर्री का जीवन आराम और चैन से भरा हुआ था। काम बहुत भारी नहीं था और छुट्टियों के दिनों में तारिक़ बच्चों को पैट्रियाटा पहाड़ी पर चेयरलिफ्ट की सवारी के लिए या फिर पिंडी प्वाइंट पर ले जाता जहां एक साफ़ दिन में इस्लामाबाद और रावलपिंडी का निचला हिस्सा देखा जा सकता था। वहां वो घास पर कंबल बिछाते और खीरे के साथ कोफ्ता सैंडविच खाते और अदरक वाली ठंडी चाय पीते ।

लैला खुद से कहती कि यह एक अच्छा जीवन था, जिसके लिए शुक्रगुज़ार होना चाहिए। असल में यह ठीक वैसा ही जीवन था, जिसके लिए रशीद के साथ

अपने अंधेरे दिनों में वो सपने देखती थी। हर रोज़ लैला यह बात खुद याद दिलाती थी।

तभी जुलाई, 2002 की एक गर्म रात में जब वो और तारिक़ बिस्तर में दवी हुई आवाज़ों में वतन में आ रहे बदलावों के बारे में बातें कर रहे थे। कई सारे बदलाव आए थे। गठबंधन बलों ने तालिबान को हरेक मुख्य शहर से खदेड़ दिया था, उन्हें पाकिस्तानी सरहद के पार और अफ़ग़ानिस्तान के दक्षिण और पूरव के पहाड़ों की तरफ धकेल दिया था। एक अंतरराष्ट्रीय शांति सेना आईएसएएफ काबुल रवाना कर दी गई थी। देश में अब एक अंतरिम राष्ट्रपति हामिद करज़ई थे।

लैला ने फैसला किया कि अब तारिक़ से कह देने का वक़्त आ गया है।

हजारों दमकते आफ़ताब 381

एक बरस पहले उसने खुशी से काबुल से बाहर आने के लिए अपना एक हाथ दे दिया होता। लेकिन पिछले कुछ महीनों में उसे अपने बचपन का शहर बहुत याद आया था। उसने शोर बाज़ार की भीड़ भाड़, बाबर के बागीचे, चमड़े की थैलियों में पानी ढोते भिश्तियों की पुकारों की बहुत कमी खल रही थी। उसने चिकन स्ट्रीट में कपड़ों के मोलतोल करनेवालों और कार्तेह परवान में तरबूज़ बेचने वालों की याद आ रही थी।

लेकिन यह महज घर की याद या अतीत से लगाव ही नहीं था, जो लैला इन दिनों काबुल के बारे में इतना सोचने लगी थी। उस पर बेकरारी हावी हो गई थी। उसने सुना था कि काबुल में स्कूल बन रहे हैं, सड़कें फिर से पक्की की जा रही हैं, औरतें काम पर लौट रही हैं और यहां उसका जीवन, जो अपने आप में सुखद था और वो इसके लिए कृतज्ञता से भरी हुई थी, लेकिन यह 'जीवन उसके लिए नाकाफ़ी था। महत्वहीन था। इससे भी बुरा कि बेकार था। इधर

उसे मन में बाबी की आवाजें सुनाई देने लगी थीं। वो कहते थे, तुम जो चाहो वो बन सकती हो लैला। मैं तुम्हारे बारे में ये बात जानता हूं।
और मैं यह भी जानता हूं कि जब जंग ख़त्म होगी तो अफ़ग़ानिस्तान को तुम्हारी ज़रूरत पड़ेगी।

लैला को मम्मी की आवाज़ भी सुनाई देती। जब बाबी अफ़ग़ानिस्तान से उनलोगों के चले जाने की सलाह देते तो उसे मम्मी का जवाब याद आता । मैं अपने बेटों के सपनों को हक़ीकत में बदलते देखना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि जब ऐसा हो, जब अफ़ग़ानिस्तान आज़ाद हो तो मैं यहां रहूं, ताकि लड़के देख सकें। वो इसे मेरी आंखों के ज़रिए देखेंगे। लैला के मन का एक हिस्सा अब काबुल लौटना चाहता था, मम्मी और बाबी के लिए, ताकि वो उसकी आंखों के ज़रिए इसे देख सकें।

और फिर लैला के लिए सबसे बड़ा सम्मोहन ये था कि वहां मरियम है। क्या मरियम ने इसके लिए जान दी थी? लैला खुद से पूछती। क्या उसने खुद की कुर्बानी दी ताकि लैला एक परदेश में एक नौकरानी बन जाए? लैला ने जो किया था, उससे शायद मरियम के लिए इससे तब तक फ़र्क नहीं पड़ता, जब तक वो और उसके बच्चे महफूज़ और खुश थे। लेकिन इससे लैला को फ़र्क़ पड़ता था। अचानक, इससे काफ़ी फ़र्क पड़ता था।

'मैं घर वापस जाना चाहती हूं,' उसने कहा।

382 खालिद हुसैनी

तारिक बिस्तर में उठ बैठा और उसे देखने लगा।

लैला फिर से इसे मुग्ध हो गई कि वो कितना खूबसूरत है, उसके ललाट का शानदार घुमाव, उसकी बांहों की सुडौल पेशियां, उसकी ख्यालों में डूबी

समझदार आंखें। एक साल गुज़र गया था और अब भी लैला को कभी कभी ऐसे मौक़ों पर यकीन नहीं आता था कि उन्होंने फिर से एक दूसरे को पा लिया था। कि वो सचमुच वहां है, अपनी बीवी के साथ, कि वो उसका शौहर है।

'वापस? काबुल ?' उसने पूछा। 'सिर्फ तभी जब तुम भी इसे चाहो।'

बनाई। 'क्या तुम यहां दुखी हो? तुम खुश दिखती हो। बच्चे भी। लैला उठ बैठी। तारिक़ ने बिस्तर पर थोड़ा खिसकर उसके लिए जगह

'मैं खुश हूं,' लैला ने कहा। 'बेशक मैं खुश हूं। लेकिन... हम यहां से कहां जाएंगे, तारिक़? हम यहाँ कब तक रहेंगे? यह हमारा घर नहीं है। काबुल हमारा घर है, और वहां इतना कुछ हो रहा है, इतनी सारी अच्छी चीजें हो रही हैं। मैं इन सबका हिस्सा बनना चाहती हूं। मैं कुछ करना चाहती हूं। मैं इसमें अपनी भागीदारी निभाना चाहती हूं। तुम समझे?'

है?' तारिक ने धीरे-धीरे सिर हिलाया। 'तो तुम ये चाहती हो? तुम्हें यकीन

'हां, मैं यही चाहती हूं। मुझे यकीन है। लेकिन यह इससे भी ज़्यादा है। मुझे महसूस होता है कि मुझे लौटना है। यहां रहना अब और, सही महसूस नहीं होता।'

तारिक्र ने अपने हाथों की तरफ देखा और फिर लैला को देखा। 'लेकिन तभी जब तुम भी लौटना चाहो।'

तारिक्र मुस्कुराया। उसकी ललाट के शिकन दूर हो गई और एक पल को वो फिर से वही पुराना तारिक़ था, वो तारिक़ जिसके सिर में दर्द नहीं रहता था, जिसने एक बार बताया था कि साइबेरिया में नाक की रेंट ज़मीन

पर गिरने से पहले बर्फ बन जाती है। हो सकता है कि यह उसकी कल्पना हो, लेकिन लैला को यकीन था कि इन दिनों अभी पुराने तारिक़ की और भी झलकें दिखेंगी।

'मैं?' उसने कहा। 'मैं तो तुम्हारे पीछे दुनिया के आखिरी छोर तक

हजारों दमकते आफ़ताब 383

जाऊंगा, लैला ।'

लैला ने उसे करीब खींच लिया और उसके होंठ चूम लिए। उसे यकीन था कि उसने तारिक़ को कभी इस पल से ज़्यादा प्यार नहीं किया था। 'शुक्रिया,' लैला ने तारिक़ के ललाट पर अपना ललाट टिकाते हुए कहा।

'चलो, घर चलें,'

'लेकिन पहले मैं हेरात जाना चाहती हूं,' उसने कहा।

'हेरात?'

लैला ने उसे बात समझाई।

बच्चों को अपने-अपने तरीकों से भरोसा दिलाने की ज़रूरत पड़ी। लैला को गुस्साई हुई अज़ीज़ा के साथ बैठना पड़ा, जिसे अब भी डरावने सपने आते थे, जो एक हफ़्ते पहले बुरी तरह परेशान हो गई थी, जब पास में शादी पर किसी ने हवा में गोलियां दागी थीं। लैला को उसे समझाना पड़ा कि जब वो काबुल लौटेंगे तो वहां तालिबान नहीं होंगे, कि वहां अब कोई

लड़ाई नहीं. होगी और उसे फिर यतीमखाने नहीं भेजा जाएगा। 'हम सब साथ रहेंगे। तुम्हारे अब्बा, मैं, जल्मै। और तुम, अज़ीज़ा। अब तुम्हें मुझसे फिर कभी भी अलग नहीं होना पड़ेगा। मैं वादा करती हूं।' वो अपनी बेटी को देखते हुए मुस्कुराई ।

'जब तक कि तुम अलग होना नहीं चाहो। जब तुम किसी नौजवान से प्यार करने लगी और उसे शादी करना चाहो।'

जिस दिन वो मुर्री से रवाना हुए, जल्मै उदास और बेचैन था। उसने अल्योना की गर्दन में हाथ लपेट रखा था और उसे छोड़ने को तैयार नहीं था।

'मैं बकरी के पीछे जल्मै को नहीं छोड़ सकती मम्मी,' अज़ीज़ा ने कहा। 'जल्मै। हम बकरी को बस में नहीं ले जा सकते,' लैला ने फिर समझाया।

जब तारिक़ ने उसकी बगल में घुटने को बल बैठ कर जल्मै से वादा किया कि वो काबुल में अल्योना जैसी ही एक बकरी खरीद देगा, तब जाकर जल्मै ने हिचकते हुए उसे छोड़ा।

सईद के साथ विदाई भी आंसुओं से भरी हुई थी। अच्छी किस्मत की खातिर उसने पर कुरान पकड़े रखा ताकि तारिक, लैला और बच्चे उसे तीन बार चूम सकें और इसके बाद उसे इतनी ऊपर उठाया ताकि वो उसके नीचे

384 खालिद हुसैनी

से गुज़र सकें। उसने तारिक को दो सूटकेस और ट्रंक अपनी कार में रखयाने में मदद की। सईद ही कार चला कर उन्हें स्टेशन ले गया, जो बस के चल पड़ने पर कर्ष पर खड़े-खड़े उन्हें हाथ हिला कर विदा किया।

पीछे की तरफ़ झुके हुए और पिछड़ी खिड़की में सईद को ओझल होते देखते हुए लैला ने मन में संदेह से भरी फुसफुसाहटें सुनीं। उसने जानना चाहा कि मुर्री की सुरक्षा को छोड़ कर क्या वो बेवकूफ़ बन गए हैं? एक ऐसी जगह जाना, जहां उसके अम्मी-अब्बू और भाई तबाह हुए, जहां बमों के धुएं बस अभी-अभी बैठने शुरू हुए हैं?'

और तभी अपनी यादों की अंधेरी चक्करदार तहों में से दो पंक्तियां उठीं, जो बाबी के लिए काबुल से विदाई का गीत थीं:

कोई गिन नहीं सकता इसकी छतों पर चमकते चांदों को या इसकी दीवारों के पीछे हजारों दमकते आफ़ताबों को लैला अपनी सीट से टिक कर बैठ गई और गीली पलकें झपकाने लगी।

काबुल इंतज़ार कर रहा था। उसे ज़रूरत थी। घर वापसी का ये सफ़र एक सही काम था।

लेकिन पहले एक आखिरी विदाई कही जानी बाक़ी थी।

अफ़ग़ानिस्तान में जंग ने काबुल, हेरात और कांधार को जोड़ने वाली सड़कों को तबाह कर दिया था। अब हेरात जाने का सबसे आसान रास्ता ईरान के मसहद से गुज़रता था। लैला और उसका परिवार वहां केवल रात भर रहे।
उन्होंने रात एक होटल में गुज़ारी और अगली सुबह उन्होंने एक और बस पकड़ी।

मसहद एक भीड़भाड़ वाला, चहल पहल से भरा शहर है। लैला ने गुज़रते हुए पार्के, मस्जिदें और चेलो कबाब रेस्टोरेंट देखे। जब बस आठवें शिया इमाम, इमाम रज़ा की दरगाह से होकर गुज़री तो लैला को इसकी चमकती हुई टाइलें, मीनारें और इसकी शानदार सुनहरी गुंबद देखने के लिए अपनी गर्दन ताननी पड़ी। इन सबको बड़े करीने से और प्यार से संजो कर रखा गया था। उसे अपने वतन के बुद्धों का ख्याल आया। यो विशालकाय बुद्ध अब धूल में मिल गए थे और बामियान बादी में हवा के साथ उड़ते फिर रहे थे।

ईरान-अफ़ग़ानिस्तान सरहद पर बस के सफ़र में करीब दस घंटे लग

हजारों दमकते आफ़ताब 385

गए। ज्यों-ज्यों वो अफ़ग़ानिस्तान के करीब आते गए ज़मीन ज़्यादा वीरान, बंजर होती गई। सरहद पार करके देरात आने के कुछ ही देर पहले वो एक अफ़ग़ानी शरणार्थी शिविर से होकर गुज़रे। लैला के लिए यह एक पीली धूल, काले तंबुओं और थोड़े से ढांचों की एक धुंधली सी जगह थी, जिन्हें करुगेटेड स्टील की चादरों से बनाया गया था। उसने सीट की दूसरी तरफ़ हाथ बढ़ा कर तारिक़ का हाथ थाम लिया।

हेरात में ज़्यादातर सड़कें पक्की थीं जिनके दोनों तरफ़ खुशनुमा सनोबर के पेड़ों की कतारें थीं। म्यूनिसिपल पार्क और लाइब्रेरियां बनाई जा रही थीं, आंगन जतन से संवारे गए थे, इमारतें ताजा-ताज़ा रंगी गई थीं। ट्रैफिक लाइटें काम कर रही थीं और लैला के लिए सबसे हैरानी की बात ये थी कि बिजली लगातार आ रही थी। लैला ने सुना था कि हेरात के सामंती जंगी सरदार इस्माइलं खान ने कस्टम की भारी कमाई से हेरात को फिर से बनाने में मदद की थी। खान यह रकम अफ़ग़ान-ईरान सरहद पर वसूलता था और काबुल का कहना था कि यह खान का नहीं बल्कि केंद्रीय

हुकूमत का पैसा था। उन्हें मुवफ्फक होटल ले जाने वाले टैक्सी ड्राइवर ने जब इस्माइल खान का नाम लिया तो उसमें आदर और डर दोनों का लहजा शामिल था।

मुवफ्फक में दो रातें गुज़ारने की कीमत उनकी बचत का करीब पांचवां हिस्सा थी, लेकिन मसहद से सफ़र लंबा और थकाऊ था और बच्चे हल्कान हो गए थे। डेस्क पर मौजूद बुजुर्गवार ने कमरे की चाबियां उठाते हुए तारिक़ को बताया कि मुवफ्फक पत्रकारों और एनजीओ कार्यकर्ताओं में बहुत लोकप्रिय था।

'बिन लादेन एक बार यहां सोए थे,' उसने शेखी मारी।

कमरे में दो बिस्तर थे और एक बाथरूम था जिसमें ठंडा पानी आ रहा था। बिस्तरों के बीच की दीवार पर ख्वाजा अब्दुल्लाह अंसारी की शायरी पेंट की गई थी। खिड़कियों से लैला को नीचे भीड़ से भरी हुई सड़क और सड़क के पार पार्क दिखाई दिया, जिसमें फूलों की घनी क्यारियों के बीच से निकलती हल्के रंग की ईंटों की राहें थीं। टीवी के आदी हो गए बच्चे इस पर निराश थे कि कमरे में टीवी नहीं था। हालांकि जल्दी ही लैला और तारिक़ भी बिस्तर पर ढह गए। लैला तारिक़ की बांहों में खरटि लेते हुए सो गई थी, बस रात में एक बार उसकी नींद तब खुली जब वो एक सपने, से जग पड़ी थी। उस

386 खालिद हुसैनी

सपने को वो याद नहीं कर पाई।

अगली सुबह चाय और ताज़े ब्रेड, किंस के मुरब्बे और उबले हुए अंडों के नाश्ते के बाद तारिक्त ने एक टैक्सी खोजी ।

- 'पक्के तौर पर तुम नहीं चाहतीं कि मैं तुम्हारे साथ आऊं?' तारिक़ ने पूछा। अज़ीज़ा ने तारिक़ का हाथ पकड़ रखा था। जल्मै ने नहीं पकड़ा था लेकिन वो भी उसके करीब खड़ा उसके कूल्हों से अपना एक कंधा टिकाए हुए था।

'मुझे यकीन है।'

'मुझे फिक्र हो रही है।'

'मैं ठीक से रहूंगी,' लैला ने कहा। 'वादा करती हूं। बच्चों को बाज़ार ले जाओ। उन्हें कुछ ख़रीद दो।'

जब टैक्सी चली तो जल्मै रोने लगा और जब लैला ने मुड़ कर देखा तो उसने देखा कि वो तारिक़ की तरफ़ हाथ बढ़ा रहा है। इस बात से लैला के दिल को सुकून और दुख दोनों पहुंचा कि उसने तारिक़ को कबूल करना शुरू कर दिया था।

'आप हेरात से नहीं हैं,' ड्राइवर ने कहा।

उसके काले, कंधों तक लंबे बाल थे। लैला ने पाया था कि यह वापस खदेड़े जा चुके तालिबान को दिया जाने वाला एक आम जवाब था। इसके अलावा उसकी मूंछों पर दाहिनी तरफ़ एक जख्म का निशान था। उसकी तरफ़ के शीशे पर एक फोटो टेप से चिपकाया हुआ था। यह गुलाबी गालों वाली एक नन्हीं लड़की का फोटो था, जिसके बाल बीच से बांट कर दो चोटियों नें गूंथे गए थे।

लैला ने उसे बताया कि वो पिछले साल पाकिस्तान में रही थी और काबुल लौट रही थी। 'देह-माजंग।'

शीशे के ज़रिए उसने बर्तन बनाने वालों को जगों में पीतल के हैंडल जोड़ते हुए और जीनसाज़ों को चमड़े के टुकड़े धूप में सूखने के लिए डालते हुए देखा।

'बिरादर, क्या आप यहां लंबे समय से रह रहे हैं?' लैला ने पूछा।

'ओह, अपनी पूरी जिंदगी। मैं यहीं पैदा हुआ। मैंने हर चीज़ देखी है। आपको वह बगावत याद है?'

हजारों दमकते आफ़ताब ३ 87

लैला ने बताया कि उसे याद है, लेकिन वो बोलता रहा।

'यह मार्च, 1979 की बात है। सोवियतों के हमला करने से करीब नौ महीने पहले की बात है। कुछ गुस्साए हुए हेरातियों ने कुछ सोवियत सलाहकारों की हत्या कर दी थी, इसलिए सोवियतों ने तोपें और हेलीकॉप्टर भेजे और इस जगह को धूल में मिला दिया। हमशीरा, तीन दिनों तक उन्होंने शहर पर गोलीबारी की। उन्होंने इमारतें ढहा दीं, मीनारों में से एक को तोड़ डाला, हज़ारों लोगों को मार डाला। हज़ारों। उन तीन दिनों में मैंने अपनी दो बहनें खोईं। उनमें से एक बारह साल की थी।' उसने शीशे पर लगे फोटो को थपथपाया। 'ये वही है।'

'मुझे दुख है,' लैला ने कहा। वो इस पर हैरान थी कि कैसे हरेक अफ़ग़ान कहानी में मौत और नुक़सान और कल्पना से परे गम के निशान मिलते हैं। और तब भी वो देखती है कि लोग जीने और आगे बढ़ने के तरीके खोज लेते हैं। लैला ने अपनी जिंदगी और उन सारे हादसों के बारे में सोचा जो उसके साथ घटे थे, और उसे बात पर अचरज हुआ कि वो भी बच गई थी, कि वो जिंदा थी और इस टैक्सी में बैठी हुई इस आदमी की दास्तान सुन रही थी।

गुल दामन मिट्टी और फूस के बने सपाट कोल्बाओं के बीच खड़े, चहारदीवारियों वाले कुछेक घरों का एक गांव था। कोल्बाओं के बाहर लैला ने धूप में झुलसी औरतों को खाना बनाते देखा। कामचलाऊ चूल्हों में चलती लकड़ी पर रखे काले पड़ गए बड़े बर्तनों से उठ रही भाप की बूंदें उनके चेहरों पर जमा थीं। खच्चर नांद में खा रहे थे। मुर्गियों के पीछे भागते बच्चे अब टैक्सी के पीछे भागने लगे थे। लैला ने पत्थरों से भरा ठेला धकेल रहे आदमियों को देखा। वो रुक कर कार को गुज़रते हुए देखने लगे। ड्राइवर ने गाड़ी घुमाई और वो एक कब्रिस्तान की बगल से गुज़रे जिसके बीच में एक जर्जर मकबरा था। ड्राइवर ने उसे बताया कि उसमें गांव के एक सूफी दफ्न थे।

एक पवनचक्की भी थी। इसकी स्थिर, जंग के रंग के पंखों के साए में तीन छोटे बच्चे बैठे गीली मिट्टी से खेल रहे थे। ड्राइवर ने गाड़ी किनारे की और खिड़की से बाहर सिर निकाला। जवाब उन तीनों में से सबसे बड़े दिख रहे लड़के ने दिया। उसने सड़क पर पीछे, दूर एक घर की तरफ़ इशारा किया।

ड्राइवर ने उसे शुक्रिया कहा और कार को बैंक गियर में डाला। उसने चहारदीवारी वाले एक मंजिला मकान के बाहर गाड़ी को रोका।

388 खालिद हुसैनी

लैला ने दीवारों के ऊपर निकले अंजीर की फुनगियों को देखा, जिसकी कुछ डालें बाहर की ओर निकली हुई थीं।

'मुझे देर नहीं लगेगी,' उसने ड्राइवर से कहा।

जिस अधेड़ आदमी ने दरवाज़ा खोला, वो छोटे कद का, दुबला और लाल-भूरे बालों वाला था। उसकी दाढ़ी लंबी थी और उसमें कुछ स्याह बालों की लटें थीं। उसने अपनी पिरहन-तुंबन के ऊपर चापन पहन रखी थी।

उन्होंने एक दूसरे को सलाम अलैकुम कहा।

'क्या ये मुल्ला फैजुल्ला का घर है?' लैला ने कहा।

'हाँ। मैं उनका बेटा हूं, हमज़ा। क्या मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूं, हमशीरा?'

हूं।' 'मैं यहां आपके अब्बा की एक पुरानी दोस्त मरियम के सिलसिले में आई

हमज़ा ने पलकें झपकाईं। उसके चेहरे पर उलझन का एक भाव आया। 'मरियम...'

'जलील खान की बेटी ।'

उसने फिर से पलकें झपकाईं। फिर उसने अपने हथेली अपने गालों से लगाई और उसका चेहरा मुस्कान से रोशन हो उठा, जिससे उसके टूटे हुए और ख़राव दांत दिख गए। 'ओह!' उसने कहा। यह एक छोड़ी हुई सांस की तरह, ओहहहहहह की तरह सुनाई दिया। 'ओह! मरियम! क्या आप उनकी बेटी हैं? क्या

वो' वो अब अपनी गर्दन घुमा कर उत्सुकता से लैला के पीछे देख और तलाश रहा था। 'क्या वो यहां हैं? इतना लंबा अरसा गुज़र गया! क्या मरियम यहां हैं?'

'मुझे आशंका है कि वो गुज़र चुकी हैं।'

हमजा के चेहरे की मुस्कान बुझ गई।

एक पल को वो वहीं दहलीज पर खड़े रहे। हमज़ा ज़मीन पर ताक रहा था। कहीं कोई गधा रेंका।

'भीतर आइए,' हमज़ा ने कहा। उसने दरवाज़ा पूरा खोल दिया। 'मेहरबानी करके भीतर आइए ।'

वो कम साजो-सामान वाले एक कमरे में फर्श पर बैठे। फर्श पर बैठने के लिए एक हैराती कालीन और गोटेदार कुशन थे। दीवार पर मक्का की एक

हजारों दमकते आफ़ताब 389

मढ़ी हुई तस्वीर थी। वो एक खुली हुई खिड़की के पास बैठे। उन दोनों के बीच चौकोर धूप का एक टुकड़ा था। लैला ने दूसरे कमरे में औरतों के फुसफुसाने की आवाजें सुनीं। एक नंगे पांवों वाला छोटा लड़का उनके बीच में ग्रीन टी और पिस्ते रख गया। हमज़ा ने उसकी तरफ़ सिर से इशारा किया।

'मेरा बेटा।'

बच्चा बिना बोले चला गया।

'तो मुझे बताइए,' हमज़ा ने थके हुए लहजे में कहा।

लैला ने बताया। उसने उसे हर चीज़ बताई। इसमें उससे ज़्यादा वक़्त लगा, जितनी उसने कल्पना की थी। आखिर में उसे अपने को संयत बनाए रखने के लिए जूझना पड़ा। यह अब भी, एक बरस बाद भी मरियम के बारे में बात करना आसान नहीं था।

उसकी बात पूरी होने के काफ़ी देर बाद तक हमज़ा ने कुछ नहीं कहा। वो अपनी तश्तरी में धीरे-धीरे चाय के प्याले को घुमाता रहा, पहले एक तरफ़, फिर दूसरी तरफ ।

'मेरे अब्बा, उन्हें सुकून हासिल हो, मरियम को बहुत प्यार करते थे,' आखिरकार वो बोला । 'पता है, उन्होंने ही तब उनके कान में अज़ान पढ़ी थी, जब वो पैदा हुई थीं। वो हर हफ़्ते उनसे मिलने जाते थे। उन्होंने कभी नागा नहीं किया। कभी कभी वो अपने साथ मुझे भी ले जाते। हां, वो उनके उस्ताद थे, लेकिन वो उनके दोस्त भी थे। मेरे अब्बा एक बड़े दिल वाले आदमी थे। जलील खान ने जब उन्हें दूर कर दिया तो इसने उन्हें करीब-करीब तोड़ डाला।'

'मुझे आपके अब्बा के बारे में सुन कर दुख हुआ। उन पर खुदा की मेहरबानी हो ।'

हमज़ा ने शुक्रिया जताते हुए सिर हिलाया। 'वो बहुत उम्र होने तक जीए। असल में वो जलील खान के बाद तक जीए। हमने उन्हें गांव के कब्रिस्तान में दफनाया। ये जगह उससे दूर नहीं है, जहां मरियम की

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]'

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

स्वैलो चिड़ियों की चहचह सुनाई पड़ी और नीचे लगातार टिड्डे बोल रहे थे।

इस तरह वो पहाड़ी की तरफ़ चढ़ान पर दो सौ गज या इससे ज़्यादा चले। इसके बाद राह समतल हो गई और ज़मीन के एक सपाट टुकड़े में मिल गई। वो सांस लेने के लिए रुके। लैला ने अपनी ललाट पर से आस्तीन से पसीना पोंछा और अपने चेहरे के सामने मंडराते मच्छरों के एक झुंड को हाथों से भगाया। वहां उसने क्षितिज में नीचे खड़े पहाड़ों को देखा, कुछ कास के पौधे, कुछ पोपलार, तरह-तरह की जंगली झाड़ियां देखीं, जिनके नाम वो नहीं जानती थी।

'यहां धारा हुआ करती थी,' हमज़ा ने हल्के से हांफते हुए कहा। 'लेकिन अब इसे सूखे हुए बहुत वक़्त हो गया है।'

उसने कहा कि वो वहां इंतज़ार करेगा। उसने बताया कि वो धारा की सूखी हुई धारा की पेटी को पार करे और पहाड़ों की तरफ़ बढ़ती जाए।

'मैं यहीं इंतज़ार करूंगा,' उसने एक पोपलार के नीचे एक चट्टान पर बैठते हुए कहा। 'आप जाइए।'

'मैं नहीं-'

हजारों दमकते आफ़ताब 391

'फिक मत कीजिए। अपना वक़्त लीजिए। जाइए, हमशीरा।'

लैला ने उसे शुक्रिया कहा। एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर क़दम रखते हुए उसने धारा की पेटी को पार किया। उसने चट्टानों के बीच में सोडा की टूटी हुई बोतलें, जंग लगे कैन, लोहे के जंग लगे डिब्बे देखे जिनके जिंक के ढक्कन ज़मीन में आधे धंसे हुए थे।

वो पहाड़ों की तरफ़, वीपिंग विलो यानी बड़ी जटाओं वाले बेदमजनूं की तरफ बढ़ी जिसे वो अब देख सकती थी। हवा के हर झोंके के साथ उसकी लंबी लटकती हुई जटाएं हिल रही थीं। सीने में उसका दिल धड़क रहा था। वो देख रही थी कि मरियम ने जैसा बताया था, बेदमजनूं उसी तरह से मौजूद हैं। चारों तरफ़ से एक गोल घेरे के बीच में एक खाली सपाट जगह थी। लैला अब तेज़-तेज़ चल रही थी, वो लगभग दौड़ रही थी। उसने कंधे के पीछे से देखा और पाया कि हमज़ा अब एक छोटी सी आकृति भर रह गया है। पेड़ों की गहरी हरियाली के आगे उसके चापन का रंग एक धब्बे के रूप में दिख रहा था। उसके पांव एक पत्थर से टकराए और वो लगभग गिरते- गिरते बची। इसके बाद उसने फिर से अपने कदमों को संभाला। बाक़ी रास्ते उसने अपना पजामा ऊपर उठाए रखा। जब वो बेदमजनुओं तक पहुंची तो वो लगभग हांफ रही थी।

मरियम का कोल्बा अब भी वहां था।

वहां पहुंच कर लैला ने देखा कि अकेली खिड़की का चौखटा खाली था और दरवाज़ा नहीं था। मरियम ने मुर्गियों के एक दड़बे, एक तंदूर और लकड़ी के एक आउटहाउस के बारे में भी बताया था। लेकिन लैला को उनका कोई निशान नहीं मिला। वो कोल्बा के दाखिले पर रुक गई। वो भीतर मक्खियों की भुनभुनाहट सुन सकती थी।

भीतर जाने के लिए उसे एक बड़े मकड़ी के जाले से बचते हुए जाना पड़ा। भीतर हल्का अंधेरा था। लैला को अपनी आंखों को देखने लायक होने देने

के लिए कुछ पल इंतज़ार करना पड़ा। जब वो देखने लायक हुईं तो उसने पाया कि उसने जितनी कल्पना की थी, भीतर उससे भी कम जगह थी। फर्श के तख्तों में से महज़ एक का ही आधा सड़ रहा, टूटा हुआ हिस्सा वहां बचा था। उसने कल्पना की कि बाक़ी को जलावन के लिए उखाड़ लिया गया था। फर्श पर अब सूखी हुई पत्तियां, टूटी हुई बोतलें, च्यूइंग गमों के बेकार रैपर,

392 खालिद हुसैनी

जंगली मशरूम, पुराने, पीले पड़ गए सिगरेट के टुकड़े पड़े थे। लेकिन ज़्यादातर घास थी, जो कुछ तो अबाध और कुछ अड़ियल तरीके से दीवारों की आधी ऊंचाई तक उगी हुई थी।

पंद्रह बरस, लैला ने सोचा। इस जगह पर पंद्रह बरस ।

लैला दीवार से पीठ लगाए हुए बैठ गई। उसने खिड़कियों से सरसराती हुई बहती हवा को सुना। छत पर और भी मकड़जाले तने हुए थे। किसी ने एक दीवार पर स्प्रे से कुछ लिखा था, लेकिन उसका ज़्यादातर हिस्सा झड़ गया था और जो लिखी गई बात लैला नहीं समझ पाई। तब लैला को समझ में आया कि अक्षर रूसी भाषा के थे। एक कोने में एक खाली घोंसला था और दूसरे कोने में, जहां दीवार छत से मिल रही थी, एक चमगादड़ उल्टा लटक रहा था।

लैला ने अपनी आंखें बंद कर लीं और कुछ देर वहीं बैठी रही।

पाकिस्तान में कभी-कभी मरियम के चेहरे की बारीकियां याद करने में मुश्किल आती थी। कई बार ऐसा भी होता था, जब मानो ज़बान पर आई बात की तरह मरियम का चेहरा याद ही नहीं आता। लेकिन अब, यहां इस जगह पर मरियम

को आंखों की पलकों के पीछे बुलाना आसान था। उसकी निगाह की नर्म चमक, उसकी लंबी ठोढ़ी, उसकी गर्दन की खुरदरी चमड़ी, भिंचे हुए होंठो वाली मुस्कान। यहां, लैला अपने गाल मरियम की गोद की नर्मी में फिर से रख सकती थी, मरियम को आगे-पीछे झूलते हुए महसूस कर सकती थी, वो उसे कुरान की आयतें पढ़ते हुए महसूस कर सकती थी। वो उन शब्दों को मरियम की देह में, उसके घुटनों में, और उसके अपने कानों में गूंजते हुए महसूस कर सकती थी।

फिर एकाएक घास गायब होनी शुरू हुई, मानो किसी ने उनकी जड़ें पकड़ कर उन्हें ज़मीन के नीचे खींच लिया हो। वो नीचे धंसती गई, धंसती गई जब तक कि कोल्बा की मिट्टी ने आख़िरी नुकीली पत्ती तक नहीं निगल ली। किसी जादू से सिमटते हुए अपने में समा गए। चिड़ियों का घोंसला खुद ब खुद बिखर गया, तिनके एक एक कर खुले और उड़ते हुए कोल्बा से बाहर चले गए। एक अदृश्य पोछे ने दीवार पर से रूसी इबारत को मिटा दिया।

फर्श के तख्ते लौट आए। लैला को खाटों का एक जोड़ा, लकड़ी की एक टेबल, दो कुर्सियां, कोने में लोहे का एक स्टोव और दीवारों से लगे खाने

हजारों दमकते आफ़ताब 393

दिखे, जिन पर मिट्टी के बर्तन और तसले, काली पड़ चुकी चाय की एक केतली, प्याले और चम्मच रखे हुए थे। उसे बाहर मुर्गियों का कुड़कुड़ाना और दूर धारा की कलकल सुनाई दी।

नन्ही मरियम लकड़ी की टेबल के पास बैठी तेल के दीए की रोशनी में एक गुड़िया बना रही थी। वो कुछ गुनगुना रही थी। उसका चेहरा चिकना और

ताज़ा था, उसके बाल धुले हुए थे और उन्हें पीछे की तरफ़ कंघी किया हुआ था। उसके सारे दांत मौजूद थे।

लैला ने मरियम को गुड़िया के सिर पर सूत के धागे चिपकाते देखा । कुछ बरसों में यह छोटी लड़की औरत बनेगी जो ज़िंदगी के सामने छोटी-छोटी मांगें पेश करेगी, जो कभी दूसरों पर बोझ नहीं बनेगी, कभी यह ज़ाहिर नहीं करेगी कि उसने भी गम उठाए थे, निराशाएं झेली थीं, सपने देखे थे, जिनका मखौल उड़ा दिया गया था। एक ऐसी औरत जो नदी की पेटी में पड़ी एक पत्थर की तरह होगी, बिना किसी शिकायत के सब कुछ चुपचाप सहते हुए, उसकी शालीनता उस पर आई उथलपुथल से ख़त्म नहीं होगी, बल्कि उनके बीच ही वह आकार लेगी। लैला इस नन्हीं लड़की की आंखों में, उसके भीतर की गहराई में कुछ देख चुकी थी, जिसे न तो रशीद और न ही तालिबान तोड़ पाने के काबिल थे। एक चट्टान के टुकड़े की तरह सख़्त और अडिग । ऐसी चीज़ जो आख़िर में उसकी नाकामी की वजह और लैला की निजात बनेगी।

नन्हीं लड़की ने सिर उठाया। गुड़िया को रख दिया। मुस्कुराई ।

लैला जो?

लैला की आंखें झटके से खुल गईं। वो धक से रह गई थी और उसका शरीर आगे की तरफ़ उठ गया था। उसने उस चमगादड़ को चौंका दिया था, जिसने कोल्बा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाया और खिड़की से बाहर निकल गया। उसके पंख किताब के फड़फड़ाते हुए पन्नों की तरह थे। लैला अपने पांवों पर उठी, अपने पजामे पर से सूखी हुई पत्तियों को झाड़ा। वो कोल्वा से बाहर निकल आई। बाहर रोशनी ने अपनी जगह थोड़ी सी बदल ली थी। हवा घास को काटती हुई और बेदमजनू की टहनियों को आपस में टकराते हुए बह रही थी।

खाली जगह से जाने से पहले लैला ने कोल्बा को आख़िरी बार देखा, जहां मरियम सोई थीं, खाना खाया था, सपने देखे थे, जलील के लिए सांस

394 खालिद हुसैनी

रोके इंतज़ार किया था। झुकी हुई दीवारों पर वेदमजनुओं के टेढ़े- मेढ़े छापे बन रहे थे जो हवा के हर झोंके के साथ बदल जाते थे। सपाट छत पर एक कौवा आकर बैठ गया। उसने किसी चीज़ में चोंच मारी, कांव-कांव किया और उड़ गया।

'अलविदा, मरियम ।'

और इसी के साथ, इस वात से अनजान कि वो रो रही है, वो घास के वीच से दौड़ने लगी।

उसने हमज़ा को अब भी चट्टान पर बैठे हुए पाया। जब हमज़ा ने उसे देखा तो खड़ा हो गया।

कुछ है।' 'चलिए, लौटते हैं,' उसने कहा। फिर, 'मेरे पास आपको देने के लिए

लैला ने सामने के दरवाज़े के पास हमज़ा का इंतज़ार किया। कुछ देर पहले जिस लड़के ने उसे चाय लाकर दी थी, वो अब अंजीर के एक पेड़ के नीचे एक मुर्गी पकड़े हुए बेसब्री से उसे देख रहा था। लैला को दो चेहरे दिखे, एक उम्रदराज़ औरत का और हिजाब में एक छोटी लड़की का चेहरा, जो एक खिड़की के पीछे से उसे संकोच के साथ देख रहे थे।

घर का दरवाज़ा खुला और हमज़ा दिखा। उसने एक डिब्बा ले रखा था।

उसने उसे लैला को दे दिया।

'जलील खान ने अपने मरने से महीना भर या इससे पहले इसे मेरे अब्बा को दिया था।' हमज़ा ने कहा। 'उसने मेरे अव्वा से कहा था कि इसे वो तब नक र्याग्यम के लिए संभाल कर रखें, जब तक वो इसे लेने नहीं आती। मेरे अब्वा ने इसे दो वरसों तक रखा। फिर, अपने गुज़रने के ठीक पहले उन्होंने इस मुझे दिया और मरियम के लिए संभाल कर रखने को कहा। लेकिन वो.

.. आप जानती हैं, कभी नहीं आई।'

लैला ने उस टिन के अंडाकार डिब्बे को देखा। यह एक पुराने चॉकलेट कं डिव्वं जैसा था। यह एक पीले-हरे रंग का फीकी पड़ गई चमक वाला डिब्बा था, जिस पर एक ढक्कन जड़ा हुआ था। उसकी बगल की तरफ़ हल्का जंग था और ढक्कन के सामने की रिम में दो नन्हें गहे थे। लेला ने उसे खोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी कुंडी में ताला लगा था।

'इसमें क्या है?' उसने पूछा ।

हमज़ा ने एक चावी उसकी हथेली पर रख दी। 'मेरे अब्वा ने इसे कभी

हजारों दमकते आफ़ताब 395

नहीं खोला। न ही मैंने। मुझे लगता है कि यह खुदा की मर्जी है कि इसे आप खोलें।'

तारिक़ और बच्चे अभी होटल नहीं लौटे थे।

लैला बिस्तर पर बैठी थी और डिब्बा उसकी गोद में था। उसके भीतर एक हिस्सा चाहता था कि डिब्बे को बिना खोले रहने दिया जाए और जलील की इच्छा को एक राज़ ही रहने दिया जाए। लेकिन आख़िर में कौतूहल मज़बूत साबित हुआ। उसने चाबी लगाई। वो थोड़ा किरकिराई, हिली लेकिन उसने डिब्बा खोल लिया।

भीतर तीन चीजें थीं एक लिफाफा, कपड़े का एक थैला और एक वीडियोकैसेट ।

लैला ने टेप लिया और नीचे रिसेप्शन डेस्क पर गई। उसे बुजुर्गवार क्लर्क से, जिसने पिछले दिन उनका स्वागत किया था, पता लगा कि होटल में एक ही वीसीआर है और वो इसके सबसे बड़े सुईट में है। सुईट इस पल खाली है और वो उसे वहां ले जाने को राजी हो गया। उसने डेस्क को एक मूंछों वाले नौजवान के ऊपर छोड़ा, जो सेल्युलर फोन पर बातें कर रहा था।

बूढ़ा क्लर्क लैला को दूसरी मंजिल पर एक लंबे गलियारे के अंत में एक दरवाज़े तक ले गया। उसने ताला खोला और उसे भीतर आने दिया। लैला की आंखों ने एक कोने में टीवी खोज ली। सुईट में उसने और किसी चीज़ पर गौर नहीं किया ।

उसने टीवी और वीसीआर चालू किया। टेप उसने वीसीआर में लगाया और प्ले बटन दबाया। पर्दा कुछ पलों तक खाली रहा, और लैला को समझ में नहीं आया कि जलील ने एक खाली टेप मरियम को देने के लिए इतनी ज़हमत क्यों उठाई। लेकिन तभी संगीत शुरू हुआ और पर्दे पर तस्वीरें आने लगीं।

लैला ने त्यौरियां चढ़ाईं। वो एक या दो मिनटों तक देखती रही। फिर उसने स्टॉप बटन दबा कर और टेप को आगे बढ़ाया और फिर से प्ले दबाया।
वही फ़िल्म चल रही थी।

बूढ़ा आदमी हैरानी भरी नज़र से लैला को देख रहा था।

वो फ़िल्म वाल्ट डिज़्नी की पिनोच्चियो थी। लैला समझ नहीं सकी। तारिक़ और बच्चे छह बजे के ठीक बाद होटल लौटे। अज़ीज़ा दौड़ी हुई लैला के पास गई और उसने कान की बालियां उसे दिखाई, जिन्हें तारिक़ ने

396 खालिद हुसैनी

उसके लिए खरीदा था। चांदी की दोनों बालियों पर तितलियां रंगी हुई थीं। जल्यै ने एक फुलाने वाली डॉल्फिन पकड़ रखी थी, जिसकी थूथन दबाने पर वो बज उठता था।

'कैसी हो?" तारिक़ ने उसके कंधों के गिर्द वर्हि लपेटते हुए कहा।

'मैं ठीक हूं,' लैला ने कहा। 'मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी।'

खाने के लिए वो पास के एक कबाब घर गए। यह एक छोटी सी, चिपचिपी, प्लास्टिक के टेबलक्लॉथों वाली, धुएं और शोर से भरी हुई जगह थी। लेकिन गोश्त शानदार और नम था और रोटी गर्म थी। इसके कुछ देर बाद वो सड़क पर टहले। तारिक़ ने सड़क के किनारे एक कियोस्क से बच्चों को गुलाब जल के आइसक्रीम खरीद कर दिए। उन्होंने उसे एक बेंच पर बैठ कर

खाया। उनके पीछे ढलती शाम की लालिमा के बरअक्स काली पहाड़ियां दिख रही थीं। हवा हल्की गर्म थी और उसमें देवदार की महक़ भरी हुई थी।

लैला पहले ही लिफाफा खोल चुकी थी, जब वो वीडियोटेप देख कर कमरे में लौटी थी। इसमें हाथ से लिखा हुआ एक ख़त था, जिसे धारियों वाले पीले काग़ज़ पर नीली स्याही से लिखा गया था।

इसमें लिखा था:

13 मई, 1987

मेरी प्यारी मरियम:

दुआ करता हूं कि जव तुम्हें यह ख़त मिले, तुम सेहतमंद होओ।

जैसा कि तुम्हें पता है, मैं एक महीना पहले तुमसे बात करने काबुल आया था। लेकिन तुम मुझसे नहीं मिलीं। मैं निराश हुआ था लेकिन तुम्हें दीप नहीं दे सका। तुम्हारी जगह मैं होता तो शायद मैंने भी यही किया होता। मैंने तुम्हारी कृपा का सुख अरसा पहले खो दिया था और इसके लिए मैं केवल खुद को ही दोप दे सकता हूं। लेकिन अगर तुम यह ख़त पढ़ रही हो, तब तुमने वो व्रत पढ़ा होगा, जिसे मैं तुम्हारे दरवाज़े पर छोड़ आया था। तुमने यह ख़त पढ़ा और तुम मुल्ला फैजुल्ला से मिलने आई, जैसा करने को मैंने तुम्हें कहा था। मैं इसके लिए तुम्हारा शुक्रगुजार हूं मरियम जो कि तुमने ऐसा किया। मैं तुमसे कुछ बातें कह पाने के इस मौके के लिए शुक्रगुज़ार हूं।

हजारों दमकते आफ़ताब 397

कहां से शुरू करूं?

हमारी आखिरी बातचीत के बाद से तुम्हारे अब्बा ने बहुत गम झेला है मरियम जो। तुम्हारी सौतेली अम्मी अफसूं 1979 बगावत के पहले दिन ही मारी गईं। उसी दिन एक आवारा गोली ने तुम्हारी बहन नीलोफर को मार डाला। मैं अब भी उसे देख सकता हूं, अपनी नन्हीं नीलोफर को मेहमानों को प्रभावित करने के लिए सिर के बल खड़ी होते देख सकता हूं। तुम्हारा भाई फरहाद 1980 में जिहाद में शामिल हुआ। सोवियतों ने हेलमंद के ठीक बाहर उसे मार डाला। मैं उसकी लाश तक नहीं देख पाया। मुझे नहीं पता कि तुम्हारे अपने बच्चे हैं या नहीं, मरियम जो, लेकिन तुम्हारे बच्चे हैं तो मैं दुआ करता हूं कि खुदा उनका ख़याल रखे और तुम्हें उस गम से बचाए, जिससे मैं दोचार हूं। मुझे अब भी उनके सपने आते हैं। मैं अब भी अपने मरे हुए बच्चों के सपने देखता हूं।

मैं तुम्हारे सपने भी देखता हूं मरियम जो। मुझे तुम्हारी कमी महसूस होती है। मुझे तुम्हारी आवाज़ की, तुम्हारी हंसी की कमी महसूस होती है। मुझे तुम्हें पढ़ कर सुनाना याद आता है, और वो वक़्त याद आते हैं जब हमने ताय मछलियां पकड़ी थीं। क्या तुम्हें वो वक़्त याद है, जब हमें साथ मछलियां पकड़ी थीं? तुम एक अच्छी बेटी थीं, मरियम जो, और मैं शर्मिंदगी और पछतावा महसूस किए बिना तुम्हारे बारे में सोच तक नहीं सकता। अफसोस... तुम्हारे मामले में मेरे पास अफसोस का सागर है मरियम जो। मुझे अफसोस है कि जिस रोज़ तुम हेरात आईं तो मैं तुमसे नहीं मिला। अफसोस है कि मैंने तुम्हारे लिए दरवाज़ा नहीं खोला और तुम्हें भीतर नहीं ले गया। मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हें अपनी बेटी नहीं बनाया, कि मैंने तुम्हें उतने बरसों तक उस जगह में रहने दिया। और किसलिए? इज्ज़त खो देने के डर से? अपने तथाकथित अच्छे नाम के कलंकित हो जाने के डर से? इस घिनौनी जंग में इतने नुक़सान उठाने

के बाद, इतनी सारी भयानक चीजें देखने के बाद अब ये सारी बातें कितनी छोटी लग रही हैं। लेकिन बेशक अब बहुत देर हो चुकी है। शायद यह उन लोगों के लिए जायज़ सजा है जो निर्मम होते हैं कि उन्हें तब समझ आए जब कोई भी चीज़ पलटी नहीं जा सकती हो, सुधारी नहीं जा सकती हो। अब मैं इतना ही कर सकता हूं कि मैं कहूं कि तुम एक अच्छी बेटी थीं, मरियम जो, और यह कि मैं कभी तुम्हारे लायक नहीं था। अब मैं बस

398 खालिद हुसैनीी

तुमसे माफ़ी ही मांग सकता हूं। इसलिए मुझे माफ़ कर दो मरियम जो। मुझे माफ़ कर दो। माफ़ कर दो। माफ़ कर दो।

अब मैं वो दौलतमंद आदमी नहीं रहा, जिसे तुम कभी जानती थीं। कम्युनिस्टों ने मेरी ज़्यादातर ज़मीन जब्त कर ली है और मेरे सारे स्टोर भी ले लिए हैं। लेकिन शिकायत करना नीचता है, क्योंकि खुदा ने अब भी मुझे ज़्यादातर लोगों से कहीं अधिक ही बख्शा है और मैं इसकी वजह नहीं समझ पाता। काबुल से लौटने के बाद मैंने अपनी बची-खुची ज़मीन भी बेच दी। मैंने ख़त के साथ में तुम्हारे लिए तुम्हारे हिस्से की विरासत रख दी है। तुम देख सकती हो कि यह बहुत बड़ी दौलत से तो कहीं कम है, लेकिन यह, फिर भी कुछ है। यह कुछ है। (तुम इस पर भी गौर करोगी कि मैंने रकम को डॉलरों में बदलने की छूट ले ली है। मुझे लगता है कि यह बेहतर होगा। केवल खुदा ही हमारी संकट में फंसी हुई करेंसी का नसीब जानता है।)

उम्मीद करता हूं कि तुम यह नहीं सोचोगी कि मैं तुमसे माफ़ी ख़रीदने की कोशिश कर रहा हूं। उम्मीद करता हूं तुम मुझे इस बात से नवाज़ोगी कि तुम्हारी माफ़ी बिकाऊ नहीं है। यह कभी बिकाऊ नहीं थी। भले ही देर से, लेकिन मैं तुम्हें बस वो दे रहा हूं जो शुरू से ही तुम्हारा था।

तुम्हारे लिए मैं जिंदगी में एक फर्ज निभाने वाला बाप नहीं रहा।
शायद मैं मौत के बाद हो पाऊं।

आह मौत। मैं तुम्हें ब्योरे देकर परेशान नहीं करूंगा, लेकिन मौत अब मेरी नज़रों के दायरे में है। डॉक्टर कहते हैं कि दिल कमज़ोर है।
मुझे लगता है कि एक कमज़ोर आदमी के लिए मौत का माकूल सलीका है।

मरियम जो,

मैं जुर्रत कर रहा हूं, मैं यह उम्मीद करने की जुर्रत कर रहा हूं कि यह ख़त पढ़ने के बाद तुम मेरे प्रति उससे कहीं ज़्यादा दयालु होओगी जितना मैं कभी तुम्हारे लिए था। कि तुम अपने दिल में अपने अब्बा को आकर देखने की चाहत पाओगी। कि एक बार और तुम मेरा दरवाज़ा खटखटाओगी और मुझे इस बार इसे खोलने का एक मौक़ा दोगी, कि मैं तुम्हारा स्वागत कर सकें, तुम्हें अपनी बांहों में ले सकूं, मेरी बेटी, जैसा मुझे बरसों पहले करना चाहिए था। यह एक कमज़ोर उम्मीद है, मेरे दिल जितनी ही कमज़ोर। यह

हजारों दमकते आफ़ताब 399

मैं जानता हूं। लेकिन मैं इंतज़ार करूंगा। मैं तुम्हारी दस्तक को सुनने का इंतज़ार करूंगा। मैं उम्मीद करता रहूंगा।

खुदा तुम्हें एक लंबी और आरामदेह ज़िंदगी बख्शे, मेरी बेटी। खुदा तुम्हें सेहतमंद और खूबसूरत औलादों से नवाज़े। तुम वो खुशियां, चैन और मकबूलियत हासिल करो, जो मैं तुम्हें नहीं दे पाया। अच्छे से रहो।
मैं तुम्हें खुदा की प्यार करने वाली बांहों के हवाले कर रहा हूं।

[illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

कल लैला बच्चों को बौछारों में खेलते हुए देख रही थी। वो काले आसमान के नीचे आंगन में पानी के एक तालाब से दूसरे तालाब में कूद रहे थे। वो दो छोटे सोने के कमरों वाले मकान की रसोई की खिड़की से देख रही थी। यह मकान उन्होंने देह-माजंग में किराए पर लिया था। आंगन में अनार का एक पेड़ था और स्वीटब्रियर की झाड़ियां थीं। तारिक़ ने दीवारों की मरम्मत की थी और बच्चों के लिए एक फिसलन पट्टी, एक झूले का सेट और जल्मै की नई बकरी के लिए बाड़ से घिरी एक नई जगह बना दी थी। लैला ने जल्मै की खोपड़ी पर से दुलकती बारिश को देखा उसने पूछा था कि वो तारिक़ की तरह, सिर के बाल हटाना चाहता है। थोड़ा बदलाव करते हुए तारिक अब बबलू दुआएं पढ़ता था। बारिश ने अज़ीज़ा के लंबे बालों को चिपका कर सपाट

हजारों दमकते आफ़ताब 401

कर दिया था और उन्हें गीली पूंछ में बदल दिया था। वो जब सिर झटकती तो उससे छींटे उड़ कर जल्मै पर पड़ रहे थे।

जल्मै अब करीब छह बरस का था। अज़ीज़ा दस की थी। उन्होंने पिछले हफ़्ते उसका जन्मदिन मनाया था। वो उसे सिनेमा पार्क ले गए थे जहां आखिरकार टाइटेनिक काबुल के लोगों के लिए दिखाई जा रही थी।

'चलो बच्चो, हमें देर हो रही है,' लैला ने उनके दोपहर का खाना काग़ज़ के थैले में रखते हुए पुकारा।

सुबह के आठ बज रहे हैं। लैला पांच बजे उठ गई थी। हमेशा की तरह अज़ीज़ा ने उसे सुबह की नमाज़ के लिए हिला कर उठाया था। लैला जानती थी कि नमाज़ों के ज़रिए अज़ीज़ा मरियम को थामे रखती थी, ये मरियम को

अपने करीब बनाए रखने का तरीका थीं, जब तक कि वक़्त अपना काम न कर जाए, उसकी यादों के बागीचे से मरियम के खींच न ले जैसे कि पतवारों को जड़ों की तरफ़ से खींच लिया गया।

नमाज़ के बाद लैला वापस बिस्तर पर चली गई थी और अभी सो ही रही थी कि तारिक़ चला गया। उसे इसकी धुंधली सी याद है कि उसने उसने गालों पर चूमा था। तारिक़ को एक फ्रांसीसी एनजीओ में काम मिल गया था, जो बारूदी सुरंगों और कटे हुए अंगों वाले लोगों को नकली पांव लगाते थे।

जल्मै अज़ीज़ा का पीछा करते हुए रसोई में आया।

'तुम्हारे पास अपनी नोटबुकें हैं, तुम दोनों के पास? पेंसिलें? किताबें?'

'यहां है,' अज़ीज़ा ने अपना पीठ पर टांगने वाला बैग उठाते हुए कहा। फिर से लैला ने गौर किया कि उसकी हक़लाहट कम हो रही है।

'तो फिर चलें।'

लैला ने बच्चों को घर से बाहर आने दिया, फिर दरवाज़े में ताला लगाया। उन्होंने बाहर एक सर्द सुबह में क़दम रखे। आज बारिश नहीं हो रही है।

आसमान नीला है और लैला को दूर आसमान में बादलों का एक झुंड दिखा। हाथ पकड़े हुए वो तीनों बस स्टॉप तक गए। सड़के पहले से ही भर चुकी हैं जिनमें रिक्शों, टैक्सियों, संयुक्त राष्ट्र के ट्रकों, बसों, आईएसएएफ की जीपों का एक मज़बूत प्रवाह है। उनींदी आंखों वाले कारोबारी अपनी दुकानों के दरवाज़ों के ताले खोल रहे हैं, जिन्हें

पिछली रात बंद किया गया था। च्यूइंग गम और सिगरेट के डिब्बों की मीनारों के पीछे रेहड़ीवाले बैठे थे। राहगीरों

402 खालिद हुसैनी

से सिक्के मांगती हुई विधवाएं नुक्कड़ों पर अपनी अपनी जगहें पकड़ चुकी हैं।

लैला को काबुल लौटना अजीब लगा। शहर बदल चुका है। हर रोज़ वो लोगों को पौधे रोपते हुए, पुराने घरों को रंगते हुए, नए घर बनाने के लिए ईंटे ले जाते हुए देखती है। वो गटर और कुएं खोदते हैं। खिड़कियों के ओटे पर लैला को मुजाहिदीनों के पुराने रॉकेटों के खोखे में उगाए हुए फूल दिखते हैं- काबुली उन्हें रॉकेट फूल कहते हैं। हाल ही में तारिक़ लैला और बच्चों को बाबर के बागीचे में ले गया, जिनकी मरम्मत करके उन्हें नया बनाया जा रहा था। बरसों में पहली बार लैला को काबुल के नुक्कड़ों पर संगीत सुनाई दे रहा हैं, रूबाब और तबला, दोतार, हारमोनियम और तंबूरा, अहमद ज़ाहिर के पुराने गीत।

लैला चाहती है कि मम्मी और बाबी इन बदलावों को देखने के लिए ज़िंदा होते। लेकिन जलील के ख़त की तरह काबुल का पछतावा देर से पहुंचा।

लैला और बच्चे बस स्टॉप जाने के लिए सड़क पार कर रहे थे कि दागदार खिड़कियों वाली एक काली लैंड क्रूज़र तेज़ी से आई। उनको बचाने के लिए आखिरी मौके पर वो मुड़ गई और लैला हाथ भर से भी कम दूरी से बाल-बाल बची। इससे चाय के रंग का बारिश का पानी उड़ कर बच्चों की कमीज़ों पर पड़ गया।

लैला ने जल्दी से बच्चों को फुटपाथ पर खींच लिया। उसका दिल गले में धड़क रहा था।

लैंड क्रूज़र ने सड़क पर तेज़ी से भागते हुए, दो बार हॉर्न बजाया और जल्दी से बाईं तरफ़ मुड़ गई।

लैला वहीं खड़ी अपनी सांसें दुरुस्त करती रही। उसकी उंगलियां अपने बच्चों की कलाइयों पर कसी हुई थीं।

इसने लैला की जान ले ली थी। इसने उसकी जान ले ली थी कि जंगी सरदारों को काबुल लौटने दिया गया था। कि उसके अम्मी अब्बू के कातिल चहारदीवारियों से घिर बागीचों वाले आलीशान घरों में रह रहे हैं, कि वो इसके मंत्री और उसके उप मंत्री बनाए जा रहे हैं, कि वो चमकदार, बुलेटप्रूफ एसयूवी गाड़ियों में उन मुहल्लों से होकर बेधड़क घूम रहे हैं, जिसे उन्होंने तबाह किया था। यह उसकी जान ले लेता है।

हजारों दमकते आफ़ताब 403

लेकिन लैला ने फैसला किया कि वो गुस्से से लड़खड़ाएगी नहीं। मरियम ने यह नहीं चाहा होता। क्या तुक है? वो एक मासूम और समझदार मुस्कान के साथ कहती। इसमें क्या अच्छाई है लैला जो? और इसलिए लैला ने आगे बढ़ने के लिए इसे बर्दाश्त कर लिया। अपने लिए, तारिक़ के लिए, अपने बच्चों के लिए। और मरियम के लिए, जो अब भी लैला के सपनों में आती थी, जो कभी भी उसकी चेतना में एक या दो सांसों से ज़्यादा नहीं रही थी। लैला आगे बढ़ती रही। क्योंकि आखिरकार वो जानती थी कि वो बस यही कर सकती है। बस वो यही कर सकती है और उम्मीद कर सकती है।

जमान फ्री थ्रो लाइन पर खड़े घुटने मोड़े बास्केटबॉल उछाल रहे हैं। वो कोर्ट पर एक जैसी जर्सियां पहने और आधा दायरा बना कर बैठे हुए लड़कों के एक समूह को निर्देश दे रहे हैं। जमान ने लैला को देखा, गेंद अपनी बांहों में दबाई और उसकी तरफ़ हाथ हिलाया। उसने लड़कों से कुछ कहा, जिन्होंने इसके बाद हाथ लहराया और चिल्लाए, 'सलाम, मोअल्लिम साहिब!'

लैला ने भी हाथ हिलाया।

यतीमखाने के खेलने के मैदान में पूरब रुख की दीवार से लगा कर सेब के छोटे-छोटे पौधों की कतारें रोपी गई थीं। लैला ने मंसूबा बनाया था कि दक्षिण की दीवार फिर से बनते ही वहां भी कुछ पौधे रोपे जाएंगे। झूले का एक नया सेट, नए मंकी बार और एक जंगल जिम लगे हैं।

स्क्रीन डोर से होकर लैला भीतर चली गई।

1 उन्होंने यतीमखाने को बाहर और भीतर से फिर से रंगा था। तारिक़ और जमान ने चूती हुई छत की मरम्मत की थी, दीवारों को ठीक किया था, खिड़कियां बदली थीं, जिन कमरों में बच्चे सोते और खेलते थे, उनमें दरियां बिछाई थीं। इस पिछली सर्दी में लैला ने बच्चों के सोने के क्वार्टरों के लिए कुछ बिस्तर, तकिए और अच्छे ऊनी कंबल ख़रीदे थे। उसने सर्दियों के लिए लोहे के स्टोव लगवाए थे।

काबुल के अखबारों में से एक अनीस ने यतीमखाने को नया किए जाने पर एक लेख छापा था। उन्होंने जमान, तारिक़, लैला और सहायकों में से एक को बच्चों की एक कतार के सामने खड़ा करके फोटो भी लिया था। जब लैला ने लेख देखा तो उसे बचपन की अपनी सहेलियों गीती और हसीना का ख़याल आया। और हसीना की बात का ख़याल आया, बीस की होने तक गीती और

404 खालिद हुसैनी

मैं, हममें से हरेक चार, पांच बच्चे पैदा कर चुकी होंगी। लेकिन तुम लैला, तुम हम दोनों बेवकूफ़ों को नाज़ से भर दोगी। तुम कुछ बनने जा रही हो। मैं जानती हूं कि एक दिन मैं एक अखबार उठाऊंगी और उसके पहले पन्ने पर तुम्हारा फोटो देखूंगी। फोटो पहले पन्ने पर नहीं छपा था लेकिन इसके बावजूद, यह छपा था जैसा कि हसीना ने कहा था।

लैला मुड़ी और ठीक उसी गलियारे में आगे बढ़ी जहां दो बरस पहले उसने और मरियम ने अज़ीज़ा को जमान के हवाले किया था। लैला को अब भी याद था कि कैसे उन्हें अपनी कलाइयों पर से अज़ीज़ा की उंगलियों को छुड़ाना पड़ा था। उसे इसी गलियारे में रुलाई को दबाते हुए भागना याद आया, मरियम का उसे पुकारना और आतंक से अज़ीज़ा का चिल्लाना याद आया। गलियारे की दीवारें अब डायनासोरों, कार्टून किरदारों, बामियान के बुद्धों और यतीमों द्वारा बनाई गई तस्वीरों के पोस्टरों से भरी हुई थीं। उनमें से अधिकतर तस्वीरों में झोंपड़ियों पर चलती तोपों, एक-47 लहराते आदमियों, शरणार्थी शिविरों के तंबुओं और जिहाद के दृश्यों को दिखाया गया था।

लैला गलियारे में एक कोने पर मुड़ी और अब बच्चों को क्लासरूम के बाहर इंतज़ार करते हुए देखा। उसका स्वागत दुपट्टों और घुटे हुए सिरों पर पहनी टोपियों ने, नन्हीं, पतली उंगलियों ने, उदासी की खूबसूरती ने किया।

जब बच्चों ने लैला को देखा तो वो भागते हुए आए। वो पूरी तरह झुक कर दौड़ते हुए आए। लैला उनसे घिर गई। फिर तो ऊंचे सलामों, तेज़

आवाज़ों, हांफने, पकड़ने, थपथपाने, छूने और उसकी गोद में चढ़ने के लिए दूसरों से धक्कामुक्की किए जाने का रेला आ गया। फैले हुए नन्हें हाथ और खुद की तरफ़ ध्यान दिए जाने की अपीलें हैं। उनमें से कुछ ने उसे अम्मी कहा। लैला ने उन्हें सुधारा नहीं।

इस सुबह इन बच्चों को शांत करने और उन्हें बाकायदा एक कतार बना कर क्लासरूम में ले जाने में लैला को मेहनत करनी पड़ी।

तारिक़ और जमान ने एक साथ लगे हुए दो कमरों के बीच की दीवार को गिरा कर क्लासरूम बनाया था। फर्श में अब भी ढेरों दरारें हैं और कहीं- कहीं टाइलें नदारद हैं। कुछ वक़्त के लिए फर्श को तिरपाल से ढंक दिया गया है, लेकिन तारिक़ ने जल्दी ही सीमेंट से कुछ नई टाइलें लगाने और फर्श पर दरी बिछाने का वादा किया है।.

हजारों दमकते आफ़ताब 405

क्लासरूम के दरवाज़े के ऊपर एक आयताकार बोर्ड ठोंका गया है, जिसे जमान ने घिस पर चिकना बनाया और उस पर चमकदार सफ़ेद रंग लगाया। इस पर एक ब्रश से जमान ने शायरी की चार पंक्तियां पेंट की हैं। लैला जानती है कि ये उन लोगों को जवाब है, जो ये रोना रो रहे हैं कि अफ़ग़ानिस्तान को जिस सहायता रकम का वादा किया गया था वो नहीं आ रही है, कि पुनर्निर्माण बहुत धीरे चल रहा है, कि भ्रष्टाचार फैला हुआ है, कि तालिबान एकजुट हो चुके हैं और बदला लेने के लिए आएंगे, कि दुनिया एक बार फिर अफ़ग़ानिस्तान को भूल जाएगी। ये लाइनें जमान के पसंदीदा शायर हाफिज़ की गज़लों से ली गई थीं

युसूफ़ लौटेगा फिर से कन, गम न कर झोंपड़ियां गुलाब के बागीचों में लौटेंगी, गम न कर अगर एक बाढ़ आनी है, सभी जिंदा चीज़ों को डुबोने के लिए नूह तूफान की आंखों में है तेरा रहनुमा, गम न कर

लैला इस बोर्ड के नीचे से गुज़री और क्लासरूम में दाखिल हुई। बच्चे अपने जगहों पर बैठ रहे हैं, फड़फड़ाते हुए अपनी नोटबुकें खोल रहे हैं, बातें कर रहे हैं। अज़ीज़ा अपनी बगल की एक कतार में एक लड़की से बातें कर रही है। काग़ज़ का एक हवाई जहाज़ ऊंचा उड़ते हुए कमरे की दूसरी तरफ़ जा रहा है। किसी ने इसे दोबारा उछाल दिया है।

'अपनी फ़ारसी की किताबें खोलो बच्चो,' लैला ने टेबल पर रखी अपनी किताब पर झुकते हुए कहा।

फड़फड़ाते पन्नों के कोरस के बीच लैला बिना पर्देवाली खिड़की तक गई। शीशे से वो खेल के मैदान में फ्री थ्रो का अभ्यास करने के लिए कतार में खड़े लड़कों को देख सकती है। उनके ऊपर, पहाड़ों के ऊपर सुबह का सूरज उग रहा है। उसने बास्केटबॉल के लोहे के छल्ले को देखा। टायर के झूले की जंजीरें। जमान के गले में लटकती सीटी, उसका नया चश्मा। लैला ने शीशे के हल्के गर्म पल्लों पर अपनी हथेली सटा दी। अपनी आंखें बंद कर ली। उसने धूप को अपने गालों, अपनी पलकों और ललाट पर आने दिया।

जब वो काबुल लौटे थे तो लैला को पहले इसका बहुत सदमा हुआ था कि वो नहीं जानती थी कि तालिबान ने मरियम को कहां दफनाया था। उसका मन किया था कि वो मरियम की कब्र पर जा सकती, कुछ देर बैठती, एक

406 खालिद हुसैनी

या दो फूल वहां रख आती। लेकिन अब लैला देखती थी कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मरियम कभी भी बहुत दूर नहीं है। वो यहीं है, इन्हीं दीवारों में जिनको उन्होंने फिर रंगा है, इन पेड़ों में जिनको उन्होंने रोपा है, उन कंबलों में जो बच्चों को गर्म रखते हैं, इन तकियों, किताबों और पेंसिलों में। वो बच्चों की हंसी में है। वो उन शेरों में है जिन्हें अज़ीज़ा पढ़ती है और उन दुआओं में है जिन्हें पश्चिम की तरफ़ सिर झुकाए वो पढ़ती है। लेकिन मरियम सबसे ज़्यादा लैला के अपने दिल में है, जहां वो हज़ारों आफताबों की फूटती हुई जगमगाहट में दमक रही है।

लैला ने महसूस किया कि कोई उसका नाम लेकर बुला रहा है। वो मुड़ी और आदतन उसने अपने सिर को अपने अच्छे वाले कान की तरफ़ से ज़रा सा उठाया। यह अज़ीज़ा थी।

'मम्मी? क्या आप ठीक हैं?'
कमरा शांत हो गया है। बच्चे उसे देख रहे हैं।
लैला जवाब देने ही वाली है कि एकाएक उसकी सांस फंस गई। उसने हाथ गिरा लिए। उसने वहां थपथपाया जहां पल भर पहले उसने एक हौल महसूस किया था। उसने इंतज़ार किया। लेकिन अब कोई हरकत नहीं हो रही है। 'मम्मी?'
'हां, मेरी जान।' लैला मुस्कुराई। 'मैं ठीक हूं। हां। बहुत ठीक।' क्लास के सामने अपनी डेस्क पर जाते हुए लैला ने नामों के उस खेल के बारे में सोचा, जिसे वो पिछली रात खाने के दौरान खेल रहे थे। जब से लैला ने तारिक़ और बच्चों को खबर दी थी, तब से यह उनके रोज़ रातों की रस्म हो गई थी। वो हिलते-डुलते हुए और अपनी अपनी पसंद पेश करते । तारिक्र मुहम्मद को पसंद करता है। जल्मै को, जिसने हाल ही में टेप पर सुपरमैन देखी थी, यह उलझन होती है कि क्यों एक अफ़ग़ानी लड़के का

[illegible] [illegible] [illegible] [

उन परिवारों से मिला जो एक डॉलर रोज़ से भी कम पर जीवन बसर कर रहे हैं। वे पूरी सर्दियां ज़मीन के भीतर खोदे गए गड्डों में बंद रह कर गुज़ारते हैं। मैं उन गांवों में गया जहां हर सर्दी और गर्मी के मौसम में परिवारों के दस से पंद्रह बच्चे मर जाते हैं। मैं जिन लोगों से मिला वे कीचड़ भरी नदियों से लाया पानी पीते हैं और जिनकी आसानी से ठीक हो सकने वाली बीमारियों से मौते हो जाती हैं। उनके पास सिर छुपाने को घर नहीं है और न ही उन्हें इलाज, स्कूल, खाना और नौकरी मयस्सर हैं। मैं यह सब देख कर टूट गया था।

जीवन को बदल देने वाले इस सफ़र का ही नतीजा है 'द खालिद हुसैनी फाउंडेशन' ।

408 खालिद हुसैनी

इस फाउंडेशन के साथ हम सार्थक और लंबे बदलाव की उम्मीद करते हैं। 2009 में फाउंडेशन ने यूएनएचसीआर के साथ मिल कर उत्तर-पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में 71 बेघर परिवारों के लिए घर बनाने में मदद दी। लौटने वाले बेघर शरणार्थियों के लिए और भी घर बनाए जाने की योजनओं पर काम चल रहा है। हम अभी सबसे ज़्यादा उन परियोजनाओं को फंड देने में तरजीह दे रहे है जिनसे शरणार्थियों, औरतों और बच्चों को फायदा हो। ये दोनों समूहों ने इस फंसे हुए देश में सबसे ज़्यादा तकलीफें उठाई हैं और इन्हीं पर अफ़ग़ानिस्तान का आनेवाला कल निर्भर करता है।

अफ़ग़ानिस्तान को फिर से बनाने की ज़रूरतें बहुत बड़ी हैं। वहां लोगों को तकलीफों से बचाने की ज़िम्मेदारी एक लंबी और मुश्किल कोशिश है। इसके बारे में या 'द खालिद हुसैनीी फाउंडेशन' के बारे में जानने के लिए इस वेबसाइट पर आएं: www.khaledhosseinifoundation.org

शुक्रिया
खालिद हुसैनीी

शुक्रिया

शुक्रिया अदा करने के पहले कुछ बातें साफ़ कर दूं। जहां तक मैं जानना हूं-गुल दामन का गांव एक काल्पनिक जगह है। जो लोग हैरात शहर से वाकिफ हैं, वो इस पर गौर करेंगे कि मैंने इसके आस पास के भूगोल का व्योरा देने में थोड़ी-बहुत छूट ली हैं। आख़िर में, इस उपन्यास का शीर्षक सत्रहवीं शताब्दी के फ़ारसी शायर साएबे-तिवरिज़ी द्वारा लिखी गई एक नज़्म ले लिया गया है। जिन लोगों ने यह नज़्म फ़ारसी में पढ़ी है, वो बेशक इस पर गौर करेंगे कि जिस शेर में इसका शीर्षक है, उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा शाब्दिक अनुवाद नहीं है। लेकिन यह एक आम तौर से कबूल कर लिया गया तर्जुमा है, जिसे डॉ. जोसेफीन डाविस ने किया है और मुझे यह अनुवाद प्यारा लगा। मैं उनका शुक्रगुजार हूं।

मैं कय्यूम सरवर, हिक़मत सादात, एल्सी हेथवे, गजमेरी स्टेसेक, लॉग्स क्विल और हलीमा जज़मीन क्विल को उनके द्वारा की गई मदद और सहारे के लिए शुक्रिया अदा करता हूं।

अपने अव्वा, बावा को इस किताब की पांडुलिपी को पढ़ने, इस पर अपनी राय देने और हमेशा की तरह उनके प्यार और सहारे के लिए बहुत खास शुक्रिया। और अपनी अम्मी को भी वहुत खास शुक्रिया, जिनकी निस्वार्थ, सौम्य अंतरात्मा इस पूरी कहानी में रची-बसी है। आप मेरी समझ हैं, अम्मी जी। अपनी सास और ससुर को भी उनकी उदारता और मेहरबानियों के लिए

410 खालिद हुसैनी

मेरा शुक्रिया।

मैं अपनी एजेंट एलेन कोस्वर को हमेशा, हमेशा अपने में भरोसा रखने के लिए, जोडी हॉचकिस्स (आगे भी!), डेविड ग्रॉसमैन, हेलेन हेलर और कभी न धकने वाले चैडलर क्रौफोर्ड को शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। मैं रिवरहेड बुक्स के हरेक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञ और कर्जदार हूं। खास तौर में मुसान पीटरसन केनेडी और ज्यॉफ्री क्लोस्के को इस कहानी में भरोसा रखने के लिए शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। मेरिलिन डक्सवर्थ, मिह-हो चा, कैयरिन चिंच, क्रेग डो. बर्क, लेस्ली श्वार्ट्ज, होनी वर्नर और वेंडी पर्ल को तहेदिल से शुक्रिया। तेज निगाह वाले मेरे कॉपी संपादक टोनी डाविस को खास तौर से शुक्रिया, जिनकी निगाह से कभी कुछ भी नहीं टूटता, और मेरी प्रतिभाशाली संपादक तारा मैकग्राथ को उनके सब्र, दूरदर्शिता और रहनुमाई के लिए शुक्रिया।

आख़िर में शुक्रिया, रोया। इस कहानी को पढ़ने और बार-बार पढ़ने के लिए, मेरे आत्त्मविश्वास के ज़रा से संकट को (और वे एक बार के बड़े संकटों को भो) दूर करने के लिए, कभी संदेह नहीं करने के लिए। आपके बिना इस किताब का वजूद नहीं रहा होता। मैं आपको प्यार करता हूं।

पश्चलेख
खालिद हुसैनीी

यह लेख 2 जून, 2007 को बुक एक्स्पो अमेरिका में दिए गए एक भाषण का सार है।

मैंने द काईट रनर के आमिर की तरह लिखना शुरू किया। मैं काबुल में 1970 के दशक में बड़ा हुआ और मैं कविताएं और छोटे नाटक लिखता था, जिन्हें मैं अपने और चचेरे भाई-बहनों को फुसला कर अपने अब्बा और चाचाओं की दावतों में खेला करते थे। मैंने कहानियां भी लिखीं, जिनके बारे में मुझे याद है कि वो उदास, तीव्र और बेशर्मी और गर्व से भरी हुई अतिनाटकीय हुआ करती थी। और अपने बचकाने तरीके से उनमें वफादारी, दोस्ती और वर्ग संघर्ष को दिखाया गया होता। उनमें परिष्कृत अंदाज़ या अदा की जो कमी थी वो उनका मन जीत लेने वाला विशाल दिल पूरा कर देता था। ऐसा द काईट रनर के किरदारों के बारे में लोग कहते हैं और शायद ये सही भी है।

जिस भाषा में मैं लिखता था, वो बदल गई है। मैंने फ़ारसी में लिखना शुरू किया था, फिर मैंने फ्रेंच में लिखा और अब मैं ज़्यादातर अंग्रेज़ी में लिखता हूं, लेकिन एक बात हमेशा बरकरार रही: मैं एक अकेले पाठक के लिए लिखता रहा हूं। मेरे लिए, लिखना हमेशा खुद को एक कहानी सुनाने की एक स्वार्थी, आत्मसेवा की कार्रवाई रही है। आप जानते हैं कि कोई चीज़ मेरी दिलचस्पी को खींच लेती है और मुझे बैठ कर उसके भीतर देखने पर बाध्य कर देती हैं। इसी तरह द काईट रनर लिखी गई थी। मेरे दिमाग में दो बच्चे थे, जिसमें से एक के मन में भारी उथल-

पुथल थी और वो एक बेहद अनिश्चित नैतिक ज़मीन पर टिका था, और दूसरा मासूम और वफादार था और जिसकी जड़ें

412 खालिद हुसैनी

ईमानदारी में जमी हुई हैं। मैं जानता था कि उनकी दोस्ती का बुरा अंत होगा, कि यह ख़त्म हो जाएगी और कि इसका उनके आसपास के लोगों की जिंदगियों पर गंभीर असर पड़ेगा। यह कैसे होगा और क्यों होगा, इसकी बाध्यता ने मुझे मार्च, 2001 में बैठ कर यह उपन्यास लिखवाया।

मेरा इरादा कभी उपन्यास को प्रकाशित कराने का नहीं था। जब मैंने दो तिहाई उपन्यास लिख लिया था, तब भी मेरे दिमाग में यह बात नहीं आई कि कोई इसे पढ़ेगा। हालांकि मैंने सोचा कि शायद मेरी बीवी इसे पढ़ेंगी क्योंकि वो मुझे प्यार करती हैं। इस तरह आप द काईट रनर के छपने के बाद दुनिया भर में इसको मिली लोकप्रियता पर मेरी हैरानी की कल्पना कर सकते हैं। मुझे भारत, लंदन, सिडनी, पेरिस, अरकांसास और सारी दुनिया से पढ़ने वालों के ख़त हासिल हुए, जिन्होंने मेरे प्रति उनके मनोभावों को ज़ाहिर किया। उनमें से अनेक ने जानना चाहा कि वो अफ़ग़ानिस्तान में कैसे रकम भेज सकते हैं। कुछ ने कहा कि वो एक अफ़ग़ानी यतीम को गोद लेना चाहते हैं। उन खतों में मैंने एक अनोखी काबिलियत देखी कि कैसे एक काल्पनिक कहानी ऐसे लोगों को आपस में जोड़ सकती है, जो अलग पहनावे पहनते हैं, अलग तरह के मजहबों पर चलते हैं और मैंने देखा कि दोस्ती, अपराधबोध, माफ़ी, नुक़सान और प्रायश्चित के कुछ इंसानी एहसासात किस कदर सार्वभौम हैं।

उन खतों में मैंने यह भी देखा कि कैसे मैंने अनचाहे ही खुद को एक खतरनाक स्थिति में रख दिया है कि द काईट रनर के बाद की कहानी कहने की स्थिति में, और एक ऐसी किताब लिखने की स्थिति में जिसके पन्नों की

स्याही अभी गीली ही होगी कि उसे द काईट रनर से तुलना किए जाने का बोझ ढोना पड़ेगा। और इसमें उसका कोई दोष भी नहीं होगा। मुझे मिले हरेक ख़त को पढ़ने के साथ ही में एक तेज़ और उत्तेजना से भरी हुई सांस से भर जाता और मैं अब तक लिखे जा रहे इस उपन्यास के प्रति दयाभाव से भर जाता। मैं अपने परिवार के विवेक के प्रति डरा हुआ था, जिसे इस किताब को लिखते हुए मुझे बर्दाश्त करना था।

मैंने एक ऐसी कहानी लिखने का फैसला करके मामले को और भी जटिल वना दिया, जो एक नहीं बल्कि दो मुख्य किरदारों की मांग करती थी और उनमें से दोनों ही औरतें थीं। यह फैसला मैंने तब किया था, जब में द काईट रनर का आखिरी संपादन कर रहा था- एक बाप और एक बेटे की कहानी ख़ास

हजारों दमकते आफ़ताब 413

तौर से मर्दों की दुनिया में स्थित थी। मैं अफ़ग़ानिस्तान में केंद्रित एक दूसरी प्रेम कहानी लिखना चाहता था, लेकिन इस बार मां- बेटी की कहानी और दो संघर्षरत औरतों की आंतरिक ज़िंदगी की कहानी कहना चाहता था। मेरा अंदाज़ा है कि कुछ आसान रास्ते भी थे जिन पर मैं आगे बढ़ सकता था, लेकिन मैंने यही चुना क्योंकि एक लेखक और एक अफ़ग़ानी होने के नाते मैं अपने वतन की संघर्षरत औरतों की कहानी से ज़्यादा आकर्षक या अहम या बाध्यकारी कहानी नहीं सोच सकता था। नाटकीय तौर पर कहें तो इसकी तुलना में दूसरी हरेक कहानी फीकी लगी।

बदकिस्मती से तालिबान अफ़सरों के सख्त, चमकते हुए चेहरे के सामने से गुज़रती बुर्के में ढंकी औरतों की छवि दुनिया भर में बेहद आम हो गई है। शायद उससे भी बढ़ कर यह एक प्रतीक बन गई है। जब मैं 2003 में काबुल में था तो मैं एक ऐसे आदमी से मिला जिसने सरकारी बॉडीगार्ड के रूप में काम किया था। उसने यों ही मुझे एक औरत की कहानी बताई जिसे

उसने तालिबान अधिकारी द्वारा सड़क पर पीटे जाते देखा था। यह कहानी उसने खुशनुमा भावों के साथ बताई। उसने कहा कि अफ़सर ने उस औरत को तब तक पीटा जब तक उसकी हड्डियों से उसकी मां का दूध नहीं चूने लगा। वह कहानी सुनते हुए मुझे यह बात हक़ीकत से परे लगी कि ऐसा काबुल में हो चुका था। यह बहुत पहले की बात नहीं है जब अफ़ग़ानिस्तान में औरतें यूनिवर्सिटियों में प्रोफ़ेसर हुआ करती थीं, वे डॉक्टर और वकील थीं, अस्पतालों में काम करती थीं, स्कूलों में पढ़ाती थीं और समाज में एक अहम भूमिका अदा करती थीं। मेरी अम्मी की तरह यूनिवर्सिटियों में पढ़ी हुई और फ़ारसी पढ़ाने वाली औरतें थीं, जो आख़िर में लड़कियों के एक बहुत बड़े हाई स्कूल में वाइस प्रिंसिपल भी वनीं। लेकिन यह काबुल की बात थी और अफ़ग़ानिस्तान एक शहरी मध्य वर्ग का राष्ट्र नहीं है। यहां हमेशा उदार सुधारवादी काबुल और देहाती अफ़ग़ानिस्तान के बीच वैचारिक फ़र्क़ रहा है। दुखद सच्चाई यह है कि तालिबान के पाकिस्तानी खुफिया विभाग की आंखों का तारा बनने के बहुत पहले से औरतों के ख़िलाफ़ तालिबान की शैली का उत्पीड़न अफ़ग़ानिस्तान के कुछ निश्चित इलाकों में मौजूद रहा था। अगर तुलनात्मक रूप से देखें तो एक तरफ़ काबुल औरतों की खुदमुख्तारी का एक मरकज़ था और दूसरी तरफ़ देहाती अफ़ग़ानिस्तान में और ख़ास कर दक्षिण और पूरब के पाकिस्तान से

414 खालिद हुसैनी
लगे सरहदी इलाकों में रिवायती तौर पर पितृसत्तात्मक कबीलाई इलाके मौजूद रहे हैं जहां मर्द औरतों की किस्मत तय किया करते हैं। वहां औरतें हमेशा कैद रही हैं। हमेशा उन्हें रास्तों पर बुर्का पहन कर चलना पड़ता रहा है और बारह साल की उम्र के बाद शायद ही कभी वो स्कूल गई हों। इस तरह उन इलाकों में भारी निरक्षरता रही है। सदियों से औरतों को यह बताया जाता रहा है कि वो कहां शादी करें, किनसे शादी

करें और आखिरकार कितनी शादियां करें। ज़्यादातर हिस्सों में देहाती औरतें चुपचाप, पर्दे के भीतर आज्ञा मानते हुए, सेवा करते हुए जीती रही हैं।

हो सकता है कि आपको इससे हैरानी हो लेकिन काबुल से पिछली पूरी सदी में अफ़ग़ानिस्तान की औरतों को आज़ाद करने की अनेक कोशिशें शुरू हुईं। 1920 के दशक में अमानुल्लाह नाम के एक बादशाह थे जिन्होंने सरेआम बुर्का पहनने पर पाबंदी लगा दी थी। उन्होंने औरतों के लिए पहला अस्पताल और लड़कियों के लिए पहला स्कूल बनवाया। वो पूर यूरोप से शिक्षकों को लेकर आए और औरतों को तालीम हासिल करने के लिए यूरोप भेजा। अमानुल्लाह ने जबरन होनेवाली शादियों पर पाबंदी लगाने की कोशिश की, लड़कियों के लिए शादी की न्यूनतम उम्र को बढ़ा कर सोलह किया और दुल्हनों के लिए पैसे देने के चलन पर पाबंदी लगाई। बदकिस्मती से, मुख्यतः इन कोशिशों के नतीजे में बगावत हो गई और उन्हें शहर छोड़ कर भागना पड़ा। वो निर्वासन में बूढ़े होकर मरे।

1950, 60 और 70 के दशकों में भी कोशिशें हुईं जिनमें से कुछ के 'अच्छे नतीजे सामने आए। 1964 में अफ़ग़ानी औरतों को वोट देने का हक़ हासिल हुआ। लेकिन काबुल के इन सुधारों का पितृसत्तात्मक कबायली नेताओं ने हमेशा मखौल उड़ाया, उन्हें मानने से इन्कार किया और कुछ मामलों में तो बगावत कर दिया, जैसा कि बेचारे बादशाह अमानुल्लाह के साथ हुआ था।

इसलिए आप देख सकते हैं कि अफ़ग़ानी औरतों के लिए जिंदगी तालिबान के पहले से ही एक जद्दोजहद थी। लेकिन यह अलग-अलग गुटों के बीच जंग छिड़ जाने, अराजकता और उग्रवाद की शुरुआत के साथ असहनीय हो गई। अनेक तरीकों से, तभी सचमुच तबाही आई।

औरतों को सभी की तरह न केवल आम लोगों के रिहाइशी इलाकों में बमबारी और अंधाधुंध गोलीबारी का सामना करना पड़ा, न केवल उन्हें पिटाई

हजारों दमकते आफ़ताब 415

और यातनाएं और जलालतें और कैद बर्दाश्त करने पड़े, न केवल उनके बुनियादी हक़ों की बार-बार धज्जियां उड़ाई गई बल्कि बड़ी संख्या में वो लैंगिक आधार पर होने वाले दुर्व्यवहारों की शिकार भी हुईं। उन्हें अगवा किया गया और गुलामों की तरह बेचा गया, मिलीशिया कमांडरों से उनकी जबरन शादी कराई गई, उन्हें वेश्या बनने पर मजबूर किया गया, उनका बलात्कार किया गया। बलात्कार एक ऐसा घिनौना और अक्षम्य अपराध था, जिसका इस्तेमाल उन परिवारों को धमकाने के लिए किया गया, जो एक या दूसरे गुट का विरोध कर रहे थे।

आज तालिबान के चले जाने के बाद, 9-11 के बाद के अफ़ग़ानिस्तान में फिर से औरतों की आज़ादी की बातें हो रही हैं, जैसी कि होने चाहिए। अफ़ग़ानी औरतों पर थोपा गया लैंगिक भेदभाव आधुनिक दुनिया की अब तक हल नहीं हुई सबसे नाइंसाफियों में से एक है। इसके साथ-साथ अफ़ग़ानिस्तान को अपनी औरतों की ज़रूरत है। अफ़ग़ानिस्तान के पुनर्निर्माण में अगर अफ़ग़ानी औरतों के बुनियादी हक़ों का सम्मान नहीं किया गया और उनको इसमें भागीदारी की इजाज़त नहीं दी गई तो यह पूरी परियोजना नाकाम हो जाएगी।

बादशाह अमानुल्लाह की बीवी रानी सुरैया ने कहा था 'जो भी हो, यह मत सोचिए कि हमारे कौम को अपने लिए सिर्फ मर्दों की ज़रूरत है। औरतों को भी इसमें हिस्सा लेना चाहिए जैसा उन्होंने इस्लाम के शुरुआती बरसों में लिया था। पूरे इतिहास में औरतों द्वारा की गई अनमोल

सेवाओं का ब्योरा मिलता है। और उन मिसालों के ज़रिए हम सीखते हैं कि हम सबको ही अपने कौम की तरक्की के लिए मिल कर भागीदारी करनी होगी।' रानी ने ये शब्द 1926 में कहे थे और मुझे लगता है कि उनकी बातें अस्सी बरसों के बाद भी प्रासंगिक हैं और शायद तब तो और भी प्रासंगिक होंगी।

मैं 2003 में काबुल लौटा और हर तरह की ज़िंदगी जी रहे लोगों से मिला। और मुझे एक नुक्कड़ पर खड़े होना और पूरी तरह ढंकी हुई औरतों को चलते देखना याद है। उनके पीछे चार, पांच, छह बच्चे चल रहे होते। मुझे यह सोचना याद है कि इसके भीतर का इंसान कौन है? उसने क्या-क्या देखा है? उसने क्या-क्या सहा है? किस बात से उसे खुशी मिलती है? क्या उसे दुख देता है? उसकी उम्मीदें, उसकी लालसाएं, उसकी निराशाएं क्या हैं?

416 खालिद हुसैनी

एक तरह से हजारों दमकते आफ़ताब (ए थाउजेंड स्प्लेंडिड संस) उन सवालों के जवाबों की कल्पना करने की मेरी कोशिश है। ये उन दो काल्पनिक औरतों की भीतरी जिंदगी को तलाशने की और उन पर्दों के भीतर के बेहद मामूली इंसानियत को देखने की मेरे द्वारा की गई कोशिश है।

हजारों दमकते आफ़ताब मुझे बहुत, बहुत प्रिय है। इसे प्यार ने जन्म दिया है और मैं उम्मीद करता हूं कि यह कहना उतना महत्वाकांक्षी नहीं लगेगा कि मैं सोचता हूं कि ये अफ़ग़ानिस्तान के महान साहस, सहनशीलता और लचीलेपन को मेरी विनम्र श्रद्धांजली है।

मैं उम्मीद करता हूं कि ये किताब आपके दिल को छुएगी, कि मैं आपको अपने साथ बहा ले जाऊंगा और उपन्यास आपको हिला कर रख देगी और आपको

अफ़ग़ानी औरतों के प्रति हमदर्दी से भर देगी, जिसकी तकलीफों की मिसाल हाल की दुनिया के इतिहास में बहुत कम मिलेगी।

- खालिद हुसैनी

मरियम तव महज़ पंद्रह साल की थी जब रशीद के साथ उसकी शादी करा दी गई और उसे काबुल भेज दिया गया। करीव दो दशक बाद उसकी दोस्ती वहां की एक किशोरी लैला से होती है और फिर यह मां-बेटी जैसे एक मज़बूत रिश्ते में बदल जाती है। देश पर तालिवान की हुकूमत शुरू होने के बाद जिंदगी भूख, क्रूरता और डर के ख़िलाफ़ निराशा से भरी एक जद्दोजहद में तब्दील हो गई थी। लेकिन तब भी प्यार लोगों से गैर मामूली काम करा लेता है और हैरान कर देने वाली बहादुरी के साथ मुश्किल से मुश्किल रुकावटों से पार पाने में उनकी मदद करता है।
'अगर आप जानना चाहते हैं कि हज़ारों दमकते आफ़ताब, द काईट रनर जितना ही अच्छा है या नहीं तो जवाय हैः नहीं। यह उससे बेहतर है'
- वॉशिंगटन पोस्ट

'इसे पढ़ कर सिर्फ कठोर दिलवाले ही नहीं हिलेंगे'
-ग्लौमर

'[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]